भर्तृहरिनी विभूति

१

मध्यकालीन वैरागी राजा भर्तृहरि आपणी भारतीय संस्कृतिनो एक खास प्रतिनिधि छे एनो इतिहास क्याय मळतो नथी, पण दंतकथामा अने लोकगीतोमा एणे सारु सरखु नाम मेळव्यु छे जो तमे हिंदुस्ताननी मुसाफरी तीर्थयात्रानी, एटले के संस्कृतिनी, दृष्टिए करो तो अनेक ठेकाणे तमने भर्तृहरिनी गुफाओ बताववामा आवशे आ ठेकाणे भर्तृहरिए तप कर्यु, आ ठेकाणे एमणे फलाणो चमत्कार करी बताव्यो, वगेरे परपरागत अथवा जोडी काढेली हकीकत कहेनारा लोको तमने अनेक ठेकाणे मळशे

भर्तृहरिने नामे चढेला अनेक ग्रथो छे पण भर्तृहरिनु नाम लेतावेंत एना नीति, शृगार अने वैराग्य ए त्रण शतको ज खास ध्यानमा आवे छे

भर्तृहरिना व्यक्तिगत जीवन विषे पण आपणी पासे झाझी हकीकत नथी भर्तृहरि राजा हतो अथवा उज्जयिनीना राजा विक्रमनो नानो अथवा मोटो भाई हतो. ए मोटो भाई होय तो एने राज्यनो लोभ न हतो एणे पोताना भाईने राज्य सोंपी दई पोते वैराग्यनो मार्ग लीधो नाथ-सप्रदायमां भळी जई हठयोग, रसविद्या, मत्रविद्या आदि

अद्‌भुत सिद्धिओ प्राप्त करी आपनारी विद्याओनो एणे अभ्यास कर्यो, महादेवनी अने वेदान्तविद्यानी उपासना करवाथी हिमालयमा गगाने किनारे एने परम शान्ति मळी, अने अन्ते ते परब्रह्ममां लीन थयो, आटली ज वीना आपणी पासे छे

भर्तृहरि ज्यारे राजविलास भोगवता हता त्यारे पोतानी राणी पिंगला उपर अनहद आशक हता पण राणीनु मन राजा उपर न हतु, पण बीजे हतुं. ए माणसनु मन राणी उपर न हतुं पण कोई दासी उपर हतुं, अने ए दासी मनथी राजा पर आशक हती. एवी स्थितिमा एक सन्यासीए राजाने अमृतफळ आप्यु. राजाए पोते खाईने अमर थवाने बदले ए फळ वहाली राणीने आप्युं. उपर बतावेला कारणे ए फळ फरतु फरतुं फरी राजा पासे आव्यु. एटले राजानो भ्रम भाग्यो. एनी त्रैण आसक्ति नष्ट थई अने एणे वैराग्य सेवन कर्युं अने पेला फळनो नाश कर्यो. एवी एक वार्ता हिंदुस्ताननाa बधा प्रांतोमा प्रचलित छे. पेलु अमृतफळ कोईए साधु होत तो साचो बनाव आपणने कहेवा ए व्यक्ति जीवती होत. पण तेम न थवाथी केवळ उपरनी दंतकथा अथवा किंवदन्ती ज अमर थई शकी. भर्तृहरि जे नाथसप्रदायनी परंपराना हता ए सप्रदायना साहित्यमां उपरनी वार्ता क्यांय जडती नथी. अमने लागे छे के भर्तृहरिना वैराग्यबोधक एवा एक श्लोक उपरथी लोकोए ए वात पाछळथी योजी काढी हशे.

अने एम थवानु कारण पण समजाय एवु छे भर्तृहरिने एक एक श्लोकमा एकाद सुदर वार्ता अथवा प्रसग गोठवी देवानी टेव छे अने ए कलामा एणे असाधारण सफळता पण मेळवी छे 'जेना माथामा टाल पडी हती एवो एक अभागियो आरामने अर्थे ताडना झाड तळे पहोच्यो, त्या एना दुर्दैवे उपरथी एक ताडनु फळ अचूक एना माथा पर पडयु अने ए मरण पाम्यो.' 'पाणीमा दूध भळयु, तने दूर करवा देवताए घणो प्रयास कर्यो पण ए बे वच्चेनी मित्राचारी तूटी नहि.' 'एक सप पेटीमा घणा दिवसथी पुरायो हतो, त्यों एक उदरने दुर्बुद्धि सूझी के चालो आपण आ पेटीने काणु पाडीने अदर जई जोईए एणे तेम कर्यु. पछी शु ? भूख्या सर्पने उजाणी मळी अने बहार जवानो रस्तो पण मळयो' एवी एवी रसिक वार्ताओ ओछामा ओछा शब्दोमा व्यक्त करवानी भर्तृहरिने होंश होय छे उपर कहेली वात आमानी ज एक होई शके. ते प्रथम-पुरुषी छे एटला उपरथी ज तने भर्तृहरिनी जीवनकथा मानवामा आवी हशे लोकहृदयने आवी वातो मामव्वानो अने कहेवानो शोख होय छे, एटले एना उपर कोई विश्वास राखे के न राखे, पण ए जगतत्रीशीए तो चडवानी ज

एक ठेकाणे एम पण कह्यु छे के राजा भर्तृहरिए अनेक वार सन्यास लीधो हतो ए वात जो साची मानीए तो एनो अर्थ ए थाय छे के सन्यास लीधा पछी भर्तृहरि पाछा गृहस्थाश्रममा आव्या हता बौद्ध लोकोमां आम

करवानी छूट होय छे. हिंदुधर्ममां आवी पाछी पानी करवी महापाप गणायुं छे.

भर्तृहरिनी कविता वाचता एवो ख्याल नथी आवतो के आ कोई राजा लखे छे राजा लखे ते राजानी भूमिका उपर रहीने लखे, अथवा जो बीजी कोई भूमिका धारण करीने लखे, तोय तेमां राजत्व तो झळकी ऊठे ज. अहीं राजाना वैभवनी अदेखाई करनार अने त्यां खंडित थवाथी राजवैभवनो तिरस्कार करनार कोई पंडित बोलतो होय एम ज लागे छे. एनी उपमाओ अने एनां रूपको, एनी आशाओ अने एनी आकांक्षाओ, बधी सामान्य जनतानी कोटिनी छे.

जूना वखतमां केटलाक लोको सरस कविताओ लखी ते राजाने नामे चडावी देता – आजे पण देता हशे – अने राजा पासेथी घणुं धन मेळवी एनां गुणगान गाता रहेता अहीं एवो ज कोई राजदरबारमां निराश थयेलो खंडित पंडित 'शाकाय वा स्यात्, लवणाय वा स्यात्' कहीने पाछो फरतो होय एवो ज आभास थाय छे.

पण आम राजत्वने उतारी पाडनार कविता कीर्तिनो लोभी कोई राजा पोताने नामे चडवा नहि दे अने साचा राजाने वारेघडीए अचूक दरबारी पंडितनी ज भूमिका उपर जवानुं न गमे. त्यारे साची बीना शी हशे?

केटलाक लोको एम पण माने छे के आ बधा श्लोको भर्तृहरिए अथवा कोई एक माणसे लखेला नथी;

पण सस्कृत साहित्यमाथी भर्तृहरिए वीणी काढेला सुभाषितो ज छे ऋणे शतकमा आवेला श्लोको छुटा-छवाया छे ए विषे शका नथी एमा कोई सल्गसूत्र विवेचन अथवा भूमिकानो विकास गोठवेलो नथी ए वात साची छे पण तेटला परथी एक या बीजु कोई चोक्कस अनुमान काढी शकाय नहि एम तो जगन्नाथ पडितना 'भामिनीविलास'ना श्लोको पण छुटाछवाया ज छे कोई टीकाकार एमा सळगसूत्रनी योजना ठोकी बेसाडवानो प्रयत्न करे छे, त्यारे ते प्रयत्न ज छे एम सहेजे देखाई आवे छे

आ त्रणे शतकोनी शैली अने विचारधारा जोता ते एक ज व्यक्तिनु लखाण छे एम मानवामा वाधो नथी आवतो आमा विचारोनु असामजस्य क्याय नथी देखातु शैलीमां पण शाल साथे कावळो सीवी काढ्या जेवु क्याय नथी लागतु आन्तरिक एकताने कारणे होय अथवा लांबा वखतनी परपराने कारणे होय, आ शतकोनो कर्ता एक ज छे अने ते पण एक कसायेलो सस्कारधन कवि छे, ए विषे शका नथी रहेती

बीजी बाजुए, आमाना एक बे श्लोको कालिदासना नाटकोमा पण मळे छे 'भवन्ति नम्रास्तरव फलोद्गमै' जेवो श्लोक कालिदासनी शैलीमां पण एटलो ज भळी शके छे 'अनाघ्रात पुष्प' ए श्लोक पण बन्ने कविओनी शैलीमा शोभे एवो छे अने कालिदास, भास आदि कविओए बीजा

कोईना श्लोको पोतानी कृतिमा वापर्यानो पुरावो नथी. भर्तृहरिना शतकोमां पाछळथी केटलाक श्लोकोए हौंशे हौंशे प्रक्षेप उमेर्या होय तो आश्चर्य नथी पण काश्मीरना महाकवि क्षेमेन्द्रे पोताना 'औचित्यविचारचर्चा' नामना ग्रंथमां जे अन्य कविओना सख्याबध श्लोको टांक्या छे, तेमांना केटलाक भर्तृहरिना शतकोमां मळे छे. ए बधा ज अहीं के त्यां प्रक्षिप्त छे एम सिद्ध करतां कईक अगवड पडे एम छे. दशरूपक, पचतंत्र, शार्ङ्गधरपद्धति वगेरे ग्रथोमा भर्तृहरिना श्लोको जई शके छे पण मृच्छकटिक अने मुद्राराक्षस जेवा नाटकोमां भर्तृहरिना श्लोको ते ते कविओ वापरे ए शक्य नथी लागतुं. आ बधा कविओना काळनो निर्णय करीने पछी प्रक्षेपोनु महामथन कर्युं होय तो ज कंईक निवेडो आवे.

भर्तृहरिना काळ विषे न्यायमूर्ति तेलंगे तेम ज बीजा विद्वानोए घणुं लख्यु छे. विज्ञानशतक आदि अन्य कृतिओ भर्तृहरिनी केम न गणाय तेनी चर्चा पण थई छे पण भर्तृहरि खरेखर राजा हतो के केम, अथवा राजवंशी पण हतो के नहि, ए विषे हजु कोईए शंका उठावी नथी

भर्तृहरि विषे अत्यार सुधी जे चर्चा थई छे ते घणी उपयोगी छे ए विषे शंका नथी. पण भर्तृहरिनां शतकोमां जे धार्मिक तत्त्वज्ञान अथवा दर्शन देखाई आवे छे तेनो, अने समाजव्यवस्थानु जे प्रतिबिंब पडेलुं छे तेनो, विचार करी तेना काळनो चितार चीतरवानुं हजी बाकी ज छे.

एटलुं तो स्पष्ट छे के भर्तृहरिनो काळ कोई महा-साम्राज्यनो काळ नथी. नाना नाना राजाओ नानां नाना राज्यो हांकता हशे, अने अरसपरस अदेखाई करी पोतानुं अलूणुं जीवन खाटुंमीठुं के तीखुं तमतमतुं करता हशे. अशोकना शिलालेखोमां जे जातनी राज्यव्यवस्था जणाई आवे छे अथवा चाणक्यना अर्थशास्त्रमां जे राजत्वनो आदर्श विकसेलो देखाय छे, तेनो पडघो आ शतकोमां देखातो नथी.

टीकाकारो सामान्यपणे नीति, शृंगार अने वैराग्य ए त्रणेनो क्रम भारतीय जीवनना आदर्शने क्रमे गोठवे छे. कुमारअवस्थामां ब्रह्मचर्यनुं पालन करी विद्याभ्यास करवानो होय छे तथा लोकजीवन साथे परिचय केळववानो होय छे. ए ज वखत एवो छे के ज्यारे नीतिनो पायो दृढ करी शकाय. पछी ज्यारे यौवन पूर जोसमां खीले छे त्यारे ए चार दिवसना चांदरणानो पूरो उपयोग करी शृंगाररसमां राची लीधा पछी भोगमय जीवननी व्यर्थता मन उपर ठसाववा माटे वैराग्य केळववानुं होय छे, जेथी 'अतुल परिताप'मांथी बची जई 'अनन्त शमसुख' मेळवी शकाय.

भर्तृहरिनी ए आखी शिखामण एटली तो आर्य-मान्य थई छे के ए शिखामणना वाजी थडुं ए गीता के धम्मपदना काजी थवा समान छे छतां आजनो जमानो आपणने कहे छे के, भर्तृहरिए सदाचार तरीके जे वस्तुओ शीखवी छे ते समाजहितनी दृष्टिए केटले अंशे पथ्यकर

छे एनी स्वतंत्र चर्चा थवी जोईए. खिस्ती अंग्रेजोए लांबा वखत सुधी 'पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस'नो भक्तिनो आदर्श प्रमाण मान्यो, पण आजे हवे तेओ ए आदर्श केटलो अधूरो छे एनी चर्चा छडेचोक करे छे

भर्तृहरि भिक्षाना वखाण करे छे, जंगलमां रही कदमूळफळ उपर जीववानुं सूचवे छे. दैव अथवा नसीबनी मीमांसा पण एने वळगी ज छे. भर्तृहरिए दाम्पत्यजीवनने भावनाप्रधान चीतरवाने बदले भोगप्रधान बताव्युं छे, अने पतिपत्नीए मळीने कुटुम्बसेवामां अने समाजसेवामां भळी जवामां मळता रसना घूंटडा लेवानो जे आदर्श स्मृतिओए मानवो आगळ मूक्यो हतो तेनो तो उल्लेख सरखो भर्तृहरिना शृंगारमां जणातो नथी आ बधी वस्तुओनी आपणे फरी वार चिकित्सा करवी घटे छे.

एटलुं खरुं के शृंगार शतकनी भोगवृत्ति विलासी होवा छतां अनार्य नथी; ते यौवनोचित छे छतां उच्छृंखल नथी. नीतिना आदर्शने अवगणीने सामाजिक जीवननो पायो तोडी नाखनार उत्पथगामी विलास ए नथी. आपणे भूलवुं न जोईए के भर्तृहरिए जे उत्कटताथी शृंगार चीतर्यो छे तेटली ज सचोट समर्थ वाणीमां भोगमय जीवननु वैय्यर्थ्य पण समजाव्युं छे. अने तेम करतां, एकाद दाखलो बाद करतां, कोई पण ठेकाणे जुगुप्सा उत्पन्न नथी करी; अने ज्यां एक बे ठेकाणे ए रस कविए जमाव्यो छे त्यां ए श्लोको ए रसना सारा नमूना तरीके जरूर टांकी शकाय तेवा थया छे.

हिंदु धर्मना अने हिन्दु सामाजिक जीवनना क्रमविकासनो इतिहास जगतना इतिहासनु नानुसूनु प्रकरण नथी जे दिवसे ए इतिहासनु कार्यकारणभाव साथे संशोधन, संगठन अने रहस्योद्घाटन थशे त दिवसे हिन्दुस्ताननो इतिहास अने आर्यसंस्कृतिनु हार्द आपणी नजर आगळ सूर्यप्रकाश जेवा स्पष्ट थशे. क्रमविकासना ए इतिहासमां भर्तृहरिना शतकोने पण अगत्य स्थान मळशे, कमके आ शतकोनी असर, गीतानी असर जेटली ज सार्वभौम थई छे

जो वाङ्मयसंगठनने राष्ट्रीय केळवणीनु एक अंग गणीए तो आ शतकोने राष्ट्रीय केळवणीना इतिहासमा पण मानभर्यु स्थान मळवानु ज छे

२

ध्यानपूर्वक जोता स्पष्ट थशे के त्रणे शतको लखवामां भर्तृहरिने एक विशाळ अने प्रसन्न एवी जीवनदृष्टि केळववी छे, जीवनना आदर्श निश्चित अने लोकसुलभ बनाववो छे आपणे जाणीए छीए के समाजमा नीतिना त्रण जुदा जुदा आदर्शो प्रवर्ते छे गृहसंसारनो त्याग करी विरक्त रहेनारा अने आजीविकानी खटपटमाथी पण पोताने मुक्त राखनारा संतमहात्माओनो अने सन्यासी-यतिओनो एक आदर्श छे त ज प्रमाणे दुनियामां रही दुनियानी सामान्य सेवा करी दुनियादारीना गणाता जीवनमां सामान्य शील अने सदाचार खीलववानो जुदो आदर्श छे

आ उपरात आदर्शनो एक त्रीजो प्रकार छे, जेने वण परत्वे बदलातो आवरूनो सतनो अथवा सत्त्वना आदर्शनो स्वधर्म कही शकाय ब्राह्मण युद्धमाथी नासी आवे तो एनु सत जतु नथी, पण जो ए तपाभ्रष्ट थाय तो एवु सत गयु क्षत्रिय देवादार थाय तो ए शरमभरेलु नथी मनातु पण ए लडाईमाथी नासी न आवी शके दुनियाने ठगनार लूटनार चारोमा पण अदर अदर प्रमाणिकपणु जाळववानो एक आदर्श होय छे, जेना वगर चोरो पोतानु सगठन करी ज न शके विश्वइतिहासना लेखक श्री० एच जी वेल्स एवा व्यक्तिगत, वर्गगत अथवा वर्णपरत्वे नक्की थता आदर्शने माटे शब्द वापर्यो छे – persona ए आदर्श सार्वभौम नथी गणातो जाति परत्वे, स्थान परत्वे अने धधा परत्वे ए अलग अलग हावाथी अमुक अशे ए एकागी होय छे पण ए ज कारणे ए आदर्श स्वीकारनार लोकोमा एना पालन विषे असाधारण चीवट होय छे सत यतिनो आदश लोकोत्तर हावाथी सामान्य लोको एने लोकग्राह्य गणे छे समाज एवा आदर्शने पूजे छे पण एने अपनावतो नथी सर्वसामान्य जातिनो आदर्श बधे लगभग सरखा होय छे अने ए ज आदर्श मनुष्यजातिना विकासनो द्योतक गणाय ज्यारे वर्णनो आदर्श ते ते जमानन ज वळगे छे

भारतीय सस्कृतिमा आ त्रण प्रकारना आदर्श सुदर रीत खील्या छे एक रीते एम कही शकाय क भारतीय

संस्कृतिनो ए एक विशेष छे अने ए ज कारणे भारतीय नीतिमत्ता आ देशमा सर्वभौम थई छे अने ते एटला तो जमानाओ सुधी अखडपणे चाली छे के एने आपणे सनातन धर्मने नामे ओळखता थया छीए

भर्तृहरिनो जमानो धर्मप्रयोगोमा ताजो होवाथी भिक्षा उपर नभनाना दोषो लोकोना ध्यानमा आव्या न हता आजे धर्मपरायण लोकोनु घेर घेर भिक्षा मागीने जीववु आपणे बिलकुल पसद करता नथी, केम के ए जीवननो आपणा लोकोमा भयानक अतिरेक थयो छे निवृत्त थईने वनवास सेववो ए अमुक परिस्थितिमा साधनारूपे आपणे भले पसद करीए, अथवा जीवनना सध्याकाळमा वानप्रस्थने माटे भले ए आपणे राखी मूकीए, पण सार्वभौम नीतिमा अकर्मण्य निवृत्तिने तम ज भिक्षाचर्याने आपणे तरछोडी काढवानु ज नक्की कर्यु छे दैववादमाथी त्याग निश्चितता, अने क्षात्रवीर्य पेदा थवाने बदले अकर्मण्यता अने जडता ज पेदा थया छे एटले आपणे ए वादने पण तिलाजलि आप्ये ज छूटको

भर्तृहरिना शतकोमा ज वस्तु बहु देखाती नथी पण पाछळथी आपणा साहित्यमा जे घूसी छे एवी एक वस्तु त नीतिशून्य चतुराई. जेने घणी वार आपणे वाणियाशाहीने नामे ओळखीए छीए जेम तेम करीने बची जवाने माटे अने पोतानो टको के मेलो स्वार्थ साधवा माटे माणसे शु शु करवु घटे छे एनु डहापण शीखवनार

वचनो आपणे त्या ढगलाबध छे एवा वचनोए ज आपणा समाजने पुरुषार्थहीन अने टूंकी दृष्टिवाळो बनाव्यो छे

३

भर्तृहरिनी शैली रामायण-महाभारतनी शैली जेवी अथवा पुराणकारोनी शैली जेटली सादी सरळ नथी, तेम ज उत्तरकालीन कविओनी शैली जेवी कृत्रिम, जटिल अने वासी पण नथी भर्तृहरिनी शैलीमा प्रसाद छे, ओप छे अने व्यापक अर्थमा ओज पण छे अने शैलीनी सर्वश्रेष्ठ कसोटी जे एनु वळगणापणु ते पण छे जे शब्दो अने शब्दसमूहो, जे वाक्यो अने श्लोको वाचतावेत माणसने वळगे छे अने कहेवत जेवा थईने समाजमा चलणी नाणानी गरज सारे छे ते बधा कोई पण देशमा अने कोई पण जमानामा आदर्श शैलीना ज गणाय भर्तृहरिनी शैलीमा ए गुण सोए सो टका ऊतरेलो होवाने कारणे ज, पंजाबमा के बगाळमा, काश्मीरमा के केरळमा, भर्तृहरिना श्लोको घेर घेर मोढे कराय छे अने सभाषणमा टकाय छे

महाराष्ट्र कवि मोरोपते सभाषण माटेनो आदर्श एक आर्यामा ग्रथित कर्यो छे—

बह्वर्थ, जनमनोहर, अपाक्षर, मधुर, सत्य बोलावें।
ज्या सद्वाग्यथवर्णे श्रोत्याच चित्त शिरहि डोलावें ॥

सांभळनारनुं माथुं अने हैयुं बन्ने प्रसन्नताथी डोलवा मांडे एवी, अल्पाक्षर अने मधुर तथा अर्थगंभीर शैली जोईती होय, तो संस्कृतनो रसियो भर्तृहरि पासे दोडवानो ज.

प्रारंभमा कह्युं छे तेम, भर्तृहरिमां एक ज श्लोकमां एक आखी वार्ता अने एनो बोध कही देवानी शक्ति जेम छे, तेम ज एक आखो आदर्श पण एक ज मोटा श्लोकमां ते सविस्तर वर्णवी शके छे एक श्लोक एटले एक आखुं चित्र भर्तृहरिनी आ चित्रण-शक्ति कालिदास अने भवभूति करतां जराये ऊतरती नथी. आदर्शनी भव्यता जमाववा माटे भलभला कविओए भर्तृहरि पासेथी पाठ लेवा जोईए.

अंग्रेजीमां सॉनेट करीने काव्यनो के छंदनो एक प्रकार छे. स्वाभाविकता, संपूर्णता अने हृदयतृप्ति जाळवी चौद लीटीमां एक वात पूरी करवी ए ए काव्यप्रकारनी विशेषता छे कविने स्फुरेली एकाद प्रतिभापूर्ण कल्पना चौद लीटीमां ज पूरी करवी — आ बंधनने कारणे कविने पोतानी बधी शक्ति एमां वापरवी पडे छे ए ज खूबी भर्तृहरि पोताना भारदस्त शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा अथवा शिखरिणीमा आणी आपे छे. आ गौरवशाळी वृत्तो भर्तृहरिना हाथमां एवो तो चमत्कार बतावे छे के एक श्लोक एटले एक सॉनेट ज जोई लेवी

केटलाक कविओ नानां नाना वृत्तो लई एक पंचक, एक अष्टक अथवा एक दशकमां एक आखो भाव अथवा

प्रसग पूर्ण करे छे, पण भर्तृहरिने तेम करवुं पडतु नथी एनो साहित्ययोग एटलो समर्थ छे के उपर वर्णवेला एक एक वृत्तो एना हाथमा कुशळ किंकरनी पेठे काम आपे छे

व्याकरणना के छदोना नियमो तोडी वाचको पासेथी ए त्रुटी दरगुजर कराववानी नबळाई सस्कृत कविओ बहु ओछी बतावे छे भर्तृहरिए तो ए क्याय देखाडी नथी

भर्तृहरिए मनुष्यने माटे जीवननो केवो आदर्श विस्तारी आप्यो छे ए हवे आपणे तपासीए, अने एनी साथे साथे भर्तृहरिना काळनी दुनिया केवी हती एनु चित्र पण भर्तृहरिना ज श्लोको परथी आपणे तैयार करवानो प्रयत्न करीए

आजे हिंदुस्तानमा मत्स्य, कूर्म अने वराह ए त्रण अवतारोनी क्याय पूजा थती नथी वामन अवतार केवळ नामथी विष्णुना अवतारमा समाई गयेलो छे परशुराम तो एक बे न्यातोनो कुळदैवत्त थई बेठो छे. नृसिंहनु पण एम ज थयु छे आजे तो अवतारोमा राम अने कृष्ण ए बे ज प्रधानपणे सार्वभौम थया छे बौद्ध अथवा बुद्ध आ दशावतारमा क्यारे दाखल थयो अने पश्चिम भारतमा एनु पंढरपुरना विठोबामा क्यारे रूपान्तर थयु, एनो इतिहास हजी कोईए तारव्यो नथी सनातनी हिंदुओ माने छे के कल्की अवतार हजी थवानो छे ज्यारे गुजरातमा

आगाखानी खोजाओए विचित्र रीते आगाखानने ज कल्की अथवा नकलकी क्यारनो बनावी दीधो छे! हिंदुधर्मनी पौराणिक मान्यताओमा केटलु अराजक पेदा थयु छे एनो हिंदुओने ज हजी पूरतो ख्याल नथी हिंदु संस्कृति अने हिंदु समाज मरता मरता पण हजारो वर्ष टके एवो एक कवीरवड छे एनी शाखा प्रशाखाओ केटली छे अने एनी छाया तळे बीजा कटला वृक्षो ऊग्यां छ अने ए एने पोषण आपे छे के एनो जीवनरस चूसे छे, एनी एने पोताने ज खबर नथी

भर्तृहरिमा अवतारोनो उल्लेख अनेक ठेकाणे जडे छ पण एमां मुख्य जे राम अने कृष्ण त ज जडता नथी ए आश्चर्य छे भर्तृहरिना धार्मिक तत्त्वज्ञान उपर बौद्धधर्मनी असर पूरेपूरी देखाय छे, छता बुद्धनो पण उल्लेख क्याय मळतो नथी एनु कारण शोधवु जोईए भर्तृहरि जेवा शिव उपासके जो वखतसर आग्रह राख्यो होत तो गौतम बुद्ध विष्णुनो अवतार गणावाने बदले शिवनो ज एक अवतार गणाई जात, अने वखते ते ज बराबर थात अवैरना प्रचारक बुद्धने जो सहारकारी शिवना अवतार तरीके गणवतां वांधो हाय तो 'विनाशाय च दुष्कृताम्' अवतार लेनार विष्णुनो अवतार पण ए न थई शके जीवनदृष्टिए तपासतां बुद्ध शिवनो ज अवतार गणावो जोईए जो अनादर न गणाय तो, नाम उपरथी ज विष्णु घुसणियो छे, ज्यारे शिव कल्याणकारी छे, कल्याणमूर्ति छे

आम जोके भर्तृहरि विष्णुना अमुक अवतारो प्रत्ये आदर बतावे छे, महादेवनो अनन्य उपासक छे, छतां एना तत्त्वज्ञान उपर बौद्ध धर्मनी असर विशेष होय एम लागे छे. आपणा लोको अनेकानेक पंथ ऊभा करे छे छता जोतजोतामा ए बधा पथोने अने विचारभेदोने जीवनदृष्टिथी एकतानी दोरीमा परोवी पण दे छे आपणी जातिनो ए खास स्वभाव छे ए स्वभाव जेम भगवद्गीतामा देखा दे छे तेम ते भर्तृहरिमा पण पूर्णपणे विकसेलो देखाय छे

भर्तृहरिनो जो विशेष आग्रह होय तो ते कर्म विषे छे देवोनी भक्ति करवी ए ठीक छे पण देवो तो कर्मने अधीन छे देवो करता दैवनी मात्रा वधारे मानीए तो ते पण कर्मने ज अधीन छे एम कहीने भर्तृहरिए कर्मनु ज सर्वोपरीपणुं स्पष्ट कर्यु छे

आ कर्म शु छे ते उपनिषत्कालीन ऋषिओने पूछवु जोईए. आखु विश्व खरुं जोता अनाद्यनन्त कर्मनो ज विस्तार अने विलास छे. जेने आपणे पचमहाभूत कहीए छीए ते जड पदार्थो पण कर्मनी ज विभूति छे. अने जो ऊडाणमा जईने विचार चलावीए तो आत्मा अने कर्म वच्चे विशेष भेद जडशे नहि. जे कई हलनचलन एनी मेळे थाय छे, अथवा इरादापूर्वक कराय छे, तेटलु ज कर्म नथी, पण आ विश्व पाछळ जे प्रेरणा छे अने जे प्रेरणाए ज विश्वनु रूप धारण कर्यु छे तेने आत्मा पण कही शकाय,

अने कर्म पण कही शकाय आत्मा कोई स्थावर वस्तु नथी अने कर्म कोई क्षणजीवी परिवर्तन नथी, बन्ने एक ज छे. एटलु जो आपणे समजीए तो कर्म ए ज साध्य बने छे अने ए ज साधन पण बने छे ए कर्मनी ज उपासना भर्तृहरिने अभिमत छे अने तेथी ज ते सर्व दृष्टिओनो समन्वय समजी शके छे. अने तेथी ज ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, सूर्य बधाने कर्मना साम्राज्यमा ए गोठवी शके छे

नाथसम्प्रदायमा जे भर्तृहरि देखाय छे ते ज आ श्लोकोनो कवि के केम ए विषे पण खातरीपूर्वक कशु कही शकाय तेम नथी नाथसम्प्रदायनी जे खास फिलसूफी छे ते आ श्लोकोमा नथी देखा देती महाराष्ट्रना आद्य संत कवि ज्ञानेश्वरना मोटा भाई नाथसम्प्रदायना हता ज्ञानेश्वरे एमनी पासेथी दीक्षा लीधी हती, छता ज्ञानेश्वरना ग्रथोमा नाथसम्प्रदायनी विशेषता जोवामा आवनी नथी भर्तृहरि अने ज्ञानेश्वर ए सम्प्रदायमां दाखल थया पछी एमनो ए दिशानो रस कईक ओछो थयो हशे अने पछी एमणे सामान्य फिलसूफी उपर ज पोताना काव्यनो मदार बाध्यो हशे ते गमे ते होय, भर्तृहरिना काव्यमा नाथ-सम्प्रदायनी खास छाप नथी.

४

अमारा नानपणमां नाना मोटा छदना अनेक मराठी श्लोको अमे मोढे करता न्यातभोजन वखते अथवा अन्त्याक्षरीनी

हरीफाईमा एनो उपयोग थतो आवी मूडी वधारवानी दृष्टिए जे रोचक श्लोको ते वखते मोढे कर्या हता तमा वामनपडिते करेला भर्तृहरिना नीतिवैराग्य शतकना श्लोकानो अनुवाद मोटो भाग भजवतो आ श्लोकोनो जेम जेम अमे अर्थ करता गया तेम तेम अमने जीवननो आर्य आदर्श जडतो गयो अने ए नीतिनी एक मोटी केळवणी थई पडी बाळमानसने ज्यारे काई भव्य आदर्श जड छे त्यारे ते पातानु आचरण ए कसोटी उपर कसी जुए छे अने ए रीते ए आदर्शने गुरुस्थाने स्थापे छे वामनपडित अमारा बालहृदयमा आ रीते भर्तृहरिनी स्थापना करी भर्तृहरिए पोतानु ते स्थान हजु सुधी टकावी राख्यु छे

मराठी पछी सस्कृतनु भणतर ज्यारे शरू थयु अने भर्तृहरिना श्लोको पोतानु भाषासौष्ठव अमारी आगळ खीलववा लाग्या, त्यारे ए श्लोको जराय अपरिचित जेवा न लाग्या ऊलटु वामनपडित पूर्वतैयारी करावी होवाथी सस्कृत श्लोको समजवामा घणु सहेलु थयु

भर्तृहरिना सस्कृत श्लोको मोढे करता मुख्य आकर्षण एना छन्दसौष्ठवनु हतु, भाषालालित्यनु हतु क आदर्शनी आर्यतानु हतु, ए आजे कहेवु मुश्केल छे

सद्भाग्य कॉलेजमा प्रवेश करतानी साथे नीति-वैराग्यनु सागोपाग अध्ययन करवानी तक मळी अने सस्कृत ग्रथोनी आधुनिक दृष्टिए चिकित्सा करवानी दृष्टि पण मळी आगळ जता विद्यार्थीओने थोडा समयमा

संस्कृत भणाववानो प्रयत्न करतां आ श्लोकोमांथी कया लेवा, कया न लेवा, ए नक्की करवुं पड्यु. नसीबवाद उपर भार देनार श्लोको टाळवानु प्रथम मन थयुं. स्त्रीओना अंगोनुं अने हावभावोनु वर्णन पण टाळवु पड्युं. शृंगारशतकमांथी तो कशु लेवाय ज नहि. छतां एमाय वेएक लीटी लेवा लायक जडी ते अहीं लीधी छे. आम शिक्षकनी दृष्टिए पसंदगी कर्या पछी भाषा अने भावनी दृष्टिए श्लोकोनो क्रम नक्की करवानु मन थई आव्यु. ओछामां ओछा केटला श्लोको लेवाथी भर्तृहरिनी आखी शिखामण एमां मळी रहेशे ए जोवानी दृष्टि पण आ पसंदगीमां रहेली हती ज.

सन १९२२ नी सालमां ज्यारे प्रथम जेल मळी अने तेमाय पराणे सेववा पडेला त्रण चार महिनाना चोपडीना भूखमराने अंते भर्तृहरि ज्यारे हाथ आव्यो त्यारे सद्बोधशतकनी रचना पूरी करी. अने विनोदने अर्थे ए आखो संग्रह लखी काढ्यो.

पछी एक वार नवजीवन मुद्रणालये ए बीबामां गोठव्यो, पण एटलामां सत्याग्रहनी लडत शरू थई अने सरकारे प्रेस जप्त कर्यु अने पोलीसोए प्रेस साथे बीबांमां गोठवायेलुं सद्बोधशतक पण जप्त कर्यु, अने वधी महेनत खेदानमेदान करी नाखी. पछी तो संग्रहनुं मूळ हस्तलिखित पण मेळववुं कठण थई गयु आखी हाडमारीओ अने ढील सहन करतां करतां आ संग्रह

अत १९४१मा प्रकाशित थाय छे दशानी ऊछरती पेढीना मानस उपर अने हृदय उपर आ सग्रह अनत काळ सुधी प्रकाश पाडतो रहे एवी भर्तृहरिना 'शततेजस 'ने प्रार्थना छे

६

आम प्रस्तुत सग्रह भर्तृहरिना शतकामाथी शिक्षणने उपयोगी एवा श्लोको तारवीने करेलो छे

सौथी सहेला एवा सत्तावीस श्लोको अलग वीणी काढी एमनी 'नक्षत्रमाला' बनावी छे अपेक्षा एवी छे के शिक्षको, मावापो अथवा वाचीओ रजाना दिवसामा राज एक व एक बे करता आ श्लोको एक महिनामा विद्यार्थीओने समजावी एमनी पासे माढे करावशे अने उच्चारण तरफ खास ध्यान आपी सस्कृत भाषाना अभ्यासनो पायो मजबूत करशे

सस्कृत भाषा शीखवानी अने एमाथी आनद मेळववानी चावी एना शुद्ध उच्चारणमा छे सस्कृत भाषामा स्वाभाविक माधुर्य छे एना गद्यमा सहेजे तालबद्धता आवी शके छे अने अनेक प्रकारना एना छदामा एटलु तो सगीत भरेलु छे के माणस ए भाषा पूरती न जाणतो होय तोय केवळ नादमाधुर्यने वश थई सेंकडो श्लोको ए वाचतो ज जाय अने एमाथी नादानद मेळवतो जाय

पण जेने सस्कृतना शुद्ध उच्चारणनी खूबी हाथ आवी नथी अथवा, साचु कहीए तो, जीभे चढी नथी, तेने

संस्कृत वांचवु अथवा गावु ए एक कष्टप्रद व्यवसाय थई पडे छे.

तेथी शिक्षकोए प्रथम पोतानु उच्चारण शुद्ध छे के नहि एनी खातरी करी लई, अने तेम न होय तो प्रयत्नपूर्वक सुधारी लई, पछी ज विद्यार्थीओने संस्कृत भाषानी दीक्षा आपवी विद्यार्थीओने संस्कृत उच्चारणनी दीक्षा आपवानो एकमात्र उपाय ए छे के प्रथम अक्षरोना कंठ, तालु आदि स्थानो अने ह्रस्व दीर्घना नियमो समजावी तेम ज संधिनियमोनी स्वाभाविकता एमना मन पर ठसावी पछी, अथवा ते पहेला, एक एक श्लोक शुद्ध अने मधुर ढबे दसवीस वार तो शु पण पचास पचास वार धीरज-पूर्वक पोते बोली संभळाववो आ महेनत आजना शिक्षकोने वेठ जेवी लागशे, पण संस्कृति-रक्षणनी दृष्टिए एनु महत्त्व असाधारण छे सुलेखन, शुद्ध लेखन अने शुद्ध उच्चारण ए संस्कृतिनां महत्त्वना अंगो छे, ए आपणे भूली न जवुं जोईए अने जो गणित अने व्याकरण मारफत निर्दोष विचार करवानी टेव आपणे पाडी शकता होईए, तो शुद्ध लेखन, सुलेखन अने शुद्ध उच्चारण द्वारा आपणे सदाचारनो तथा शिष्टाचारनो पायो जरूर नाखी शकीए छीए

छन्द, भाषा अने भावनी दृष्टिए सहेला अने शिक्षण-सुलभ एवा सत्तावीस श्लोको तारवी काढ्या पछी नीति अने वैराग्यशतकमाथी सारामा सारा एकसो आठ श्लोको तारवी काढ्या, अने एमा पण छंद, भाव अने भाषानी

दृष्टिए अमुक क्रम गोठवी एमनु सद्‌बोधशतक बनाव्युं आ रीते संग्रह अने संपादन कर्या पछी एम जणाई आव्युं के, भर्तृहरिनी आर्य शिखामण संपूर्णपणे आटलामां आवी जाय छे अने विद्यार्थीओने शीखववा लायक एवुं भाग्ये ज कंई रही जाय छे

आम दखाया छता कटलाक श्लोको प्रत्यनो पक्षपात जबरदस्त नीवडवाथी अने भर्तृहरिनी आ आवृत्ति बनता सुधी संपूर्ण करवाना लोभथी केटलाक प्रकीर्ण श्लोको सद्‌बोधशतक पछी 'खिलकाण्ड' तरीके मूक्या छे आ श्लोको पाठ्यक्रममां राखवाना नथी

आटलुं कर्या पछी पण लाभ तृप्त थयो नहि, एटले भर्तृहरिमांथी जे नाना नाना वाक्यो कहेवत जेवा थई पड्या छे अने आपणा लखाणोमां वापरी शकाय छे एवाओनुं एक परिशिष्ट बनाव्यो एने **सूक्तिसुधा**नुं नाम आप्युं छे निबंधलेखन शीखवनार शिक्षको आमांथी अनेक वचनो निबंधना विषय तरीके वापरी शके छे

आटलुं कर्या पछी जे श्लोको छोडी दीधा हता तेमांथी केटलाकना एक एक अथवा बब्बे चरणो लेवानुं मन थयुं केमके ए स्वतन्त्रपणे मोती जेवा चळकवा लाग्या एटले एमनी एक **मौक्तिकाञ्जलि,** हार बनाव्या वगर एमने एम अहीं मूकी दीधी छे

भिन्न भिन्न अभिरुचिवाळा शतकभक्तोने आथी संतोष थशे एवी आशा छे आवी रीते भर्तृहरिना काव्यमाथी विद्यार्थीओ माटे जेटलु लेवालायक हतु ते बधु आ संग्रहमा आवी गयु छे अने एवी आशा बधाई छे के हिंदुस्तानमा ज्या ज्या संस्कृत भाषानी प्रतिष्ठा छे त्यां त्यां आ संग्रह पाठ्य पुस्तक तरीके अथवा संस्कारनी केळवणीना खोराक तरीके वपराशे

६

आ संग्रह उपर संस्कृतमा ज एक टीका तैयार कराववी एवो प्रथम संकल्प हतो अने ते प्रमाणे मारा मित्र श्री पांडुरंग वळामेए (हालना श्री रंग अवधूत महाराजे) ए तैयार पण करी आपी पण सलाहकारानो अभिप्राय पड्यो के संस्कृत टीकानो आजना विद्यार्थीओने बहु लाभ थतो नथी एटले दुःख साथे ए आखी टीका कोरे मूकवी पडी ए टीकामाथी केटलाक समानार्थी श्लोको आ संग्रहनी टिप्पणीओमा लेवाया छे

आ समानार्थ श्लोको विद्यार्थीओनी जिज्ञासाने वधु जाग्रत करशे अने आ दिशामा वधु शोधखोळ करवा प्रेरशे एवी आशा छे

वेद जेम अपौरुषेय छे तेम संस्कृत साहित्यमा एवा असंख्य सुभाषितो छे के जेमना कर्तानु ठेकाणु क्याय जडतु नथी पेढी दर पेढी लोककठमा ए सुभाषितो

रमना होय छे, अने लोककेळवणीनु कीमती काम कर्ये जाय छे कटलाक श्लोकोना देशी भाषामा पर्यायो पण होय छे तेटला परथी मनाय छे क त मूळ सस्कृतना अनुवाद हशे पण एम पण बनवु अशक्य नथी के मूळ देशी भाषानु सुबोध-वचन गमी जवाथी सस्कृत पडितोए एने पाछळथी सस्कृतमा उतार्यु होय *केटलीक पालि गाथाओ महाभारतमा जडे छे त्या पण मूळ कयु अने अनुवाद कयो ए कहेवु मुश्केल छे केटलेक ठेकाणे श्लोकोनी रचना ज बतावी आपे छे के मूळ कयु अने भाष्य कयु ? दाखला तरीके, गीतामा 'त्रिविध नरकस्येद' ए श्लोक अने भर्तृहरिनो 'कान्ता कटाक्षविशिखा...' ए श्लोक, ए बे वच्चे तुलना करता तरत देखाई आवे छे क गीतानो कोरो श्लोक लईने एना उपर ज भर्तृहरिए काव्यमय भाष्य कर्यु छे

सद्बोधशतकना प्रकाशन माटेनी बधी महेनत पहेली वार पण श्री पाडुरग देशपाडेए ज करी हती अने आ वखते पण एमनी महेनत अने चीवट विना आ काम पूरु न ज थात एटले एमनो आभार मानी एमना हिस्साने ओछो नथी करवा मागतो

आ सग्रहनी सस्कृत जोडणी विषे बे शब्द कहेवा जोईए घणी वार पदच्छेद करता न आवडवाथी विद्यार्थीओ मूझाय छे समासना पदो अलग बनाववाथी कोक वार घणी सगवड मळे छे सधि तोडवाथी पण अर्थ सहेजे

स्पष्ट थाय छे अने स्वल्पविराम, अर्धविराम, उद्गारचिह्न के प्रश्नचिह्न मूकवाथी श्लोक जोतावेंत एनो अर्थ पोतानी मेळे प्रगट थाय छे आवी सगवडो बनी शके तो पूरी पाडवानी दृष्टिए संस्कृतना संधिनियमोनु केटलेक ठेकाणे पालन कर्यु नथी आ प्रकार संस्कृत माटे नवो ज होवाथी एमा एकरूपता जळवाई नथी विद्यार्थीओ आवी सगवडथी राजी थशे अने शिक्षको पण आ इरादापूर्वक दाखल करेली शिथिलताने दरगुजर करशे एवी आशा छे बचाव माटे व्याकरणनो नियम हाजर छे ज के—

सहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयो ।
नित्या समासे, वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥

आ संग्रह साथे संस्कृत श्लोकोनु गुजराती भाषांतर आपवानो प्रथम विचार न हतो जरूर जेटली टिप्पणीओ आप्या पछी भाषांतरनी जरूर न रहेवी जोईए छतां, जेमनु संस्कृत काचु होय छे तेमने श्लोकनु भाषांतर मळ्यु होय, तो मूळनो अर्थ पोतानी मेळे बेसाडवामा घणी मदद थाय छे एवो जातिअनुभव छे

ए उपरांत जेमनी पासे संस्कृत वाचवानी धीरज नथी पण जेओ ए साहित्यमा संग्रहेली आपणी सांस्कृतिक मूडीनो आस्वाद लेवा मागे छे तेमने माटे संस्कृतना भाषांतरो घणा कीमती नीवडे छे

पण आपण त्यां भाषांतर कळा पाछळ विशेष महेनत लीधेली जोवामा आवती नथी केटलाक भाषांतरो तो मूळ

प्रयत्नो मददथी ज समजी शकाय एवा पण जोवामां आव्या छे। केटलांक भाषांतरो एवां तो यांत्रिक होय छे के अर्थनी हानि करवा उपरांत बन्ने भाषाने पक्षपात रहित अन्याय करवामां ज सफळता बताय छे

संस्कृत साहित्य आपणो कीमतीमां कीमती परंपरागत वारसो छे एने जो लोकभोग्य बनाववो होय तो एना सारामां सारा प्रामाणिक अने सरस अनुवादो थवा ज जोईए आ काम थयानुं थवुं जोईतुं हतुं पण एक तो संस्कृत साहित्य विशाळ छे अने बीजुं आपणी देशी भाषाओमां संस्कारिता वधारवा माटे साहित्यनुं सेवन करनार लोकोनी संख्या परिमित थई छे अने आपणा विद्वानो संस्कृत, प्राकृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि साहित्य उपर ज पुष्ट थवानुं पसंद करे छे तथी पण आपणी देशी भाषाओ आ बाबतमां पछात ज रही छे

आदर्श भाषांतरमां मूळनो भाव, एनी सूक्ष्म छटा, एनी विशिष्ट शैली अने एनुं माधुर्य तो जाळववानो प्रयत्न होवो जोईए ते उपरांत जे भाषामां भाषांतर थाय छे ते भाषामां पण ए भाषांतर कढंगुं न लागवुं जोईए भाषानो स्वभाव, एना प्रवाह, एनो वाक्प्रचार, अने एनी मूडी ए बधाने अनुकूळ एवुं भाषांतर थाय तो ज ते देशी भाषानुं घरेणुं थई शके छे मूळनो भाव स्पष्ट करवा माटे ज्यां एकाद शब्द वधारे वापरवो पडे अथवा स्पष्टीकरण आपवुं पडे त्यां ते विना संकोचे मूळने वफादार

रही पूरां पाडवा जोईए ज्या भापानी विशेप शक्तिने कारणे मूळनु लवाण टूकावी शकाय तम होय त्या तेम पण करतां सकोच न राखवो जोईए

भर्तृहरिनु एवु भापातर रजू करवानी महत्त्वाकाक्षा मनमा हती, पण एने माटे जोईता वखतना अने पूर्व तैयारीना अभावे तम करी न शक्यो सदभाग्य मारा मित्र श्री पाडुरग देशपाडए ए बधा श्लोकोनो निर्दोप अने सारो सरखा अनुवाद करी आप्यो एनो ज आधार लई एमा सहेजसाज फरफार करी प्रस्तुत गुजराती अनुवाद वाचको आगळ मूकवानी हिंमत करी छे श्री महादेव भाईना शब्दोमा कहीए तो गाय जेम पोताना वाछरडाने चाटी चाटीन रूपाळु करे छे तम भापातर पण रूपाळु करवानु होय छे हु तो मानु छु के मूळनो जेम तेम शुद्ध अनुवाद कर्या पछी अनुवादके मूर्तिकारनी पेठे एने मठारवो जोईए पछी एने मोटेथी अनेक वार वाचीने, गद्यमा जे आवश्यक ताल होवो जोईए त आव्यो छे के नहि ते तपासवु जोईए अने ते प्रमाणे अनेक वार घूटी घूटीने एने जीवतो अने लावण्ययुक्त बनाववो जोईए अने फरी एने मूळ साथ सरखावी तपासवु जोईए के एणे मूळ लखाणने कोई पण रीते अन्याय तो कर्यो नथी ?

आवु भापातर रजू करी शकत तो ए समाधाननो विपय थात तम नथी बनवा पाम्यु एनु मने तीव्र भान

छे पण आशा छे के जेवु छे तेवु पण आ भाषांतर गुजराती वाचकोने आवकारलायक जणाशे.

हवे पछीना भाषांतरो एवा तो सर्वांगसुंदर थवां जोईए के गुजराती भाषानु अध्ययन करतां अनेक शैलीओ साथे परिचय केळववा मागनारने आवा भाषांतरो जोया वगर चाले ज नहि एम लागवु जोईए. संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी, बगाळी, मराठी वगेरे भाषाओए जे कंई शैलीनी समृद्धि केळवी होय ते बधीनो लाभ आपणी भाषाने मळवो ज जोईए एवो आग्रह राखीने, पोतानी भाषाने शणगारवा, समर्थ अने संस्कारी बनाववा पाछळ जेमणे मेख लीधो होय तेमनुं आ काम छे.

साबरमती, दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर
१४–११–'४१

अनुक्रमणिका

चि. बाळ,

आपणे साथे संस्कृत वांचता तेनी मीठी यादगीरीमा आ

सद्बोधशतक

तने ज अर्पण करुं छु.

१-१२-'४१ काकानी सप्रेम शुभाशिष

नक्षत्रमाला

नमः शान्ताय तेजसे ।

राजाना महिनामा बाळको रमतां रमता मोढ करी शके ए उद्देशथी नक्षत्र जेवा २७ श्लोको तारवी काढी एमनी नक्षत्रमाळा अहीं रजू करी छे

भर्तृहरिनी सुंदर बोधवाळी आ मधुर वाणी कंठ करवी ए सस्कारितानु एक उत्तम साधन छे

१

येषां न विद्या, न तपो, न दानं,
न चापि शीलं, न गुणो, न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

वृत्त — उपजाति, एटले के इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा मिश्र.
पाठान्तर — २. न चापि शीलं–ज्ञान न शीलं ।
३. मर्त्यलोके–मृत्युलोके

२

साहित्य-संगीत-कला-विहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छ-विषाण-हीनः ।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥

वृत्त — उपजाति

३

आलस्य हि मनुष्याणां
शरीरस्थो महारिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः
कृत्वा यं नावसीदति ॥

वृत्त — अनुष्टुप् = श्लोक
पाठान्तर — २ महारिपुः–महान् रिपुः ।
४ कृत्वा यं–कुर्वाणो

४

को न याति वशं नीचो
मुखे पिण्डेन पूरितः ।
मृदङ्गो मुखलेपेन
करोति मधुरं ध्वनिम ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

पाठान्तर : १ "लोके" ने ठेकाणे "नीचो" एवुं नवुं पाठान्तर उपजाती काढ्युं छे.

५

यूयं वयं, वयं यूयं
इत्यासीन्मतिरावयोः ।
किं जातमधुना येन
यूयं यूयं, वयं वयम ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

६

दानं भोगो नाशः
तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।
यो न ददाति न भुंक्ते
तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

वृत्त — आर्या.

७

परिचरितव्या. सन्तो
यद्यपि कथयन्ति ते न उपदेशम् ।
यास्तेषां स्वैरकथाः
ता एव भवन्ति शास्त्राणि ॥

वृत्त — आर्या.

८

येनैवाम्बरखण्डेन
संवीतो निशि चन्द्रमाः ।
तेनैव च दिवा भानुः
अहो दौर्गत्यमेतयोः ॥

वृत्त—अनुष्टुप्

९

मृग-मीन-सज्जनानां
तृण-जल-संतोषविहितवृत्तीनाम ।
लुब्धक-धीवर-पिशुना
निष्कारणवैरिणो जगति ॥

वृत्त — आर्या

भोगा न भुक्ता, वयमेव भुक्ताः
तपो न तप्तं, वयमेव तप्ताः ।
कालो न यातो, वयमेव याताः
तृष्णा न जीर्णा, वयमेव जीर्णाः ॥

वृत्त — उपजाति.

११

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.
पाठान्तर — १. (एक जणे सूचव्यु छे.) 'याति राष्ट्रं समुन्नतिम्' ।

१२

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह ।
न मूर्खजनसंपर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

१३

मालतीकुसुमस्येव द्वे गतीह मनस्विनाम् ।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यंत वन एव वा ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.
पाठान्तर — १.-कुसुमस्तबकस्येव द्वे गती स्तो मनस्विनाम्; द्वे गतीह मनस्विनः.-द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः ।

१४

लांगूलचालनमधश्चरणावपातं
भूमौ निपत्य वदनोदरदर्शनं च ।
श्वा पिण्डदस्य कुरुते; गजपुंगवस्तु
धीरं विलोकयति, चाटुशतैश्च भुंक्ते ॥

वृत्त — वसंततिलका

१५

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमाना
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति ॥

वृत्त — वसंततिलका

पाठान्तर — ४ प्रारब्धमुत्तम°–प्रारभ्य चोत्तम॰

१६

रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा,
न भेजिरे भीमविषेण भीतिम् ।
सुधां विना न प्रययुर्विरामं,
न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः ॥

वृत्त — उपजाति

१७

आज्ञा, कीर्तिः, पालनं ब्राह्मणानां,
दानं, भोगो, मित्रसंरक्षणं च ।
येषामेते षड् गुणा न प्रवृत्ताः
कोऽर्थस्तेषां पार्थिवोपाश्रयेण ॥

वृत्त — शालिनी

१८

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यया भूषितोऽपि सन् ।
मणिनालंकृतः सर्पः किमसौ न भयंकरः ? ॥

वृत्त — अनुष्टुप्

१९

संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् ।
आपत्सु च महाशैलशिलासंघातकर्कशम् ॥

वृत्त — अनुष्टुप्

२०

निन्दन्तु नीतिनिपुणा, यदि वा स्तुवन्तु;
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु, युगान्तरे वा;
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

वृत्त — वसन्ततिलका.

२१

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः
नवाम्बुभिर्भूमिविलंबिनो घनाः ।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥

वृत्त — वंशस्थ
पाठान्तर — २ भूमिविलंबिना-भूरिविलंबिनो

२२

श्रोत्रं श्रुतेनैव, न कुण्डलेन
दानेन पाणिर्न तु कंकणेन ।
विभाति कायः करुणापराणां
परोपकारैर्न तु चन्दनेन ॥

वृत्त — उपजाति

२३

पापान्निवारयति, योजयते हिताय,
गुह्यं च गूहति, गुणान्प्रकटीकरोति ।
आपद्गतं च न जहाति, ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥

वृत्त — वसंततिलका

२४

छिन्नोऽपि रोहति तरुः,
क्षीणोऽप्युपचीयते पुनश्चन्द्रः ।
इति विमृशन्तः सन्तः
सन्तप्यन्ते न ते विपदा ॥

वृत्त — आर्या

पाठान्तर — २ -क्षीणश्चन्द्रोऽपि वर्धते लोके ।
४ न ते विपदा—न लोकेऽस्मिन् ।

२५

पातितोऽपि कराघातै रुत्पतत्येव कन्दुकः ।
प्रायेण साधुवृत्तानामस्थायिन्यो विपत्तयः ॥

वृत्त — अनुष्टुप्

२६

प्रायः कन्दुकपातेन पतत्यार्यः पतन्नपि ।
तथा त्वनार्यः पतति मृत्पिण्डपतनं यथा ॥

वृत्त — अनुष्टुप्

२७

कदर्थितस्यापि हि धैर्यवृत्ते
न शक्यते धैर्यगुणः प्रमार्ष्टुम् ।
अधोमुखस्यापि तनूनपातो
नाधः शिखा याति कदाचिदेव ॥

वृत्त — उपजाति

पाठान्तर — ३ तनूनपातो-कृतस्य वह्ने

सद्बोधशतकम्

श्रेयसामेष पन्था ।

नीति-शृंगार-वैराग्य शतकनां त्रणसो गणातां पण वस्तुत हवे ४०० नी आसपास मळी आवतां श्लोकोमांथी भर्तृहरिना बोधनुं अमृत जेमां आवी गयु छे अेवा १०८ श्लोको अहीं तारवी काढ्या छे आमां आपणने वैरागी राजा भर्तृहरिनी निरामण अेवी मळी जाय ए एम कहेवाय

ॐ

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये ।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे ॥

वृत्त — अनुष्टुप्
पाठान्तर — २. स्वानुभूत्येकमानाय–स्वानुभूत्यकसाराय

१

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं, प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी, यशः सुखकरी, विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने, विद्या परं दैवतं,
विद्या राजसु पूजिता न तु धनं, विद्याविहीनः पशुः ॥

वृत्त — शार्दूलविक्रीडित
पाठान्तर — ४ राजसु पूजिता–राज-सुपूजिता

२

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं, हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः
न स्नानं, न विलेपनं, न कुसुमं, नालंकृता मूर्धजाः ।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥

वृत्त — शार्दूल°

३

रे रे चातक ! सावधानमनसा मित्र ! क्षणं श्रूयताम्
अम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः ।
केचिद्वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद्वृथा
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ॥

वृत्त — शार्दूल°

४

बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः, प्रभवः स्मयदूषिताः ।
अबोधोपहताश्चान्ये, जीर्णमङ्गे सुभाषितम् ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

५

चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चलं जीवितयौवनम् ।
चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चलः ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

पाठान्तर — १. चलं जीवितयौवनम्-चले जीवितयौवने.

६

वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं दुकूलैः
सम इह परितोषो, निर्विशेषो विशेषः ।
स तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला
मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः ॥

वृत्त — मालिनी.

७

अज्ञः सुखमाराध्यः, सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञान-लव-दुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति ॥

वृत — आर्या.

पाठान्तर — २. ब्रह्मापि नरं – ब्रह्मापि च तं नरं न रञ्जयति।
आ पाठ साथे वृत्त गीति थाय छे.

८

यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किंचित्किंचिद् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः॥

वृत्त — शिखरिणी

९

न कश्चिच्चण्डकोपानामात्मीयो नाम भूभुजाम्।
होतारमपि जुह्वानं स्पृष्टो दहति पावकः॥

वृत — अनुष्टुप्.

१०

लोभश्चेद्गुणेन किं? पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः?
सत्यं चेत्तपसा च किं? शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्?।
सौजन्यं यदि किं निजैः? स्वमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः?
सद्विद्या यदि किं धनैः? अपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना? ॥

वृत्त — शार्दूल॰
पाठान्तर — ३. किं निजैः–किं बलेन.

११

तृष्णां छिन्धि, भज क्षमां, जहि मदं, पापे रतिं माकृथाः,
सत्यं ब्रूह्यनुयाहि साधुपदवीं, सेवस्व विद्वज्जनम्।
मान्यान्मानय, विद्विषोऽप्यनुनय, प्रच्छादय स्वान् गुणान्
कीर्तिं पालय, दुःखिते कुरु दयां, पतत्सतां चेष्टितम्॥

वृत्त — शार्दूल॰
पाठान्तर — ४. चेष्टितम्–लक्षणम्.

१२

अम्भोजिनीवननिवासविलासमेव
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता ।
न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां
वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः ॥

वृत्त — वसंततिलका

१३

ददतु ददतु गालीर्गालिमन्तो भवन्तो
वयमपि तदभावाद्गालिदानेऽसमर्थाः ।
जगति विदितमेतद् 'दीयते विद्यमानं'
न हि शशकविषाणं कोऽपि कस्मै ददाति ॥

वृत्त — मालिनी

१४

राजन् ! दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनां
तेनाद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण ।
तस्मिंश्च सम्यगनिशं परिपोष्यमाणे
नानाफलैः फलति कल्पलतेव भूमिः ॥

वृत्त — वसंततिलका

१८

त्वमेव चातकाधार इति केषां न गोचरः।
किमम्भोदवरास्माकं कार्पण्योक्तिं प्रतीक्षसे॥

वृत्त — अनुष्टुप्

१६

संतप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न श्रूयते
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते।
स्वात्यां सागरशुक्तिमध्यपतितं तन्मौक्तिकं जायते
प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते॥

वृत्त — शार्दूल°

पाठान्तर — १. न श्रूयत–न ज्ञायत २. पत्रस्थित–पत्रे स्थित
३ तन्मौक्तिर–सन्मौक्तिक

१७

क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरा तेऽखिलाः
क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कृशानौ हुतः।
गन्तुं पावकमुन्मनस्तदभवद् दृष्ट्वा तु मित्रापदं
युक्तं तेन जलेन शाम्यति, सतां मैत्री
पुनस्त्वीदृशी॥

वृत्त — शार्दूल°

१८

'उत्तिष्ठ, क्षणमेकमुद्वह गुरुं दारिद्र्यभारं सखे !
'श्रान्तस्तावदहं चिरं मरणजं सेवे त्वदीयं सुखम्'।
इत्युक्तो धनवर्जितेन सहसा गत्वा स्मशाने शवो
दारिद्र्यान्मरणं वरं वरमिति ज्ञात्वैव तूर्ष्णीं स्थितः॥

वृत्त — शार्दूल°

१९

सिंहः शिशुरपि निपतति
मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।
प्रकृतिरियं सत्त्ववतां
न खलु वयस्तेजसो हेतुः ॥

वृत्त — आर्या

२०

यदचेतनोऽपि पादैः स्पृष्टः प्रज्वलति
सवितुरिनकान्तः ।
तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते ? ॥

वृत्त — आर्या

२१

यदि नाम दैवगत्या जगदसरोजं कदाचिदपि
जातम् ।
अवकरनिकरं विकिरति तत् किं कृकवाकुरिव
हंसः ? ॥

वृत्त — आर्या
पाठान्तर — कदाचिदपि जातम्-सदैव सजातम्.

२२

आरम्भगुर्वी, क्षयिणी क्रमेण,
लघ्वी पुरा, वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्ध-परार्ध-भिन्ना,
छायेव मैत्री खल-सज्जनानाम् ॥

वृत्त — उपजाति

२३

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा,
सदसि वाक्पटुता, युधि विक्रमः ।
यशसि चाभिरतिर्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥

वृत्त — द्रुतविलंबित

२५

करे श्लाघ्यस्त्यागः, शिरसि गुरुपादप्रणयिता,
मुखे सत्या वाणी, विजयि भुजयोर्वीर्यमतुलम्।
हृदि स्वच्छा वृत्तिः, श्रुतमधिगतं च श्रवणयोः,
विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम् ॥

वृत्त — शिखरिणी.

२६

पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् ।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति
सन्तः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

२७

क्वचिद्भूमौ शायी, क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनः
क्वचिच्छाकाहारी, क्वचिदपि च
शाल्योदनरुचिः ।
क्वचित्कंथाधारी, क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो
मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम् ॥

वृत्त — शिखरिणी

२८

अभिमुखनिहतस्य सतः
तिष्ठतु तावज्जयोऽथवा स्वर्गः ।
उभयबलसाधुवादः
श्रवणसुखोऽसौ व्रतात्यर्थम् ॥

वृत्त — आर्या

२९

गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्यमादौ
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते-
र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः॥

वृत्त — मालिनी

३०

जाड्यं धियो हरति, सिञ्चति वाचि सत्यं
मानोन्नतिं दिशति, पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति, दिक्षु तनोति कीर्तिम्,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ? ॥

वृत्त — वसन्ततिलका.

३१

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता, शौर्यस्य वाक्संयमो,
ज्ञानस्योपशम:, श्रुतस्य विनयो, वित्तस्य पात्रे
व्ययः ।
अक्रोधस्तपस., क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता,
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥

वृत्त — शार्दूल*

३२

वह्निस्तस्य जलायते,
जलनिधि: कुल्यायते तत्क्षणात्,
मेरुः स्वल्पशिलायते, मृगपति: सद्य. कुरंगायते, ।
व्यालो माल्यगुणायते, विषरसः पीयूषवर्षायते,
यस्यांगेऽखिललोकवल्लभतमं शीलं समुन्मीलति ॥

वृत्त — शार्दूल*

३३

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति देहम् ।
आयुः परिस्रवति भिन्नघटादिवाम्भो
लोकस्तथाप्यहितमाचरतीति चित्रम् ! ॥

वृत्त — वसततिलका

३४

पातालमाविशसि, यासि नभो विलङ्घ्य,
दिङ्मण्डलं भ्रमसि मानस! चापलेन, ।
भ्रान्त्यापि जातु विमलं कथमात्मनीनं
तद् ब्रह्म न स्मरसि निर्वृतिमेषि येन ॥

वृत्त — वसंततिलका.

पाठान्तर — १. °आत्मनीन–°आत्मलीन.

३५

अकिञ्चनस्य दान्तस्य शान्तस्य समचेतसः ।
सदा सन्तुष्टमनसः सर्वाः सुखमया दिशः ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

३६

मौनान्मूकः, प्रवचनपटुर्वातुलो जल्पको वा,
धृष्टः पार्श्वे वसति, च तथा दूरतश्चाप्रगल्भः ।
क्षान्त्या भीरुर्, यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः,
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥

वृत्त — मन्दाक्रान्ता.

३७

प्रिया न्याय्या वृत्तिर्, मलिनमसुभङ्गेऽप्यसुकरं,
असन्तो नाभ्यर्थ्याः, सुहृदपि न याच्यः कृशधन.।
विपद्युच्चैः स्थेयं, पदमनुविधेयं च महतां,
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ॥

वृत — शिखरिणी

३८

वहति भुवनश्रेणीं शेषः फणाफलकस्थितां
कमठपतिना मध्येपृष्ठं सदा स विधार्यते ।
तमपि कुरुते क्रोडाधीनं पयोधिरनादरात्
अहह ! महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः ॥

वृत — हरिणी

३९

प्रदानं प्रच्छन्नं, गृहमुपगते संभ्रमविधि .
प्रियं कृत्वा मौनं, सदसि कथनं चाप्युपकृतेः।
अनुत्सेको लक्ष्म्यां, निरभिभवसारा परकथा.,
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ?॥

वृत — शिखरिणी

क्षुत्क्षामोऽपि, जराकृशोऽपि,
शिथिलप्रायोऽपि, कष्टां दशां
आपन्नोऽपि, विपन्नदीधितिरपि,
प्राणेषु नश्यत्स्वपि ।
मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुंभकवलग्रासैकबद्धस्पृहः
किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी ? ॥
वृत्त — शार्दूल°

· ४१

क्षुद्राः सन्ति सहस्रशः स्वभरणव्यापारमात्रोद्यताः
स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमानेकः सतामग्रणीः।
दुष्पूरोदरपूरणाय पिबति स्रोतःपतिं वाडवो
जीमूतस्तु निदाघसंभृतजगत्संतापविच्छित्तये॥
वृत्त — शार्दूल°

४२

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥
वृत्त — मालिनी
पाठान्तर — १ प्रीणयन्त –पूरयन्त

४३

नम्रत्वेनोन्नमन्तः, परगुणकथनैः
स्वान् गुणान्ख्यापयन्तः,
स्वार्थान्संपादयन्तो विततपृथुतरारंभयत्नाःपरार्थे।
क्षान्त्यैवाक्षेपरूक्षाक्षरमुखरमुखान्दुर्मुखान्दूषयन्तः,
सन्त माश्चर्यचर्या जगति बहुमताः कस्य
नाभ्यर्चनीयाः॥

वृत्त — स्रग्धरा

४४

लज्जागुणौघजननीं जननीमिव स्वां
अत्यन्तशुद्धहृदयामनुवर्तमानाम् ।
तेजस्विनः सुखमसूनपि संत्यजन्ति
सत्यव्रतव्यसनिनो न पुनः प्रतिज्ञाम् ॥

वृत्त — वसततिलका

४५

किं कूर्मस्य भरव्यथा न वपुषि
क्ष्मां न क्षिपत्येष यत् ?
किं वा नास्ति परिश्रमो दिनपतेर्
आस्ते न यन्निश्चलः? ।
किं त्वङ्गीकृतमुत्सृजन् कृपणवत् श्लाघ्यो जनो
लज्जते
'निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु' सतामेतद्धि गोत्रव्रतम् ॥

वृत्त — शार्दूल°

४६

इतः स्वपिति केशवः, कुलमितस्तदीयद्विषां,
इतश्च शरणार्थिनः शिखरिणां गणाः शेरते।
इतोऽपि वडवानलः सह समस्तसंवर्तकैः,
अहोविततमूर्जितं भरसहं च सिंधोर्वपुः ॥

वृत्त — पृथ्वी.

४७

उदन्वच्छन्ना भूः, स च निधिरपां योजनशतं
सदा पान्थः पूषा गगनपरिमाणं कलयति।
इति प्रायो भावाः स्फुरदवधिमुद्रामुकुलिताः
सतां प्रज्ञोन्मेषः पुनरयमसीमा विजयते ॥

वृत्त — शिखरिणी

४८

एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
तेऽमी मानवराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये तु घ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥

वृत्त — शार्दूल •

४९

स्थाल्यां वैडूर्यमय्या पचति तिलखलीम्
इन्धनैश्चन्दनाद्यैः
सौवर्णैर्लाङ्गलाग्रैः विलिखति वसुधाम्
अर्कमूलस्य हेतोः ।
छित्वा कर्पूरखण्डान् वृतिमिह कुरुते
कोद्रवाणां समन्तात्
प्राप्येमां कर्मभूमिं न चरति मनुजो
यस्तपो मन्दभाग्यः ॥

वृत्त — स्रग्धरा

५०

किं तेन हेमगिरिणा, रजताद्रिणा वा
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवस्त एव ।
मन्यामहे मलयमेव, यदाश्रयेण
कंकोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः ॥

वृत्त — वसततिलका

५१

घरं पक्षच्छेदः समदमघवन्मुक्तकुलिश-
प्रहारैरुद्गच्छद्बहलदहनोद्गारगुरुभिः ।
तुषाराद्रेः सूनोः अहह! पितरि क्लेशविवशे
न चासौ संपातः पयसि पयसां पत्युरुचितः ॥

वृत्त — शिखरिणी

५२

ये संतोषसुखप्रबुद्धमनसस्तेषां न भिन्ना मुदो
ये त्वन्ये धनलोभसंकुलधियस्तेषां न तृष्णा हता।
इत्थं कस्य कृते कृतः स विधिना तादृक्पदं संपदां
स्वात्मन्येव समाप्तहेममहिमा मेरुर्न मे रोचते॥

वृत्त — शार्दूल

पाठान्तर — १ –य सन्तोषसुखप्रमादमुदितास्तेषामभिन्ना मुदो,
सुखप्रबुद्धमनसः –निरन्तरप्रमुदिता
२ तेषां न तृष्णा हता–तेषां तु दूरं नृणाम्।

५३

कृमिकुलचितं लालाक्लिन्नं विगन्धि जुगुप्सितं
निरुपमरसप्रीत्या खादन्नरास्थि निरामिषम्।
सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते
न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्॥

वृत्त — हरिणी

पाठान्तर — १ निरुपमरसप्रीत्या–निरुपमरस प्रीत्या

५४

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते
छेत्तुं वज्रमणीन् शिरीषकुसुमप्रान्तेन संनह्यते।
माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते
नेतुं वाञ्छति यः खलान्पथि सतां
सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः॥

वृत्त — शार्दूल

५५

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्
समुद्रमपि संतरेत्प्रचलदूर्मिमालाकुलम् ।
भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥

वृत्त — पृथ्वी

पाठान्तर — १ दंष्ट्रान्तरात्–दंष्ट्राङ्कुरात्

५६

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः ।
कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥

वृत्त — पृथ्वी

५७

तानीन्द्रियाणि सकलानि तदेव कर्म
सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव ।
अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव
त्वन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत् ॥

वृत्त — वसततिलका

६१

हर्तुर्याति न गोचरं, किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा
ह्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं
प्राप्नोति वृद्धिं पराम्।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं, विद्याख्यमन्तर्धनं
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते ?

वृत्त — शार्दूल°

६२

प्राणाघातान्निवृत्तिः, परधनहरणे संयमः,
सत्यवाक्यं,
काले शक्त्या प्रदानं,
युवति-जन-कथा-मूकभावः परेषाम् ।
तृष्णास्रोतोविभङ्गो, गुरुषु च विनयः,
सर्वभूतानुकंपा,
सामान्यः सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः,
श्रेयसामेष पन्था ॥

वृत्त — स्रग्धरा

क्षान्तिश्चेत्कवचेन किं? किमरिभिः क्रोधोऽस्ति
चेद्देहिनां ?
ज्ञातिश्चेदनलेन किं ? यदि सुहृद् दिव्यौषधैः
किं फलम ?
किं सर्पैः यदि दुर्जनाः ? किमु धनैर्विद्यानवद्या यदि?
व्रीडा चेत्किमु भूषणैः ?, सुकविता यद्यस्ति
राज्येन किम् ? ॥

वृत्त — शार्दूल॰

६४

वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये
महार्णवे पर्वतमस्तके वा ।
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा
रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ॥

वृत्त — उपजाति.

६५

या साधूंश्च खलान्करोति,
विदुषो मूर्खान्, हितान्द्वेषिणः,
प्रत्यक्षं कुरुते परोक्षम्, अमृतं हालाहलं तत्क्षणात् ।
तामाराधय सत्क्रियां भगवतीं भोक्तुं फलं वाञ्छितं
हे साधो!व्यसनैर्गुणेषु विपुलेष्वास्थां वृथा मा कृथाः॥

वृत्त — शार्दूल॰

यत्रानेके क्वचिदपि गृहे तत्र तिष्ठत्यथैको
यत्राप्येकस्तदनु बहवस्तत्र नैकोऽपि चान्ते ।
इत्थं चेमौ रजनिदिवसौ दोलयन् द्वाविवाक्षौ
कालः काल्या भुवनफलके क्रीडति प्राणिसारैः ॥

वृत्त — मन्दाक्रान्ता

६९

अजानन्दाहात्म्यं पततु शलभो दीपदहने
स मीनोऽप्यज्ञानाद्बडिशयुतमश्नातु पिशितम् ।
विजानन्तोऽप्येते वयमिह विपज्जालजटिलान्
न मुञ्चामः कामान् अहह! गहनो मोहमहिमा ॥

वृत्त — शिखरिणी

७०

यावत्स्वस्थमिदं शरीरमरुजं यावज्जरा दूरतो
यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो महान्
प्रोद्दीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः ॥

वृत्त — शार्दूल°

पाठान्तर — ४ प्रोद्दीप्ते-संदीप्ते

७१

फलमलमशनाय, स्वादु पानाय तोयं,
शयनमवनिपृष्ठं, वल्कले वाससी च ।
नवधनमधुपानभ्रान्तसर्वेन्द्रियाणां
अविनयमनुमन्तुं नोत्सहे दुर्जनानाम् ॥

वृत्त — मालिनी.

विपुलहृदयैर्धन्यैः कैश्चिज्जगज्जनितं पुरा,
विधृतमपरैर्, दत्तं चान्यैर्विजित्य तृणं यथा।
इह हि भुवनान्यन्ये धीराश्चतुर्दश भुञ्जते,
कतिपयपुरस्वाम्ये पुंसां क एष मदज्वरः॥

वृत्त — हरिणी
पाठान्तर — विपुल हृदयै — विपुलमतिभिः

७३

त्वं राजा, वयमप्युपासितगुरुप्रज्ञाभिमानोन्नता',
ख्यातस्त्वं विभवैर्, यशांसि कवयो
दिक्षु प्रतन्वन्ति नः।
इत्थं मानधनातिदूरमुभयोर् अप्यावयोरन्तरं
यद्यस्मासु पराङ्मुखोऽसि,
वयमप्येकांततो निस्पृहा॥

वृत्त — शार्दूल°
पाठान्तर — ३ मानधनाति° — मानद नाति°

७४

अभुक्तायां यस्यां क्षणमपि न यातं नृपशतैः
भुवस्तस्या लाभे क इव बहुमानः क्षितिभुजाम्।
तदंशस्याप्यंशे तदवयवलेशेऽपि पतयो
विषादे कर्तव्ये विदधति जडाः प्रत्युत मुदम्।

वृत्त — शिखरिणी

७५

मृत्पिण्डो जलरेखया वलयितः सर्वोऽप्ययं नन्वणुः
भागीकृत्य तमेव संयुगशतैः राज्ञां गणा भुञ्जते ।
तद्दद्युर्ददतेऽथवा न किमपि क्षुद्रा दरिद्रा भृशं
धिग्धिक्तान् पुरुषाधमान्धनकणं
वाञ्छन्ति तेभ्योऽपि ये ॥

वृत्त — शार्दूल°

७६

गंगातरंगहिमशीकरशीतलानि
विद्याधराध्युषितचारुशिलातलानि ।
स्थानानि किं हिमवतः प्रलयं गतानि
यत्सावमानपरपिण्डरता मनुष्याः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

पाठान्तर — १. °हिमशीकर° —°कणशीकर°

७७

ब्रह्माण्डमण्डलीमात्रं किं लोभाय मनस्विनः ।
शफरीस्फुरितेनाब्धेः क्षुब्धता जातु जायते ?

वृत्त — अनुष्टुप्.

पाठान्तर — २. जातु जायते ? — न तु जायते

स्वल्पं स्नायुवसावशेषमलिनं निर्मांसमप्यस्थिकं
श्वा लब्ध्वा परितोषमेति न तु तत्
तस्य क्षुधाशान्तये ।
सिंहो जम्बुकमङ्कमागतमपि त्यक्त्वा निहन्ति द्विपं
सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः
सत्त्वानुरूपं फलम् ॥

वृत्त — शार्दूल॰

७९

अमीषां प्राणानां तुलितबिसिनीपत्रपयसां
कृते किं नास्माभिर्विगलितविवेकैर्व्यवसितम् ।
यदाढ्यानामग्रे द्रविणमदनिःसंज्ञमनसां
कृत वीतव्रीडैर्निजगुणकथापातकमपि ॥

वृत्त — शिखरिणी

८०

परेषां चेतांसि प्रतिदिवसमाराध्य बहु हा
प्रसादं किं नेतु विशसि हृदय ! क्लेशकलिलम् ।
प्रसन्ने त्वय्येव स्वयमुदितचिंतामणिगुणे
विमुक्तः सकल्पः किमभिलषित पुष्यति न ते ॥

वृत्त — शिखरिणी

पाठान्तर — ३ त्वय्येव — त्वय्यन्त

८१

क्वचिद्वीणावाद्यं, क्वचिदपि च हाहेति रुदितं
क्वचिद्विद्वद्गोष्ठी, क्वचिदपि सुरामत्तकलहः ।
क्वचिद्रामा रम्याः, क्वचिदपि गलत्कुष्ठवपुषो,
न जाने संसारः किममृतमयः किं विषमयः ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — १. वीणावाद्य — वीणावादः

८२

समारम्भा भग्ना कति न कतिवारांस्तव पशो !
पिपासोस्तुच्छेऽस्मिन् द्रविणमृगतृष्णार्णवजले ।
तथापि प्रत्याशा विरमति न तेऽद्यापि शतधा
न दीर्णं यच्चेतो नियतमशनिग्रावघटितम ॥

वृत्त — शिखरिणी

८३

तपस्यन्तः सन्तः किमधिनिवसामः सुरनदीं
गुणोदारान् दारानुत परिचरामः सविनयम ।
पिबामः शास्त्रौघान्, उत विविधकाव्यामृतरसान्,
न विद्मः किं कुर्मः कतिपयनिमेषायुषि जने ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — १. सविनयम् — सविनयान्

८४

तुङ्गं वेश्म, सुताः सतामभिमताः,
संख्यातिगाः संपदः
कल्याणी दयिता, वयश्च नवमित्यज्ञानमूढो जनः ।
मत्वा विश्वमनश्वरं निविशते संसारकारागृहे;
संदृश्य क्षणभंगुरं तदखिलं धन्यस्तु संन्यस्यति ॥

वृत्त — शार्दूल°

८५

यद्वक्त्रं मुहुरीक्षसे न धनिनां, ब्रूषे न चाटुं मृषा,
नैषां गर्वगिरः शृणोषि, न पुनः
प्रत्याशया धावसि ।
काले बालतृणानि खादसि, सुखं
निद्रासि निद्रागमे,
तन्मे ब्रूहि कुरंग ! कुत्र भवता किं नाम तप्तं तपः ॥

वृत्त — शार्दूल°

८८

धन्यानां गिरिकन्दरे निवसतां
ज्योतिः परं ध्यायतां
आनन्दाश्रुजलं पिबन्ति शकुना निःशङ्कमङ्केशयाः।
अस्माकं तु मनोरथोपरचितप्रासादवापीतट-
क्रीडाकाननकेलिकौतुकजुषाम् आयुः परिक्षीयते ॥

वृत्त — शार्दूल॰

८९

अहौ वा हारे वा बलवति रिपौ वा सुहृदि वा
मणौ वा लोष्ठे वा कुसुमशयने वा दृषदि वा।
तृणे वा स्त्रैणे वा मम समदृशो यान्ति दिवसाः
क्वचित्पुण्यारण्ये शिव शिव शिवेति प्रलपतः ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — ३ यान्ति – यान्तु ।

९०

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः
वियोगे को भेदस्त्यजति न जनो यत्स्वयममून्।
व्रजन्तः स्वातंत्र्यादतुलपरितापाय मनसः
स्वयं त्यक्त्वा ह्येते शमसुखमनन्तं विदधति ॥

वृत्त — शिखरिणी

८६

किं कन्दाः कन्दरेभ्यः प्रलयमुपगता,
निर्झरा वा गिरिभ्यः
प्रध्वस्ता वा तरुभ्यः सरसफलभृतो
वल्कलिन्यश्च शाखाः ।
वीक्ष्यन्ते यन्मुखानि प्रसभमपगतप्रश्रयाणां खलानां
दुःखोपात्ताल्पवित्तस्मयवशपवनानर्तितभ्रूलतानि ॥

वृत्त — स्रग्धरा

८७

गंगातीरे हिमगिरिशिलाबद्धपद्मासनस्य
ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिना योगनिद्रां गतस्य ।
किं तैर्भाव्यं मम सुदिवसैर्यत्र ते निर्विशङ्काः
सम्प्राप्स्यन्ते जरठहरिणाः शृङ्गकण्डूविनोदम् ॥

वृत्त — मन्दाक्रान्ता

पाठान्तर — ४. — कण्डूयन्ते जरठहरिणा स्वाङ्गमङ्गे मदीये,
अथवा *शृङ्गमङ्गे मदीये ।

८८

धन्यानां गिरिकन्दरे निवसतां
ज्योतिः परं ध्यायतां
आनन्दाश्रुजलं पिबन्ति शकुना निःशङ्कमङ्केशयाः।
अस्माकं तु मनोरथोपरचितप्रासादवापीतट-
क्रीडाकाननकेलिकौतुकजुषाम् आयुः परिक्षीयते॥

वृत्त — शार्दूल॰

८९

अहौ वा हारे वा बलवति रिपौ वा सुहृदि वा
मणौ वा लोष्ठे वा कुसुमशयने वा दृषदि वा।
तृणे वा स्त्रैणे वा मम समदृशो यान्ति दिवसाः
क्वचित्पुण्यारण्ये शिव शिव शिवेति प्रलपतः॥

वृत्त — शिखरिणी.
पाठान्तर — ३ यान्ति – यान्तु ।

९०

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः
वियोगे को भेदस्त्यजति न जनो यत्स्वयममून्।
व्रजन्तः स्वातंत्र्यादतुलपरितापाय मनसः
स्वयं त्यक्त्वा ह्येते शमसुखमनन्तं विदधति॥

वृत्त — शिखरिणी

९१

कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी ।
तथापि सुधिया भाव्यं सुविचार्यैव कुर्वता ॥

वृत्त — अनुष्टुप्
पाठान्तर — १ तथापि – तस्माद्धि ।

९२

नमस्यामो देवान्,ननु हतविधेस्तेऽपि वशगाः;
विधिर्वन्द्यः, सोऽपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः ।
फलं कर्मायत्तं, किममरगणैः, किं च विधिना,
नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति ॥

वृत्त — शिखरिणी

९३

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे ।
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने, तस्मै नमः कर्मणे ॥

वृत्त — शार्दूल॰

९४

खलोल्लापाः सोढा कथमपि तदाराधनपरै ,
निगृह्यान्तर्बाष्पं हसितमपि शून्येन मनसा ।
कृतश्चित्तस्तम्भ , प्रतिहतधियामञ्जलिरपि ,
त्वमाशे मोघाशे किमु परमतो नर्तयसि माम् ॥

वृत्त — शिखरिणी

पाठान्तर — ४ किमुपरमता – किमपरमता ।

९५

दीना दीनमुखैः सदैव शिशुकैराकृष्टजीर्णाम्बरा
क्रोशद्भिः क्षुधितैर्नरैर्न विधुरा दृश्येत चेद्गेहिनी।
याच्ञाभङ्गभयेन गद्गदगलत्त्रुट्यद्विलीनाक्षरं
को देहीति वदेत्स्वदग्धजठरस्यार्थे मनस्वी जन ॥

९७

ब्रह्मज्ञानविवेकिनोऽमलधियः कुर्वन्त्यहो दुष्करं
यन्मुञ्चन्त्युपभोगवन्त्यपि धनान्येकान्ततो निःस्पृहाः।
न प्राप्तानि पुरा न संप्रति न च प्राप्तौ दृढप्रत्ययो
वाञ्छामात्रपरिग्रहाण्यपि परं
त्यक्तुं न शक्ता वयम् ॥

वृत्त — शार्दूल°

पाठान्तर — १. °विवेकिनोऽमलधिय.—°विवेकनिर्मलधियः
२. यन्मुञ्चन्त्युपभोगवन्त्यपि धना° — यन्मुञ्च-
न्त्युपभोगकाञ्चनधना°

९८

इयत्येतस्मिन्वा निरवधिचमत्कृत्यतिशये
वराहो वा राहुः प्रभवति चमत्कारविषयः।
महीमेको मग्नां यदयमवहद्दन्तसलिलैः
शिरःशेषः शत्रुं निगिलति परं संत्यजति च ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — ३. दन्तसलिलैः—°दन्तमुकुलैः। केटलाक
'दन्तमलिले' पाठ सूचवे छे

पातालान्न विमोचितो बत बली,
नीतो न मृत्युः क्षयं,
नो मृष्टं शशलाञ्छनं च मलिनं,
नोन्मूलिता व्याधयः ।
शेषस्यापि धरां विधृत्य न कृतो भारावतारः क्षणं,
चेतः सत्पुरुषाभिमानगणनां मिथ्या वहँल्लज्जसे ॥

वृत्त — शार्दूल॰

पाठान्तर — ४. वहँल्लसे — दहन् खिद्यसे

१००

जातः कूर्मः स एकः पृथुभुवनभरायार्पितं येन पृष्ठं
श्लाघ्यं जन्म ध्रुवस्य भ्रमति नियमितं
यत्र तेजस्विचक्रम् ।
संजातव्यर्थपक्षाः परहितकरणे नोपरिष्टान्न चाधो
ब्रह्माण्डोदुंबरान्तर्मशकवदपरे प्राणिनो जातनष्टाः ॥

वृत्त — स्रग्धरा

१०१

विरम विरसायासादस्माद्दुरध्यवसायतो
विपदि महतां धैर्यध्वंसं यदीक्षितुमीहसे ।
अयि जडमते ! कल्पापाये व्यपेतनिजक्रमाः
कुलशिखरिणः क्षुद्रा नैते न वा जलराशयः ॥

वृत्त — हरिणी.

१०२

प्रशान्तशास्त्रार्थविचारचापलं
निवृत्तनानारसकाव्यकौतुकम् ।
निरस्तनिःशेषविकल्पविस्तरं
प्रपत्तुमन्विच्छति शांकरं मनः ॥

वृत्त — वंशस्थ.

१०३

वितीर्णे सर्वस्वे तरुणकरुणापूर्णहृदयाः
स्मरन्तः संसारे विगुणपरिणामा विधिगतीः ।
वयं पुण्यारण्ये परिणतशरच्चन्द्रकिरणां
त्रियामां नेष्यामो हरचरणचिन्तैकशरणाः ॥

वृत्त — शिखरिणी

पाठान्तर — २. विगुणपरिणामा विधिगतीः — विरसपरिणामां विधिगतिम् ।

१०४

किं वेदैः स्मृतिभिः पुराणपठनैः शास्त्रैर्महाविस्तरैः
स्वर्गग्रामकुटीनिवासफलदैः कर्मक्रियाविभ्रमैः ।
मुक्त्वैकं भवबन्धदुःखरचनाविध्वंसकालानलं
स्वात्मानन्दपदप्रवेशकलनं शेषा वणिग्वृत्तयः ॥

वृत्त — शार्दूल°

१०५

चाण्डालः किमयं द्विजातिरथवा
शूद्रोऽथ किं तापसः
किं वा तत्त्वविवेकपेशलमतिर्
योगीश्वरः कोऽपि किम् ।
इत्युत्पन्नविकल्पजल्पमुखरैः संभाष्यमाना जनैः
न क्रुद्धाः पथि नैव तुष्टमनसो
यान्ति स्वयं योगिनः ॥

वृत्त — शार्दूल°

१०६

यदासीदज्ञानं स्मरतिमिरसंस्कारजनितं
तदा दृष्टं नारीमयमिदमशेषं जगदपि ।
इदानीमस्माकं पटुतरविवेकांजनजुषां
समीभूता दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — २. जगदपि-जगदिति

१०७

भोगा भंगुरवृत्तयो बहुविधास्तैरेव चायं भवः
तत्कस्येह कृते परिभ्रमत रे लोकाः ! कृतं चेष्टितैः ।
आशापाशशतोपशान्तिविशदं चेतः समाधीयतां
कामोच्छित्तिवशे स्वधामनि यदि श्रद्धेयमस्मद्वचः॥

वृत्त — शार्दूल॰

१०८

मातर्मेदिनि, तात मारुत, सखे तेजः, सुबन्धो जल,
भ्रातर्व्योम, निबद्ध एव भवतामेष प्रणामाञ्जलिः ।
युष्मत्संगवशोपजातसुकृतोद्रेकस्फुरन्निर्मल-
ज्ञानापास्तसमस्तमोहमहिमा लीये परे ब्रह्मणि ॥

वृत्त — शार्दूल॰

पाठान्तर — २. एष भवतामेष प्रणामाञ्जलिः –
एष भवतामन्त्यः प्रणामाञ्जलिः ।

प्रकीर्णश्लोकाः

१०९

शैय्या शैलशिला, गृहं गिरिगुहा,
वस्त्रं तरूणां त्वचः
सारङ्गाः सुहृदो, ननु क्षितिरुहां वृत्तिः फलैः कोमलैः
येषां नैर्झरमम्बुपानमुचितं, रत्यै च विद्याङ्गना,
मन्ये ते परमेश्वराः शिरसि यैर्बद्धो न सेवाञ्जलिः॥

वृत्त — शार्दूल॰

११०

न संसारोत्पन्नं चरितमनुपश्यामि कुशलं
विपाकः पुण्यानां जनयति भयं मे विमृशतः।
महद्भिः पुण्यौघैश्चिरपरिगृहीताश्च विषया
महान्तो जायन्ते व्यसनमिव दातुं विषयिणाम्॥

वृत्त — शिखरिणी.

१११

आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयते जीवितं
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः कालो न विज्ञायते।
दृष्ट्वा जन्मजराविपत्तिमरणं त्रासश्च नोत्पद्यते
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत्॥

वृत्त — शार्दूल°

११२

क्षणं बालो भूत्वा, क्षणमपि युवा कामरसिकः,
क्षणं वित्तैर्हीनः, क्षणमपि च संपूर्णविभवः।
जराजीर्णैरङ्गैर्नट इव वलीमण्डिततनुः,
नरः संसारान्ते विशति यमधानीजवनिकाम्॥

वृत्त — शिखरिणी

प्रियसख[1] विपद्दण्डव्रातप्रपातपरम्परा-
परिचयचले चिन्ताचक्रे निधाय विधि खल ।
मृदमिव बलात्पिण्डीकृत्य प्रगल्भकुलालवत्
भ्रमयति मनो नो जानीमो किमत्र विधास्यति॥

वृत्त — हरिणी

११४

माने म्लायति, खण्डिते च वसुनि,
व्यर्थे प्रयातेऽर्थिनि,
क्षीणे बन्धुजने, गते परिजने, नष्टे शनैर्यौवने ।
युक्तं केवलमेतदेव सुधियां यज्जह्नुकन्यापय-
पूतग्रावगिरीन्द्रकन्दरतटीकुञ्जे निवास क्वचित्॥

वृत्त — शार्दूल°
पाठान्तर — ४ तटीकुञ्जे — दरीकुञ्ज

११५

अभिमतमहामानग्रन्थिप्रभेदपटीयसी
गुरुतरगुणग्रामाम्भोजस्फुटोज्ज्वलचन्द्रिका ।
विपुलविलसल्लज्जावल्लीविदारकुठारिका
जठरपिठरी दुष्पूरेयं करोति विडम्बनम् ॥

वृत्त — हरिणी

११६

ज्ञानं सतां मानमदादिनाशनम्
केषांचिदेतन्मदमानकारणम् ।
स्थानं विविक्तं यमिनां विमुक्तये
कामातुराणामतिकामकारणम् ॥

वृत्त — वंशस्थ

११७

सिंहो बली द्विरदशूकरमांसभोजी
संवत्सरेण रतिमेति किलैकवारम् ।
पारावतः खरशिलाकणमात्रभोजी
कामी भवत्यनुदिनं वद कोऽत्र हेतुः ॥

वृत्त — वसंततिलका

११८

कृशः काणः खञ्जः श्रवणरहितः पुच्छविकलः
व्रणी पूयक्लिन्नः कृमिकुलशतैरावृततनुः ।
क्षुधाक्षामो जीर्णः पिठरककपालार्पितगलः
शुनीमन्वेति श्वा हतमपि च हन्त्येव मदनः ॥

वृत्त — शिखरिणी

कान्ताकटाक्षविशिखा न लुनन्ति यस्य
चित्तं न निर्दहति कोपकृशानुतापः ।
कर्षन्ति भूरिविषयाश्च न लोभपाशैः
लोकत्रयं जयति कृत्स्नमिदं स धीरः ।।

वृत्त — वसंततिलका
पाठान्तर — १ लुनन्ति यस्य — खनन्ति यस्य.

मुक्तिसुधा

भर्तृहरिनां वचनो आपणा देशमा चलणी नाणानी पेठे वपराय छे बधा ज प्रांतमा भर्तृहरिनो सरखो प्रचार होवाथी अने एनी विचारशैली बधे ज सरखी मान्य होवाथी, एक रीत प्रजाकीय सास्कृतिक एकता साधवामा आ वचनोनो फाळो मोटो अने कीमती नीवड्यो छे

संस्कारी लोकोना भाषणोमा अने लखाणोमां आ वचनो अवारनवार आवकार्य ज राष्ट्रीय केळवणीमां आ वचनोने अवश्य स्थान होवु जोईए. युवानो आ वचनो कठस्थ करे ए जरूरनु छे. केम के ए कहेवत पेठ वपराय छे अने एमाथी ज आपणी सभ्यता विकसी छे

सुकविता यद्यस्ति, राज्येन किम ?

*

व्रीडा चेत् किमु भूषण· ?

*

पिशुनता यद्यस्ति, किं पातकैः ?

*

किं सर्पैर्यदि दुर्जनाः ?

*

क्षान्तिश्चेत् कवचेन किम ?

*

शुचि मनो यद्यस्ति, तीर्थेन किम् ?

*

अपयशो यद्यस्ति, किं मृत्युना ?

*

ज्ञातिश्चेत् अनलेन किम् ?

*

सत्यं चेत्, तपसा च किम् ?

*

कल्प स्थितं तनुभृतां तनुभिस्तत किम् ?

*

प्रस्तं न किं केन वा ?

*

सद्दीसे भवने तु कूपखनन प्रत्युद्यमः कीदृशः ?

*

निपुणता का ? धर्मतत्त्वे रति ।

*

का हानिः ? समयच्युतिः ।

*

राज्यं किं ? आज्ञाफलम् ।

*

कः शूरः ? विजितेन्द्रियः ।

*

सेवस्व विद्वज्जनम् ।

*

जहि मदम् ।

*

मान्यान्मानय ।

*

दुःखिते कुरु दयाम् ।

*

प्रच्छादय स्वान् गुणान् ।

*

विद्विषोऽप्यनुनय ।

*

पापे रतिं मा कृथाः ।

*

मोहं मार्जय ।

*

शान्तं भावमुपैहि ।

*

चेतः ! प्रसीदाधुना ।

*

विद्या परं दैवतम् ।

*

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने ।

*

विभूषणं मौनमपंडितानाम्

*

कवयो ह्यर्थे विनापीश्वराः ।

*

मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ।

*

विद्याविहीनः पशुः ।

*

'प्रियं कृत्वा मौनं' पुरुषमभिजातं कथयति ।

*

नास्त्युद्यमसमो बंधुः ।

*

शीलं परं भूषणम् ।

*

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता ।

*

शौर्यस्य वाक्संयमः (विभूषणम्) ।

*

न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः ।

*

न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।

*

यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ।

*

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः ।

*

भोक्तुं न मोक्तुं क्षमाः ।

*

दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति ।

*

वचो हि सत्यं परमं विभूषणम् ।

*

न खलु वयस्तेजसो हेतुः ।

*

बलवान् कालः कृतान्तोऽक्षमी ।

*

कालाय तस्मै नमः ।

*

नहि शशक-विषाणं कोऽपि कस्मै ददाति ।

*

अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः ।

*

तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत् ।

*

हृदि स्वच्छा वृत्तिः ।

*

विपत्सु स्थैर्यम् ।

*

अविनयमनुमन्तुं नोत्सहे दुर्जनानाम् ।

*

सन्तः साश्चर्यचर्याः ।

*

संसारे रे मनुष्याः! वदत यदि सुखं
स्वल्पमप्यस्ति किंचित्।

*

भोगे रोगभयम्।

*

गुणे खलभयम्।

*

वित्ते नृपालाद्भयम्।

*

शास्त्रे वादभयम्।

*

आघ्रातं मरणेन जन्म।

*

अस्थैर्येण विभूतयोऽप्युपहताः।

*

कथमहो मोहाग्र लज्जामहे!

*

वैराग्यमेवाभयम्।

*

तृष्णा न जीर्णा, वयमेव जीर्णाः।

*

स नु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला।

*

वयमप्येकान्ततो निस्पृहा: ।

*

तल्पमस्वल्पमुर्वी ।

*

मन्तो वनान्त गता: ।

*

मही रम्या शय्या ।

*

विपुलमुपधानं भुजलता ।

*

योगी सुखं तिष्ठति ।

*

आयुः कल्लोललोलम् ।

*

धर्म एको हि निश्चलः ।

*

बहुतृणं विश्वं मुहुः पश्यताम् ।

*

संत्यज निजां कल्लोललोलां गतिम् ।

*

लीये परे ब्रह्मणि ।

*

जीर्णमंगे सुभाषितम् ।

*

मौ क्ति का ञ्ज लिः

वाग्भूषण भूषणम्

'सूक्तिसुधा' करता जरा मागो अने अर्थगभीर एवा वचनानी अहीं अञ्जली धरी छे एनो हार बनावी कंठमा धारण करवाथी अनेक आपत्तिने वरात सदुपाय सूझे छे

मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्।

*

संतः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः ।

*

सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ।

*

मन्ये ते परमेश्वराः शिरसि यैर्बद्धो न सेवांजलिः।

*

न जाने संसारः किममृतमयः किं विषमयः ।

*

प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति विपर्यस्यति जनः ।

*

पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूत जगत् ।

*

नीचस्य गोचरगतैः सुखमास्यते कः ?

*

न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् ।

*

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः ।

*

नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा,
सूर्यस्य किं दूषणम् ?

*

कुतस्याः स्यु. कुपरीक्षका, न मणयो
यैरर्घतः पातिताः ।

*

पद्म नैव यदा करीरविटपे, दोषो वसन्तस्य किम् ?

*

लक्ष्मीर्यत्र, पतन्ति तत्र विवृतद्वारा इव व्यापदः ।

*

काल· काल्या भुवनफलके क्रीडति प्राणिसारैः ।

*

तत्किं नाम निरंकुशेन विधिना यन्निर्मित सुस्थितम्?

*

को देहीति वदेत्स्वदग्धजठरस्यार्थे मनस्वी जनः?

*

सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वांछति जन सत्वानुरूप फलम्।

*

किं जीर्णे तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी ?

*

होतारमपि जुह्वानं स्पृष्टो दहति पावकः ।

*

तत्को नाम गुणो भवेत्स गुणिनां यो दुर्जनैर्नाकितः?

*

अवस्था वस्तूनि प्रथयति च सकोचयति च ।

*

वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।

*

तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान् (पण्डितान्) संरुणद्धि।
न भवति बिसतन्तुर्वारणं वारणानाम् ॥

*

अहह। महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः।

*

प्रकृत्यांतेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनम्।

*

अधोमुखस्यापि तनूनपातः
नाधः शिखा याति कदाचिदेव।

*

स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमान्
एकः सतामग्रणीः।

*

प्राप्येमां कर्मभूमिं न चरति मनुजो
यस्तपो मन्दभाग्यः।

*

वयमस्मात् पराङ्मुखोऽसि, वयमप्येवाग्ततो
निस्पृहा।

*

सखे नान्यच्छ्रेयो जगति विदुषोऽन्यत्र तपसः।

*

सर्वं वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम्।

*

धनं वा गेहं वा सदृशमुपशान्तैकमनसाम्।

*

चेतःसद्मनि योगिनां विजयते ज्ञानप्रदीपो हरः।

*

साहित्यसंगीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

*

सतां प्रज्ञोन्मेषः पुनरयमसीमा विजयते।

*

ज्ञानं सतां मानमदादिनाशनं
केषांचिदेतन्मदमानकारणम्।

*

कलाशेषश्चन्द्रः, शरदि सरितः श्यानपुलिनाः।
तनिम्ना शोभन्ते गलितविभवाश्चार्थिषु जनाः॥

*

कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो
गृह्णाति तुल्यं जलम्।

*

तद्धीरो भव, वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथाः॥

*

सर्वाशापरिपूरके जलधरे वर्षत्यपि प्रत्यह ।
सूक्ष्मा एव पतन्ति चातकमुखे द्वित्रा पयोबिन्दव ॥

*

भोग कोऽपि स एक एव परमो
नित्योदितो जृम्भते ।

*

यत्स्वादाद्विरसा भवन्ति विषया
त्रैलोक्य राज्यादय ॥

*

को वा वीचिषु बुद्बुदेषु च तडिल्लेखासु च
स्त्रीषु च ।
ज्वालाग्रेषु च पन्नगेषु च सरिद्वेगेषु च प्रत्यय ॥

*

पुरा विद्वत्तासीदुपशमवता क्लेशहतये ।
गता कालेनासौ विषयसुखसिद्धयै विषयिणाम् ॥

*

नृभि प्राणत्राणप्रवणमतिभि कैश्चिदधुना ।
नमद्भि क पुसामयमतुल्दर्पज्वरभर ?

*

स तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला।
मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्र ॥

टिप्पण

नक्षत्रमाळा

१

विद्या — विद्–जाणवु

तपस् — तपश्चर्या एवु कठण काम के जे करवाथी शक्तिओ वधे शारीरिक, वाचिक, मानसिक, तथा आत्मिक शक्तिओ जे कर्म वडे वधे छे तेने तपस् कहे छे

[तपथी शक्तिओ वधे छे, ज्यारे भोगथी ते घटे छे क्रोध के द्वेषथी पण तप क्षीण थाय छे]

अन्वय — मर्त्यलोके चरन्ति ।

२

साहित्य — (१) विचारोना वाहन तरीके भाषानी केळवणीनु शास्त्र आने व्युत्पत्ति पण कहे छे (२) भाषाना अभिजात ग्रथराशिने पण साहित्य कहे छे. 'वाङ्मय,' अने 'सारस्वत' ए बे शब्दो आ ज अर्थना छे.

कला — मूगो माणस पण जेमो पामी शके ते कला–एवी एक मजानी व्याख्या शुक्रनीतिमां आपेली छे

विषाण — शींगडु

भागधेयम् — भाग्य, सद्भाग्य.

सरलार्थो : धर्मेण हीना पशुभिस्समाना ।

३

य (उद्यम) कृत्वा (नर) न अवसीदति ।
उद्योग करवाथी माणस पडतो नथी, तेनो नाश थतो नथी

शत्रु बहारनो होय तो तेनाथी नासी जवाय, पण रोगनी पेठे शरीरमा ज बेठो होय तो एनो समूळगो नाश न करीए तो ते आपणो सर्वनाश जरूर करवानो

सरखावो उद्योगिन पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी ।

४

मूळ श्लोकमां 'को न याति वश लोके' एवो पाठ हतो पण कवि तो नीच लोको विषे ज कहेवा मागे छे शीलवान पुरुषो लाचने वश थता नथी जे मृदग (माटीना ब्गराळा) होय ते ज 'लोट' मळवाथी मीठुमीठु बोले छे

पिण्ड — भातनो के लोटनो गोळो, खावानु लाच

५

ज्या प्रेम होय छे त्यां स्व पर एवो भेद होतो नथी, त्या 'मारु तारु' कोई वस्तु नथी स्वार्थ के मत्सर वचमां आव्यो के तरत ज जुदाई शरू थाय छे

अधुना — अहुणा हमणां

६

यः (वित्त) न ददाति न वा भुंक्ते तस्य (वित्तस्य) तृतीया गतिः (नाशः) भवति ।

लोभथी अने कंजूसाईथी धननो संग्रह करवामां कशो लाभ नथी. सोमनाथना मंदिरनी संपत्ति जेम लूंटाई तेम तेनो नाश ज थवानो. सरखावो :

कृपणेन समो दाता भुवि कोऽपि न विद्यते ।
अस्पृशन्नेव वित्तानि यः परेभ्यः प्रयच्छति ॥

— व्यास

७

परिचर् — सेवा करवी.

स्वैरकथाः — सहेजमां बोलेलां वचनो.

पाठान्तर — २. ते न उपदेशम्–नो सदुपदेशम् ।

८

अंबरखण्ड —(१) वस्त्रनो ककडो, धोतियुं.
(२) आकाशनो भाग.

संवीत. — सव्ये–टारवुं, लपेटवुं, वींटाळवुं

चन्द्रमाः — चन्द्रमस् नुं प्रथमा एकवचन.

दौर्गत्यं — कफोडी दशा, दुर्गति.

पौर्णिमानी राते जे आकाशमां चंद्र कर्यो टेमां ज बीजे दिवसे सूरजने करतो जोई, कविने थयुं के बे वच्चे एक ज धोतियुं छे. एके उतार्युं ते बीजो पहेरे छे !

११

परिवर्तिन् — फरनार, चक्डोळनी पेठे भमनार.

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।

— गीता

ते ज जन्मेलो कहेवाय के जेना जन्म्याथी एटले के पुरुषार्थ वडे वंशनी उन्नति थाय छे

वंश — कुळ, खानदान, कोम, जाति.

१२

वरं — मनाक् प्रियम्। वधारे सारुं, बहेतर.

दुर्गम् — दुःखेन गम्यते यत्र । कठण जग्या, पहाड, किल्लो वगेरे

भ्रान्तं — भटकवुं रखडपट्टी

वनचर — जंगली पशुओ, जानवरो.

वनेचर — जगलमां वसनारा भील वगेरे माणसो.

'मूर्ख'ने ठेकाणे 'नीच' अथवा 'दुष्ट' पण वापरी शकाय

१३

स्तवक — गुच्छो, गोटो

मनस्विन् — तेजदार माणस, पराक्रमी, पुरुषार्थी, स्वाभिमान धरावनार

सरखावो : नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा

मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि । — भवभूति.

पाठान्तरमां मनास्विनमूने ठेकाणे मनस्विनाम् जोईए.

समुद्रमथन वखते जे चौद रत्नो नीकळ्यां, तेमा हालाहल विष पण नीकळ्यु. छतां अमृत मळे नहीं त्यां सुधी देवदानवोए मथन बंध राख्यु नहि

कोई पण महान प्रयत्नने अंगे शरुआतथी ज अल्प लाभ अने महाकष्टो आवे छे अल्प फळोनो स्वीकार करवाथी तेटली तपस्या घटी जाय छे, अने महाफळ दूर दूर जाय छे

१७

आज्ञा — हकूमत, सत्ता.

ब्राह्मणानाम् — ब्राह्मणादीनां सर्ववर्णानाम् । धर्मपराणां विदुषां वा । आने ठेकाणे 'सज्जनाना' के 'दुर्बलानां' एवु मूकवुं ?

सत्ता, कीर्ति वगेरे छ लाभ (गुण) जो न थाय तो राजानो आश्रय करवामां शो सार ?

न प्रवृत्ताः — प्राप्त थता नथी, सधाता नथी.

१८

मोटा मोटा नागोना माथा पर एक मणि होय छे अने रात्रे तेनो प्रकाश चारे तरफ पडे छे, एवी एक मान्यता लोकोमां चालती आवेली छे मणिमां अनेक सारा गुणो होय छे, पण सर्प तो भयंकर ज होय छे दुष्ट माणस विद्वान के हुन्नरी होय तो ते वधारे भयंकर नीवडे छे.

१९

उत्पल — कमळ   उत्पलकोमल — कमळ जेवु कोमळ

महा (मोटा) शैल (पर्वत)नी शिलाना संघात (समूह) जेवु कर्कश (कठोर, मजबूत, अडग)

विपदि धैर्यम् । अथ अभ्युदये क्षमा ।

वैभव होय त्यारे मोटा लोको बीजानां दुःख जोईं कोमळ थाय छे तेमनु हृदय झट पीगळी जाय छे पण ज्यारे तेमना उपर विपत्ति आवी पडे छे त्यारे तेओ पोताना प्रत्ये कठोर थाय छे, कष्ट वेठतां डगता नथी, शील छोडता नथी

२०

नीति — सदाचार, व्यवहारकुशळता, कुटिलता, दावपेच एम विविध अर्थमां आ शब्द वपराय छे

नीतिनिपुणा — चतुर मुत्सद्दीओ

लक्ष्मी — संपत्ति, वैभव

धीर — विचारवान, डाह्यो धी (बुद्धि) चलावनार ते धीर

'चार लोको कहे तेम चालवु,' 'नुकसान न थाय एटलु सारा जोवु,' 'पोताने बचावीने बने तो बीजानु भलु करवु,' एम माननारा आजे घणा थया छे तेथी ज आजनो जमानो हलको थयो छे 'जे नेक देखाय

२३

सारो स्नेही शुं शुं करे छे ते आ श्लोकमां वर्णव्युं छे.

मित्रम् — स्नेही.

गुह्यं — गुप्त राखवा योग्य वात.

काले — संकट समये, अणीने वखते.

न जहाति — छोडतो नथी

२४

उपचीयते — वधे छे.

विमृशन्तः — विचार करवावाळा.

विपदः — विपत्तिथी.

मूंझाता नथी केमके विपत्ति टकवानी नथी.

२५

कन्दुकः — दडो.

करावातैः — कर एटले हाथ, एना आघातोथी.

पातितः — पाडेलो

उत्पतति एव — जरूर ऊछळे छे.

वृत्त — (१) शील, चारित्र्य, (२) गोळ.

साधुवृत्त — (१) सज्जन, (२) गोळ दडो.

स्थायिन् — कायम टकनार.

अस्थायिन् — न टकनार.

टिप्पण

सद्बोधशतकम्

मंगलाचरण

दिक्कालाद्यनवच्छिन्न — दिशा, काळ इत्यादिथी अमर्यादित; स्थळकाळ वगेरेथी पर.

चिन्मात्रमूर्ति — चिन्मात्रं मूर्तिः यस्य । केवळ (शुद्ध) ज्ञान ए ज जेनुं स्वरूप छे ते.

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म । — तैत्तिरीयोपनिषद्

स्वानुभूत्येकमानाय — स्वानुभूतिः एव एकं मानं प्रमाणं ज्ञानसाधनं यस्य सः तस्मै । स्वानुभूति आत्मसाक्षात्कार ए ज जेने जाणवानुं एक साधन छे तेने.

१

प्रच्छन्न — गुप्त, गूढ.

गुप्त - रक्षाएलुं, सुरक्षित

संस्कृत साहित्यमां विद्यानी प्रशस्ति अनेक रीते थयेली छे:

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।

सा विद्या या विमुक्तये ।

विद्याविहीनः पशुः — सरखावोः

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः ।

आ श्लोकमां घणा रूपको होवाथी अलंकार मालारूपक थाय छे.

मूर्धजा — मूर्ध्नि जाता मूर्धजा । माथाना वाळ
(मूर्धन्-माथु, जन्-जन्मवु, पेदा थवु)

संस्कृता (वाणी) — शास्त्रसंस्कारयुक्ता शब्दार्थदोषरहिता च । गीतामां तेनुं वर्णन आम थयुं छे.

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।

वाग्भूषणं भूषणम् — सरखावो

कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं कीर्तिं सूते दुष्कृतं या हिनस्ति ।
तां चाप्येतां मातरं मङ्गलानां धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः ॥

— भवभूति

४

स्मयदूषिताः — गर्वथी दूषित.

अबोधोपहताः — अज्ञानग्रस्ताः

जीर्णमङ्गे सुभाषितम् — विद्या अने वचनचातुरी कोनी आगळ व्यक्त करवी ? ते अंदर ने अंदर मुकाई गई छे.

अदेखाई, अहंकार अने अज्ञान के जडता ए त्रणे काव्य, साहित्य तेम ज कलानी साची कदर करवामां अन्तरायो छे.

५

चलाचल — अतिशय चंचळ. अतिशयता बतावरा माटे 'चल'ने अहीं बेवडयुं छे. अने तेथी पहेला चलना अन्त्य अ नो आ थयो छे. चल+अचल एम पण रूप बनी शके छे अने त्यां अचलनो अतिचल एवो अर्थ थाय छे. नास्ति चलं यस्मात् तत् । सरखावो

लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितम् ।

६

दुकूलं — नाजुक रेशमनुं कापड; रेशमी कापडुं.

निर्विशेषः आधिक्यरहित· भेदरहित· विशेष· ।
महत्व वगरनो फेर, अन्तर

सरखावो : सर्वा. संपत्तयस्तस्य संतुष्टं यस्य मानसम् ।
उपानद्गूढपादस्य ननु चर्मावृतैव भूः ॥
— हितोपदेश

तथा संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ।

लाभ — प्राप्तेऽप्यर्थे अधिकप्राप्तीच्छा ।
लोभ बधां पापोनुं मूळ गणाय छे लोभः पापस्य कारणम् ।

लोभः स्वल्पोऽपि तान् हन्ति श्वित्रं रूपमिवेप्सितम् ।

तान् — अखिलान् गुणान् । श्वित्र – कोढ

पिशुनता — पाछळथी दोष काढवानी के चाडी खावानी टेव

तीर्थम् — तीर्यते यत्र तत्तीर्थम् । घाट पार ऊतरवानो मार्ग आरो, पवित्र स्थान

निन्दा — पातीकाओ समारंभाओ

अपयशो — सरसातो

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते । — गीता

११

जहि — मारी नाख हन् मारवुं

पदवी – मार्ग

१२

दुग्धजलभेदविधौ वैदग्ध्यम् — दूध ने पाणी जुदां पाडवानी हंसनी कळा रसज्ञ साहित्यमां बहु गवाई छे
सरखावो नीरक्षीरविवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत् ।

विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः ॥

— भामिनीविलास

माटे, चातकनी जेम राह जोवी एवी कहेवत थई पडी छे.
सरस्रावो धरणीपतित तोय चातकानां रत्नाकरम् ।

याचना करवानो प्रसंग आवतां स्वमान धरावनार माणसने केटली मनोवेदना थाय छे ते नीचेना श्लोकथी स्पष्ट थशे.

देहीति वक्तुकामस्य यद् दु समुपजायते ।
दाता चेत्तद्विजानीयात् दद्यात्स्वपिशितान्यपि ॥

— प्रश्नावलि

१६

अयस् — लोढु, तांबु

स्वात्याम् — स्वाति नक्षत्रमां सूर्य होय त्यारे समुद्रमांनी छीपो उघडे छे अने तेमां वरसादनां टीपां पडतां तेनां मोती थाय छे, एवी मान्यता छे

पात्रविशेषे न्यस्तं गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः ।
जलमिव समुद्रशुक्तौ मुक्ताफलतां पयोदस्य ॥

मालविकाग्निमित्र १८-१.

भारत तरी अमर

मित्रापद° — आपत्ति ज मित्रतानी साची कसोटी छे
निकषग्रावा तु तेषां (मित्राणां) विपत् । —हितोपदेश

१८

एक दरिद्री माणस स्मशानमां पड्यो शबने पोताना दारिद्र्यभार साथे थोडा वखत माटे साटुं करवा वीनव्युं पण शबे विचार कर्यो के आ तो खोटनो वेपार छे तेथी एणे तेने जवाब न आपवानुं ज उचित मान्युं

सरखावो दारिद्र्यान्मरणाद् वा मरणं मे रोचते न दारिद्र्यम् ।
अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम् ॥
— मृच्छकटिक मां चारुदत्त

१९

मद — हाथीना गंडस्थळमांथी झरतो मद, दान
सत्त्ववत् — तेजस्वी, बळवान

सरखावो तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते । — कालिदास

२०

पाद — पग, किरण
इनकान्त — सूर्यकान्तमणि
निकृति — अपमान
यद्‌ तद् — जो तो पछी
धूळने विषे पण एक कविए आम ज कह्युं छे :
पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति ।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः ॥

२१

अघकरनिकर — कचरानो ढगलो, उकरडो
कृकवाकु — कूकडो (कृकण शब्देन वक्ति इति ।)
सरखावो वनेऽपि सिंहा मृगमांसभक्षिणो
बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति ।
एवं कुलीना व्यसनाभिभूता
न नीचकर्माणि समाचरन्ति ॥

२२

सरखावो :

इक्षोरग्रात्क्रमशः पर्वणि पर्वणि यथा रसविशेष ।
तद्वत् सज्जनमैत्री विपरीतानां च विपरीता ॥

— शार्ङ्गधरपद्धति

वे दुर्जनो जो पासे आवे तो वखत जतां तमनो संबंध वधारे ने वधारे बगडतो जाय छे, ज्यारे सज्जनोनो संबंध वधारे ने वधारे स्निग्ध थतो जाय छ

२३

धैर्यम् दृढचित्तत्वम् ।
मनसो निर्विकारत्वं धैर्यम् सत्स्वपि हेतुषु ।
युधि विक्रम — युद्धे चाप्यपलायनम् । —गीता
अभिरति — प्रीति, संग्रहेच्छा

२४

अकारणविग्रह — कारण विना लडवाड

सरखावो • अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात्कस्य भय न विद्यते । — बाण

योषित् — स्त्री

असहिष्णुता — (तेमना उत्कर्ष) सहन न थवो ते अदेखाई

२५

प्रणयिता — भक्ति, निष्ठा (प्रणय प्रेम, भक्ति)

प्रकृतिमहताम् – प्रकृत्या महताम्। स्वभावे मोटाओना

करे श्लाघ्य त्याग –
दानेन पाणि (विभाति) न तु कङ्कणेन ।

मुखे सत्या वाणी – किं वाचो मण्डनम्? सत्यम् । —शंकर

श्रुतमधिगत च श्रवणयो –
श्रोत्रं श्रुतेन एव (विभाति) न कुंडलेन ।

२६

पद्म – सूर्यथी विकसतु कमळ

कैरव – चन्द्रथी विकसतु कमळ, कुमुद

विकचीकरोति — विकसित करे छे खोल्वे छे
विकच – विगत कच यस्मात् । प्रफुल्ल स्फुट (कच–घट्टी)

नाभ्यर्थितोऽपि नो सम्न्व दिनकर, चन्द्र तथा जलधर नणे साथे लेवाना छ

कृताभियोगा — कृत अभियोग उत्साहपूर्वक यत्न येस्ते । कृतोद्योगा ।

स्वभाव एवोन्नतचेतसा सतां परोपकारव्यसनं हि जीवितम् ।

शाल्योदनः — शालि नामना चोखानो- कमोदनो-भात

मनस्वी — प्रशस्त मनः अस्य अस्तीति । उदार – उन्नत – मनवाळो

कार्यार्थी — कार्य अर्थयते इति। काम करवा मागनार (विद्यार्थी, धनार्थी इ. नी जेम)

सरखावो : सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
तेम ज क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे ।

२८

अभिमुखनिहत — सामी छातीए घवायेलो

साधुवादः — ' साधु साधु ' इति वादः उक्तिः। 'शाबाश,' ' शाबाश 'ना पोकारो, जयजयकार

तिष्ठतु तावत् — सरखावो :
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
— गीता

२९

अयथार्था — विचारवी घटे छे.

आयिपत्तेः — मरण पर्यंत

विपाकः — (पच-रांधवुं) रांधवुं ते; पकवता, फळ, परिणाम

अतिरभसकृत — अति उतावळथी करेलुं, वगर वचार्ये करेलुं

सरखावो सहसा विदधीत न क्रिया,अविवेक परमापदा पदम् ।
— भारवि

३०

दिशति — उपदेशे छे बतावे छे आपे छे

अपाकरोति — (अप+आ+करोति) दूर करे छे

सस्कृतमा उपसर्गोनी मददथी अनेक अर्थभेद सहेलाईथी उपजावी अने बतावी शकाय छे

सत्संगति — सरखावो

सग सता किमु न मङ्गलमातनोति । — जगन्नाथ पण्डित

सता हि सग सकल प्रसूते । — सभातरङ्ग

सता सद्भि सग कथमपि हि पुण्येन भवति ।
— भवभूति

३१

ऐश्वर्यम् — ईश्वरस्य भाव । स्वामित्व, वैभव

उपशम — शान्ति, इन्द्रियनिग्रह, इन्द्रियजय

वित्तस्य — सात्त्विक दाननु आ लक्षण ज छे

देशे काले च पात्रे च तद्दान सात्त्विक विदु । — गीता

प्रभवितु — निग्रहानुग्रहसमर्थस्य । प्रभुता धरावनारनु सरखावो

ज्ञान मौन, क्षमा शक्तौ, त्याग श्लाघाविपर्यय ।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य (दिलीपस्य) सप्रसवा इव ॥
— रघुवंश

शील — सरखावो कोऽलंकार ? शीलम् । — शकर

३२

जलायते — जलमिव आचरति । जलवच्छीतलो भवति । आ अने बीजा नामधातुओ छे, अने ते अय् प्रत्यय लगाडवाथी बने छे.

कुल्या — खाबोचियु.

माल्यगुण — हारनो दोरो

समुन्मीलति — विकसे छे, प्रकाशे छे

सरखावो : अहीं वा हारे था.... ....श्लोक ८९

३३

परितर्जयन्ती — धमकावती, बीक बतावती.

तर्ज् (बीक बताववी) उपरथी बनेलो तर्जनी शब्द अंगूठा पासेनी आंगळी माटे वपराय छे, कारण धमकावतां तेनो उपयोग थाय छे.

भिन्नघटात् इव अम्भः — फूटेला घडामांथी जेम पाणी

चित्रम् — विचित्र, आश्चर्यकारक

अहितम् — स्वविनाशहेतुभूतं कर्म । परापकारम्

३४

मानस — हे मन. कवि मनने उद्देशीने प्रश्न करे छे.

आत्मनीनं — आत्मने हितम् । आत्माने माटे हितकर.

आत्मलीनं — आत्मनि अन्तःकरणे लीनं गूढं स्थितं, न तु दूरस्थम् ।

भ्रान्त्यापि — भूलथी पण, क्यारेक पण

निर्वृति — शांति, मोक्षसुख, परमानन्द

सरखावो तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा

तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् । — कठोपनिषद

३५

अकिंचन — नास्ति किंचन यस्य स । जेनी पासे कशु नथी एवो, गरीब, पूरेपूरो अपरिग्रही

दान्त — इन्द्रियनिग्रहवान् ।

निग्रहो बाह्यवृत्तीनां दम इत्यभिधीयते ।

शान्त — यतचित्त, जेणे पोतानुं चित्त काबूमां राख्युं छे ते

सुखमय — आनंददायी, सुखपूर्ण

सरखावो सतोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम् ।

कुतस्तद्धनलुब्धानां इतश्चेतश्च धावताम् ॥

— हितोपदेश

३६

चाटुल — खुशामतखोर

धृष्ट — अविनीत, निर्लज्ज, धीट

अप्रगल्भ — बीकण, असंस्कारी, गामडियो

अभिजात — संस्कारी, कुलीन, खानदान

गहन — दुःखेनापि अवगन्तुं अशक्य ।

सरखावो वरं वनं वरं वह्निः वरं भारोपजीवनम् ।

पुंसां विवेकहीनानां सेवया न धनार्जनम् ॥

—सभातरंग

भारोपजीवनम् — हमाली के वैतरुं करीने जीववुं ते

३७

अलिभंग — भ्रमर. भमरा-भमरा । आ शब्द बहुवचनमां ज वपराय छे

पदमनुविधेयं च महताम् — अनुयायि साधुपदम् । जुओ श्लोक ११

असिधाराव्रत — तलवारनी धार उपर चालवा के सूवा जेवुं अघरुं व्रत, अति विकट कर्म

सरखावो : क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया ।
दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति ॥ — कठोपनिषद

३८

मध्येपृष्ठम् — पृष्ठस्य मध्ये इति मध्येपृष्ठम्-अव्ययीभाव समास. जेमके मध्येमहाभारतम् मध्येगङ्गम् इ

कमठपति — कूर्मावतारी विष्णु

सः एटले शेषः

मोहाधीनं कुरुते — गीतामां छे छे

३९

प्रदानं प्रच्छन्नम् — दान आपे ते तेनी कोई पण जातनी जाहेरात कर्या विना.

संभ्रमविधि — प्रत्युत्थानाभिवादनादिना आदरविधिना औत्सुक्यम् । अर्थात् उतावळथी सामा जई स्वागत करवुं ते.' संभ्रम — आदर, उतावळ

निरभिभवसार — निन्दारहित

अनुत्सेकः — निरभिमानता

सरखावो : श्लोक ३७

क्षुत्क्षामः — क्षुधा क्षामः । भूखथी क्षीण थयेलो.

विपन्नदीधिति — विपन्ना नष्टा दीधितिः दीप्तिः यस्य सः । नष्टतेज, तेजोहीन.

इभ — हाथी

केसरी — केसरः (याळ) अस्य अस्ति इति ।
सरखावो : यदि नाम दैवगत्या...(श्लोक २१मो)

४१

वाडव — वडवानल, समुद्रमां रहीने तेने शोषतो काल्पनिक अग्नि

संभृत — एकठी करेली

जीमूतः — जीवनस्य मूतः पटबन्धः—मेघ

सरखावो : यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवति ।
वायसाः किं न कुर्वन्ति चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ॥
—पचतंत्र

तथा प्रजानामेव भूत्यर्थं स (दिलीपः) ताभ्यो बलिमग्रहीत् ।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टु आदत्ते हि रसं रविः ॥ — रघुवंश

४२

मनसि वचसि° — मनोवाक्कायैः पुण्यकर्माचरणे रताः । मन, वाणी अने कर्मथी पुण्यकर्म आचरनारा.

• श्रेणि — हार, परंपरा.

पर्वतीकृत्य — पर्वत जेवुं करीने. आने ' च्वि ' रूप कहे छे. अभूततद्भावे च्विः । पुत्रीकृतः धवलीकरोति इ

सरखावोः

परित्यजेयं त्रैलोक्यं राज्यं देवेषु वा पुनः।
न त्वहं सत्यमुत्सृज्य व्यवसेयं कथंचन ॥

महाभारते भीष्माचार्यः।

४५

कूर्मः — को जले ऊर्मिः वेगः अस्य इति। जेनी पाणीमां गति छे ते – काचबो

निर्वाहः — चीवटपूर्वक नभाववुं, पार पाडवुं ते

प्रतिपन्नवस्तुषु — हाथमां लीधेली वस्तु, अंगीकृत कार्य.

गोत्रव्रतम् — कुलव्रत, कुलधर्म

सरखावोः

अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटं
कूर्मो बिभर्ति धरणीं खलु पृष्ठभागे।
अम्भोनिधिर्वहति दुःसहवाडवाग्नि
मङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ॥

रघुकुलरीति सदा चलि आई। प्राण जाहु बरु बचनु न जाई।

— तुलसीदास

४६

तदीयद्विषाम् — तेना (केशवना) शत्रुओनुं-राक्षसोनुं

कुलं — रहेठाण, समूह

शिखरिन् — शिखरवाळो – पर्वत

संवर्तका — प्रलयकालवर्षिण मेघविशेषा प्रलयाभय वा ।

ऊर्जितम् — अति बळवान, प्रभावशाळी

भरसह — भार सहन करे तेवु

४७

उदन्वच्छन्ना — समुद्रथी ढंकायेली–मर्यादित थयली

उदन्वत् — उदकानि सन्ति अत्र इति । सागर

कलयति — मापे छे कल् क्रियापदना संस्कृतमां अनेक अर्थ थाय छे अने तेथी आ धातु कामधेनु कहेवाय छे कलति कामधेनु इति वैयाकरणोक्ति ।

स्फुरदवधिमुद्रामुकुलिता — लसत्परिच्छेद एव मुद्रा (सील')तया मुकुलिता पिहिता परिच्छिन्ना इत्यर्थ । स्पष्ट देखाती मर्यादानी छाप (मुद्रा–' सील ')थी ढंकायली, परिच्छिन्न

भावा (स्थावरजंगमा) — (स्थावर जंगम) बधी वस्तुओ

प्रज्ञोन्मेष — बुद्धिनो उन्मेष–विकास (खीलवुं ते) सरखावो

इति परिमितिमन्तो भान्ति सर्वेऽपि भावा
स तु निरवधिरेक सज्जनानां विवेक ॥

४८

परार्थघटका — पारकानुं हित साधनार

४९

स्थाली — स्थलति तिष्ठति अन्नमत्र इति । थाळी, तपेली

वैडूर्य — पोखराज

तिलखली — तल्नो खोळ

लांगल — हळ.

अर्कमूल — आंकडानु मूळियु

वृति — वाड

कोद्रव — कोदरो, एक हलकुं दश धान्य

कर्मभूमि — सत्कर्म करवा योग्य भूमि, मर्त्यलोक 'भोगभूमि' अथवा 'फलभूमि' स्वर्ग माटे वपराय छे

कर्मभूमिरियं ब्रह्मन् । फलभूमिरसौ मता । —महाभारत

५०

हेमगिरि — सोनानो पर्वत, मेरु पर्वत. आ पर्वत पृथ्वीना मध्यमा आवेलो छे अने तेनी आसपास आखु विश्व फरे छे एवी पौराणिक मान्यता छे

रजताद्रि — चादीनो पर्वत, कैलास पर्वत बरफथी ढकायेलो होवाथी सूर्यप्रकाशमां चादीना पतराथी मढेलो होय एवो देखाय छे

तरवस्तरवः ते एव — ते वृक्षो (बदलाया विना) जेवां हाय तेवां वृक्षो ज रहे छे

मन्यामहे — मोटो गणीए छीए, मान आपीए छीए

मलयः — हिन्दुस्ताननी दक्षिणमां आवेलो पर्वत. तेना उपर चन्दनना झाड बहु थाय छे. ते उपरथी 'मलयज'नो अर्थ चन्दन थाय छे.

सरखावो :

मलयाचलगन्धेन त्विन्धनं चन्दनायते ।
तथा सज्जनसंगेन दुर्जनः सज्जनायते ॥

५१

मघवन् — इन्द्र मह्यते पूज्यते इति मघवन् – मघवा।

कुलिश — वज्र

दहनोद्गारगुरुभिः — अग्निनी ज्वालाओथी दुःसह

उद्गार — बहार आवबु ते, ज्वाळा

गुरु — भारे, दुःसह

तुषाराद्रेः सूनुः — हिमालय पर्वतनो पुत्र, मैनाक पर्वत.

असौ संपात — ते (पुराणोमां प्रसिद्ध एवु) पतन

पहेला पर्वतोने पांखो हती. ते बधेय ऊडता अने प्राणीओने भारे त्रास आपता. एमनी सामे दाद मागवा मुनिओनु शिष्ट मंडळ (deputation) इन्द्र पासे गयुं. प्राणीमात्रने आ ऊडता पहाडोना त्रासमांथी मुक्त करवा इन्द्रे पोताना वज्रथी पर्वतोनी पांखो कापी नाखी ते वखते हिमालयनो पुत्र मैनाक पोतानो जीव बचाववा वायुनी मददथी समुद्रमां कूदी पडी संताई गयो. ए पौराणिक कथानो अहीं उल्लेख छे

भिन्न — नष्ट थयुं, नाश पाम्युं

मुदः (मुद् नुं बहुवचन) आनंद, संतोष, मन.स्वास्थ्य

इत्थम् — आम, आवी स्थितिमां

तादृक् — तेवो, अमर्याद

स्वात्मन्येव...महिमा* — जेना सोनानुं महत्त्व पोतानी अंदर ज समाप्त थयुं छे तेवो, जेना सोनानो बीजा कोईने लाभ नथी एवो.

अभिन्नो मृदः — माटीथी जुदो नथी एवो, माटी समान

८३

कृमिकुलचित — जीवडाओनी आबादीथी भराई गयेलुं—खदबदतुं

जुगुप्सा — घृणा. गुप् (रक्षण करवुं)नुं इच्छादर्शक रूप छे, पण ते आ ज खास अर्थमां वपराय छे

न शंकते — शरमातो नथी

फल्गुता — तुच्छता, असारता

सरखावो : त्यक्तलज्जो राज्यभाग् इव ।

अथवा तो त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

८४

व्याल — दुष्ट गज, भयंकर भुजंग. सरखावो : न भवति बिसतन्तुर्वारण वारणानाम् । श्लोक ६० मो

समुज्जृम्भते — प्रयत्न करे छे
वज्रमणि — हीरो
संनह्यते — तैयार थाय छे
सुधास्यन्दि — अमृत स्रवनार, अतिमधुर.
सूक्त(सु+उक्त) — सुभाषित

सरखावो :

न दुर्जनः सज्जनतामुपैति बहुप्रकारैरपि सेव्यमानः ।
भूयोऽपि सिक्तः पयसा घृतेन न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ॥

५८

प्रसह्य — बलात्कारथी, खूब बळ वापरीने

मकर — मं विषं किरति इति । मगर

प्रचलदूर्मि° — प्रचलन्त्य ये ऊर्मयः तेषां मालाभिः आकुलं तम् ।

प्रतिनिविष्ट — सामो थईने बेठेलो, दुराग्रहाक्रान्त, जिद्दी

सरखावो : ज्ञानलवदुर्विदग्ध

अने

अरण्यरुदितं कृतं शवशरीरमुद्वर्तितं
स्थलेऽब्जमवरोपितं सुचिरमूषरे वर्षितम् ।
श्वपुच्छमवनामितं बधिरकर्णजापः कृतो
धृतोऽन्धमुखदर्पणो यदबुधो जनः सेवितः ॥ कुवलयानन्द

सिकताः — रेती. वालुकाः नी जेम हंमेश बहुवचनमां वपराय छे.

पीडयन् — घाणीमां पीलनार–पीलीने. पीड्–दबाववुं

शशविषाण — ससलानुं शींगडुं (असंभवित वस्तु)

बोलवानी साथे ज जे बे वस्तुओनो विरोध के असंभाव्यता स्पष्ट थाय तेने 'वदतो व्याघात' कहे छे. एवी साव असंभवित वस्तुओना दाखला नीचेना श्लोकमां एकत्र आगेला छेः

एष वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः ।
मृगतृष्णाम्भसि स्नातः शशशृङ्गधनुर्धरः ॥

५७

तानि — तान्येव.

सकल्पानि — अविकलानि

अप्रतिहता — अकुंठित

उष्मन् — गरमी, हूंफ

दाटेला खजाना उपर रहेतु उंदर जेवुं प्राणी पण धननी गरमी (हूंफ)थी कूदको मारी खींटीए भेरवेली भिक्षानी झोळीमांथी खाई शके छे, एवी पंचतंत्रना कविए वार्ता कही छे ते अहीं याद आवे छे.

उष्मापि वित्तजो वृद्धिं तेजो नयति देहिनाम् ।

— द्वितीयं तंत्रम्

उपस्कृत — अलंकृत, शणगारेल, संस्कार आपेल

प्रदेय — आपवा योग्य

आगम — विद्या, वेद

विषय — देश

कुत्स्य — निंद्य, हलको (कुत्सा – निंदा परथी)

यैः अर्घतः पातिताः — जेमणे ओछी किंमत आंकी

अर्घ — किंमत, मूल्य.

सरखावो :

कनकभूषणसंग्रहणोचितो यदि मणिस्त्रपुणि प्रणिधीयते।
न स विरौति न चापि हि शोभते भवति योजयितुर्वचनीयता॥

— सभातरंगे

(त्रपु – सीसुं, कलाईनी धातु)

५९

ह्रीमति — लज्जावाळा(मा)

मुनिः — मूगो, मौनसेवी

विमतिता — बुद्धिहीनत्व, मूर्खता

अवलिप्तता — गर्विष्ठपणु

मुखरता — वाचाळपणुं निन्दितं मुखं यस्य विद्यते स मुखरः। तस्य भावः तत्ता।

अङ्कितः — अङ्क – चिह्न, डाघो. ते उपरथी अङ्कित – अंक्युक्त, डाघवाळुं, दूषित, वगोडायेलो.

सरखावो : मौनान्मूकः इ. श्लोक ३६.

आवी परिस्थितिमां बीजा एक कविनो नीचेनो उपदेश ज ग्राह्य छे.

विद्यते न खलु कश्चिदुपायः सर्वलोकपरितोषकरो यः ।
सर्वथा स्वहितमाचरणीयं; किं करिष्यति जनो बहुजल्प. ?॥

अथवा : —

सर्वथा व्यवहर्तव्यं; कुतोह्यवचनीयता ? — भवभूति
को लोकमाराधयितुं समर्थः ।

६०

अधिगतपरमार्थाः — ज्ञानरूप परम तत्त्व जेमणे हासल कर्युं छे तेओ

मा अवमंस्थाः—अवगणना करीश नहि.

ह्यस्तन भूतकाळनुं रूप मा साथे निषेधात्मक आज्ञार्थना अर्थमां वपराय छे.

संरुणद्धि— अटकावे छे, रोके छे, रोकी शके छे

वारणं — बंधन, प्रतिरोधक **वारणः** — हाथी

६१

गोचर — गावः (इन्द्रियाणि) चरन्ति अस्मिन् इति – इन्द्रियोनो प्रदेश–विषय

किमपि — अवर्णनीय

शम — कल्याण. शम्+कर – शंकर

प्रतिपाद्यमान — दीयमान, अर्पण थतुं

कल्पान्तेऽपि— कल्प एटले ब्रह्मानो एक दिवस. ते ४३२ करोड वर्षनो थाय. १००० युगोनो एक कल्प थाय छे. कल्प एटले त्रैलोक्य पण थाय छे

पुनर्जन्मना सिद्धान्त मुजब आ जन्ममां प्राप्त करेली विद्या तेम ज संस्कारो बीजा जन्ममां पण आपोआप प्राप्त थाय छे विद्या कुलजनवधूरिव जहाति नो जन्मजन्मानि ।

हर्तुर्न गोचर याति, दत्ता भवति विस्तृता।
कल्पान्तेऽपि क्षय नैति, विद्यारत्न महद्धनम् ॥

तान्प्रति मानमुज्झत — तेमनी साथे अहंभावनु वर्तन छोडी दो.

६२

प्राणाघाता°— प्राणीवधमाथी निवृत्ति 'न हिंस्यात् सर्वाणि भूतानि' इति श्रुतिः ।

काले — योग्य वखते

शक्त्या — यथाशक्ति । शक्त्यनुसार

युवति. ...परेषाम् — पारकानी स्त्री विषे वातची । न करवी ते

अनिर्वर्णनीयहि परकलत्र नाम । शाकुन्तल ५

विभंगः — नाश

सामान्य — सर्वशास्त्रसाधारण. सर्वलोकसाधारण सार्ववर्णिक इति यावत् । सार्वभौम

अनुपहितविधि — अनुपहत विधि यस्य — जेनु विधान (करवु) अकुंठित रहे छे – जे परिणाम आपवामां चूकतु नथी, अमोघ (२) बीजा कोई पण शास्त्रने आडे न आवनार

मनो रागादिरहितं वागदुष्टानृतादिना ।
हिंसादिरहितं कर्म तदवेश्वरपूजनम् ॥
– एक आधुनिक सन्यासी

६३

किं — 'किंप्रयोजनम्'ना अर्थमा तेनी जेम ज तृतीया साथे 'किम्' वपराय छे

ज्ञाति — न्यात, दायादो तेमा कुलप ने कजियो होय एटले धूळधाणी थवानी ज

सुहृद् — मित्र (शोभन हृदय यस्य), सारु हृदय (शोभन निर्मल हृदय मन)

किं सर्पं°—

विषधरतोऽप्यतिविषम खल इति न मृषा वदन्ति विद्वांस ।
यदय नकुलद्वेषी सकुलद्वेषी पुन पिशुन ॥

सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् — सारु काव्य रचवाना शक्ति होय ता राज्यनी शी जरुर ? लोकोना हृदयो वश करवानी शक्ति हाय तो हुकूमतनी जरुर शी ?

अनवद्या — वद्या एटले बोलवा योग्य, स्तुत्य अवद्या – निंद्य । न अवद्या अनवद्या – अनिंद्य, स्तुतिने पात्र

६४

विषमस्थित — संकटमां के अगवडमां आवी पडेलो
प्रमत्त — भानवगरनो

सरखावो :
अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति ।

६५

प्रत्यक्षम् — अक्ष्णोः प्रति । अव्ययीभाव समास
अक्षम् इन्द्रियम् प्रतिगतम् । तत्पुरुष

परोक्षं प्रत्यक्षं कुरुते — अज्ञातने सुज्ञात बनावे छे.

भगवतीम् सत्क्रियाम् आराधय — ऐश्वर्यवती सत्क्रियानी आराधना कर.

व्यसनैः (मर्कटैः) **विपुलेषु गुणेषु** — जे साधवामां अनेक संकटो के मुश्केलीओ वेठवी पडे छे तेवा गुणो विषे.

विपुलेषु गुणेषु व्यसनैः आस्था मा कृथाः — अनेक गुणो प्राप्त करवा पाछळ पडीश नहि. व्यसन-आसक्ति

'सर्वं पदं हस्तिपदे निमग्नम्' ए न्याये बधा ज गुणो 'भगवती सत्क्रिया' (सदाचार)मां आवी जाय छे.

६६

गृहे — घरमां, कोठामां, खानामां
प्राणिसाराः — प्राणी रूपी सोगटां
अक्षौ — रात अने दिवसरूपी बे पासा.

પાઠાન્તરોમાં **बहुकल** કાલનું વિશેષણ, **बहुकलम्** ક્રિયાવિશેષણ

'કાલ' અને 'કાલી'નો કેટલાક ટીકાકારો શંકર અને પાર્વતી એવો પણ અર્થ કરે છે જગતનો સંહાર કરવાનું કામ તો શંકરનું છે જ શંકર અને પાર્વતીની સોગટાં રમવાની વાત પણ આપણી પૌરાણિક કથાઓમાં પ્રચલિત છે

૬૭

दुर्ग — દુર્ગમ સ્થાન दु खेन गम्यत अत्र इति ।

विषम — વિકટ

सेवा कृता निष्फला — (નીચોની) નિષ્ફલ સેવા કરી 'a thankless task'

काकवत् — કાગડાની જેમ

काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते ।

आशङ्कया — ડરથી, બીતા બીતા, કાગડાની જેમ કોઈ હાંકી કાઢશે એ બીકથી

जृम्भ् — બગાસું ખાવું, મોં પહોળું કરવું, વધવું

अङ्गं गलितं, पलितं मुण्डं, दशनविहीनं जातं तुण्डम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं, तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् ॥
— શંકરાચાર્ય

૬૮

रहस्यम् — ખાનગી વાત (ચાલે છે)

विश्वेशितु — (विश्व + ईश्) વિશ્વ ઉપર રાજ્ય કરનાર ઈશ્વરના, શંકરના

निर्दौवारिकनिर्दयोक्ति — निर्गता दौवारिकाणां निर्दयोक्तय यस्मात् तत् निर्दौवारिकनिर्दयोक्ति । अत' अपरुपम ।

द्वारि नियुक्त **दौवारिक** — द्वारपाळ

पाठान्तरमां **निर्दोवारिक क्तपरुपम्** आ आखो एक समास छे

६९

शलभ — पतगिउ

दीपदहने — दीवानी ज्योति उपर

घडिशयुत — आक्डावाळु

विज्ञानन्त — विषयाणां विनाशहेतुत्व सम्यगव-गच्छन्त ।

विपज्जालजटिलान् — दु खा के सकटोनी जाळथी के परपराथी व्यापेला

शद्बादिभि पञ्चभिरेव प लमापु स्वगुणेन बद्धा ।
कुरग-मातग पतग-मीन भृ गा नर पञ्चभिरश्चित किम् ॥
— शकराचार्य

'अधित – ग्रस्त'

कुरग, मातग वगेरे एक एक विषयना भोग बने छे, ज्यारे बुद्धि होवा छतां माणस तो पांचेयनो भोग बने छे

७०

अरुजम् — रोग रहित. न विद्यते रुक् रुजा यस्मिन्

अप्रतिहत — अकुंठित

सरखावो महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया ।
पारं दुःखोदधेर्गन्तुं तर यावन्न भिद्यते ॥
मोहमुद्गर

तथा न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।

७१

शयनमवनिपृष्ठम् — शय्या भूमितलम्

अनुभवितुं नोत्सहे — (हुं) साखी शकतो नथी

नवधनमधुपानं — नवा ज मळेला द्रव्यना मदथी

उन्मत्त — आंधळा — थयेला

सरखावो

फल स्वेच्छालभ्य ... सहन्ते संताप तदपि धनिनां द्वारि कृपणा । — भर्तृहरि

७२

केचित् — ब्रह्माए जगत सरज्युं तेनो तेम ज तेना मरीचि, पुलह इ. मानसपुत्रोनो अहीं उल्लेख छे

अपरे — विष्णु तथा तेना कूर्मादि अवतारो तेम ज मान्धाता वगेरे राजाओ अहीं सूचित छे

अन्ये — परशुराम, बलि वगेरेए पृथ्वी जीती तेने दानमां आपी तेनो उल्लेख छे.

अन्ये धीराः — अनेक प्रख्यात राजाओ आ पदमां आवी शके

चतुर्दश भुवनानि — भू, भुवर्, स्वर् इत्यादि चौद लोको एमां सात उपरना तथा सात नीचेना लोकोनो समावेश थाय छे.

७३

उपासितगुरु° — उपासित सेवित य गुरु तस्मात् लब्धा या प्रज्ञा तस्या अभिमानेन उन्नता ।

प्रतन्वन्ति — फलावे छे

स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।

मानधन — मान-स्वमान-जेनु धन छे त

मानद — (१) मान ददाति इति । बीजाने मान आपनार (२) मान द्यति (शत्रूणाम्) इति । बीजाना (शत्रुना) माननो नाश करनार

पराङ्मुख — परार् मुख यस्य स । बेपरवा

एकान्तत — अत्यन्त, पूरेपूरा

७४

अभुक्तायां यस्याम् — अहीं पृथ्वीने साधारण स्त्री-पण्य स्त्री-जोडे सरखावी छे यस्यां नृपशतै अभुक्ताया क्षणमपि न यातम् इति अन्वय ।

पतय. — पतिओ, राजाओ

प्रत्युत — ऊल्टु, ने बदले

७५

मृत्पिण्डो° — अहीं समुद्रवलयाकित पृथ्वीने कवि एक अणु तरीके ओळखावे छे

भृशा दरिद्रा क्षुद्रा (राज्ञा गणाः) **तत्किमपि दधु अथवा न ददते** — माटीना गोळाना ककडा माटे लडनारा भिखारा अने क्षुद्र एवा आ राजाओ मागनाराओने कईक आपे ने न पण आपे

भागीकृत्य — भाग पाडीने, वहेंची लईने

७६

परपिण्ड — परान

सावमान° — अपमान वेठीने पण, पारका पासे भीख मागीने जीववामा राचनारा

७७

किं लोभाय — 'भवति' अहीं अध्याहृत छे चतुर्थीनु रूप **लोभाय** परिणाम बतावे छे

शफरी — नानकडी माछली

स्फुरितेन — हालचालथी, स्फुरणथी

जातु — खरेखर, कदी

७८

सिंह — हिनस्ति इति सिंह । वर्णविपर्ययात्

सत्त्वानुरूप — पोताना बळ के महत्ताने अनुरूप—शोभे तेवु

मांस — मनुए मासनी व्युत्पत्ति आम आपी छे
मा स भक्षयिताऽमुत्र यस्य मासमिहाद्म्यहम् ।
एतन्मासस्य मासत्व प्रवदन्ति मनीषिण ॥
सरखावो सिंह शिशुरपि इति १९ श्लोक

७९

तुलितबिसिनी° — कमळना पादडा उपरना पाणी साथे जेने सरखाववामा आवे छे (तवा अस्थिर, चचळ प्राण)

नलिनीदलगतजलमतितरलम् तद्वज्जीवितमतिशयचपलम् ।
—शकराचार्य

विवेक — सारानरसानो विचार

आढ्य — सपन्न धन + आढ्य = धनाढ्य गुणाढ्य

नि.सज्ञ — बेभान, मूढ

निजगुणकथा° — आत्मस्तुति करवामां पाप रहेलु छे
इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वय प्रख्यापितै. गुणै । सुभाषित
ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् ।
नैषधीय° २–४८

सरखावो

जठरकुहरी दुष्पूरय करोति विडवनम् ।

प्रसादं नेतुम् — प्रसन्न के खुश करवा माटे

प्रसन्ने त्वय्येव — तु पोते ज प्रसन्न-संतुष्ट-थाय त्यारे

चिंतामणि — इच्छित वस्तु आपनार काल्पनिक मणि

स्वयमुदित...गुणे — स्वयमुदिताः चिन्तामणिगुणाः यस्मिन् तस्मिन् ।

विमुक्त संकल्प° — बधी तृष्णानो ज्यारे त्याग करायो होय – अन्त आव्यो होय – त्यारे कई इच्छित वस्तु प्राप्त करवानी बाकी रहे छे ? त्यारे बधी ज इच्छाओ तृप्त थयेली गणाय

८१

विद्वद्गोष्ठी — विद्वानोनो वार्तालाप, काव्यशास्त्र-विनोद

गोष्ठी — गाव. अनेका वाच. तिष्ठन्ति अस्याम् – सभा, सभापण

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन तु मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥

गलत्कुष्ठवपुषः — गलत्कुष्ठानि वपूंषि यासां ताः (रामा)

८२

समारंभाः — शरू करेला कार्यो

पशु — अनुभवथी जे डहापण शीखतो नथी तेवा माणस, पशु जेवो जड

प्रत्याशा — तृष्णा
अशनिग्राव — वज्र जेवो कठण पथ्थर
घटित — बनेलुं

आ संसारनी भोगविलाससृष्टि झांझवाना जळ जेवी छे. तेनी पाछळ पडतां माणस केटलीये वार भग्नाश थाय छे. तोपण तेनी नफटाई एटली अनहद छे के ते पशुनी जेम फरी फरी तेनी ज पाछळ दोडे छे. तेथी तेनुं हृदय पथ्थर जेवुं कठण ज होवुं जोईए, एम कवि कहे छे.

८३

अधिनिवस् — आ क्रियापद बीजी विभक्ति ले छे
सुरनदीम् अधिनिवसामः — यतिधर्मेण इत्यर्थः
दारान् परिचरामः — गृहस्थधर्मेण अनुनयामः
गुणोदारान् — गुणैः उदारान् । सद्गुणी (स्त्रीओने)

८४

अज्ञानमूढो जनः — अज्ञानने लीधे मोहमां पडेलो.
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः । — गीता
संख्यातिग — अगणित, संख्यानी पार
संदृश्य — निहाळीने, जोईने
संसाराेः अतो विमुक्त्यै प्रयतेत विद्वान् ।
संन्यस्तबाह्यार्थसुखस्पृहः सन् ।

यद्वक्त्रं मुहुरीक्षसे — बीजाना मोटा तरफ वारंवार जोवुं ए दैन्यनुं लक्षण छे

चाटु — खुशामत

प्रत्याशया — पैसा वगेरे मळशे एवी आशा के लालचथी.

कवि अहीं अन्योक्ति द्वारा साधुचरित माणसना गुणोनुं वर्णन करे छे

८६

मरसफल शाखा — अमजननी प्राथमिक जरूरियातो पूरी पाडनारी तरुशाखाओ

वीक्ष्यन्ते यन्मुखानि — सरखावो यद् वक्त्रं मुहुरीक्षसे श्लोक ८५

प्रसभमपगतप्रश्रयाणाम् — साव विनयशून्य धयला

दुःखोपात्ताल्प... भ्रूलतानि — 'मुखानि 'नुं विशेषण छे दुःखेन अत्यन्तकष्टेन उपात्त संपादित तदल्पमपि यद्वित्तं धनं तत्र यो स्मयो गर्व स एव पवनो वात तद्वशात् नर्तिता चलिता भ्रूलता येषां तानि (मुखानि)।

सरखावो गंगातरंगहिमसीकर इ. श्लोक ७६

योगनिद्रां गत — योगनिद्रा के समाधिमा मग्न थयेलो योग विषयान्तरव्यावृत्ति तद्रूपा निद्रा ।

अभ्यसनम् — अभ्यास

किं तं भाव्य मम सुदिवसे — एवा मंगल दिवसो हु जोईश खरो ? एवा सारा दिवसो मने आवशे खरा ?

शृङ्गकण्डूविनोदम् — शींगडु खजवाळवानो विनोद – आनद.

पोतानामा अहिंसा दृढमूल थता आसपासना प्राणीओ स्वाभाविकपण ज निर्भय थाय छे अहिंसाप्रतिष्ठाया तत्सन्निधौ वैरत्याग । — योगदर्शन

८८

पर ज्योति — ब्रह्म

आनंदाश्रुजलं पिबन्ति शकुना —
सरखावो • सप्राप्स्यन्त जरठहरिणा इ श्लोक ८७

अकेशया — अंके शेरत त अकेशया (अलुक् समास) – खोळामा सूतरा

मनोरथोप कौतुकजुषाम् 'अस्मास्म्' नु विशेषण छे

मनोरथोपरचितप्रासाद — हवाई बगला

अस्माक आयु परिक्षीयते — अमारी जिंदगी वही जाय छ

८९

मणौ वा लोष्टे वा — सरखावो: समलोष्टाश्मकाञ्चन:।

स्त्रैणम् — स्त्रीओनो समूह

स्त्रैणना त्रण अर्थ थाय छे. १ स्त्रीओनो समूह, २. स्त्रीपणु, ३. स्त्रीओने वशवर्ती.

समदृशः — समा समाना दृक् यस्य सः समदृग् । तस्य ।

पुण्यारण्ये — तपोवने

९०

उषित्वा — रहीने

स्वयम् — पोतानी मेळे

अतुलपरितापाय — आ चतुर्थीनुं पद परिणाम बतावे छे. *परितापं दातुम् ।

विषयोनो वियोग अनिवार्य ज छे, तो तेमनो त्याग करवानुं श्रेय आपणे ज केम न लेवुं? एम करतां पामरतामांथी तेम ज अनेक विटंबणामांथी यची जवाय छे, अने अपार शांतिनुं सुख मळे छे.

शमसुखमनन्तम् — अपार शान्तिनुं सुख.

यच्च काममुखं लोके यच्च दिव्यं महत्सुखम् ।
तेम ज गीतामां
तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशीं कलाम् ॥
विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥

९१

तथापि — तोपण. अहीं 'तस्माद्धि' (तेथी)ना अर्थमां लेवुं घटे.

समस्त जगत कर्माधीन छे; तेथी डाह्या माणसे विचार करीने काम करवुं घटे.

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता, परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः ॥
— योगवासिष्ठ

९२

हतविधि — हत - दुष्ट, मूओ. 'दग्ध' पण आ अर्थमां वपराय छे.

विधिः — विधि (नसीब), ब्रह्मदेव

प्रतिनियत° — कोई पण कार्यनुं चोक्कस एवुं कोई एक फळ आपवानी शक्ति धरावनारो (कर्मे तेवुं फळ आपवानी अशक्ति आमां ध्वनित छे).

न हि कर्माणि क्षीयन्ते । — महाभारत

फलं कर्मायत्तम — वावे तेवुं लणे, ए न्यायथी फळ कर्माधीन छे.

न येभ्यः प्रभवति — जेमनी आगळ एनुं कशुं चालतुं नथी.

कर्मनो अटल नियम अहीं बताव्यो छे.

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम् ।
तथा पूर्वकृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति ॥

कुलालवत् नियमित —कुमारनी जेम (ब्रह्माडरूपी वासणनी अदर) अनेकविध सृष्टि उत्पन्न करवाना काममा निमायलो, रखायलो–रखायो, रोकायेला आव्यो

गहन— अरण्य, त्रासदायक

रुद्र — रोदयति (असुरान्) इति रुद्र ।

कपालपाणिपुटके — कपाले च पाणिपुटके च ।
स्वय महेश , श्वशुरो नगेश , सुतो गणेशश्च, सखा धनेशः ।
तथापि भिक्षाटनमेव शम्भो , वलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ।।

सूर्यो भ्राम्यति — सरति आकाशे इति सूर्यः । सुवति कर्मणि लोक प्रेरयति इति वा । पहेली त्रण लीटीथी अहीं वाक्यरचना जुदी पडे छे अने 'प्रक्रमभंग' कहे छे

कर्मनो कायदो कोई पण उथापी शकतु नथी. बधाने एने तावे थवु ज पडे छे ऋत (The Immutable Law) अथवा ब्रह्म विषे उपनिषदमा वर्णन कर्यु छे

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः ।
भयादिन्द्रश्चाग्निश्च मृत्युर्धावति पञ्चम ।।

दशावतार — मत्स्यकूर्मो वराहश्चनरसिंहाय वामन ।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्ध कल्की च ते दश ।।

'पृथ्वी उपर तारे दश वार जन्म लेवो पडशे' एवो दुर्वासा ऋषिना शाप आप्याथी विष्णुने दश अवतार लेवा पडया. (कल्की अवतार तो बाकी छे.)

९४

उल्लाप — ठपको, निंदा, गाळ

कथमपि — महा मुसीबत, जेम तेम करीने

चित्तस्तम्भ कृत — मननी लागणीओ दबावी दीधी

मोघाशा —जेनी इच्छा अथवा मनोरथ निष्फळ गया छे ते आशामां सपडाएलो माणस गमे तेवी विटंबणाओ सहन करवा तैयार थाय छे

ते धन्या पुण्यभाजस्ते तैस्तीर्ण क्लेशसागरः ।
जगत्संमोहजननी यैराशाऽऽशीविषा जिता ॥

आशीविषा — नागण

९७

विधुरा — विगता धूः कार्यभारो यस्याः सा।

(साधनाभावने लीधे) जेने कशुं काम नथी एवी, मूंझवण के दुःखने लीधे विषण्ण थयेली विचारी

निरन्नविधुर — अन्न न होवाथी विह्वल के विषण्ण बनेली

गेहिनी — गेह - घर एवी ज रीते गृह उपरथी गृहिणी शब्द थाय छे

याञ्चाभङ्ग° — याचनाभंग थवाना भयथी गद्गद वाणीए तूटता अने पडता अक्षरे

केदेहीति वदेत् — सरखावो:
देहीति वचनं श्रुत्वा देहस्थाः पञ्च देवता ।
मुखान्निर्गत्य गच्छन्ति ह्री-श्री-धी-धृति-कीर्तयः ॥
तीक्ष्णधारेण खड्गेन वरं जिह्वा द्विधा कृता ।
न तु मान परित्यज्य देहि देहीति भाषणम् ॥ —प्रसन्नरत्नावलि

९६

क्षान्तं (किन्तु) न क्षमया — 'अशक्तिमान् भवेत् साधुः' पण एवी नीति स्वीकारी दरगुजर कर्युं.

त्यक्तं (नाम किन्तु) न संतोषतः — सुखोए त्याग कर्यो त्यारे तेमनो त्याग थयो, पोते समाधानपूर्वक सुखोनो त्याग न कर्यो.

नियमितप्राणैः — प्राणोने रोकीने, जाणे प्राणायाम करीने.

श्रद्धा के भावशुद्धि विना करेलां क्षमा, त्याग, तप के ध्यानमांथी इच्छित फळनी अपेक्षा राखवी वृथा छे हेतु तेवुं फळ.

९७

उपभोगयन्ति — उपभोगो आपनारा – सेववामां साधनभूत

न च प्राप्तो दृढप्रत्ययः — भविष्यकाळमां मळवा विषे खातरी पण नथी एवा

वाञ्छामात्रपरिग्रहाणि — फक्त वस्तुनां — कल्पनानां - ज पकडी राखेल, मननां ज रत्नो।

विवेक एटले ज आत्मानात्मवस्तुविचार. ए होय तो तेनुं आ परिणाम अनिवार्य ज होय.

९८

शिरःशेषः — शिरः एव शेषः यस्य सः (राहुः)।

समुद्रमंथन वखते राहुकेतुए अमृत चाख्युं. ते गळा नीचे ऊतरी जाय ते पहेलां ज देवोए तेमनुं डोकुं उडावी दीधुं. तेथी ग्रहण वखते सूर्य तथा चंद्रनो तेओ ग्रास करे छे—बल्के तेमना गळी जवाने परिणामे ज ग्रहणो थाय छे. पण थोडा वखत पछी तेओ तेमने छोडी दे छे एवी पौराणिक मान्यता छे. एम शत्रुने पण छोडी देवामां कवि राहुनी मोटाई बतावे छे

९९

मिथ्या वहन् खिद्यसे — साधु होवानुं अभिमान तुं राखीने वृथा कष्ट वेठे छे.

पारकानुं दुःख दूर करे ते (परदुःखभंजन) ज सत्पुरुष नामने लायक गणाय.

पृथु — विशाळ, विस्तीर्ण. आ शब्द उपरथी ज पृथ्वी शब्द बन्यो छे.

कूर्म. — विष्णुए कूर्मावतार लई पृथ्वीने पोतानी पीठ उपर ऊंचकी हती.

ध्रुव — उत्तानपाद राजानो पुत्र ध्रुव तपने प्रभावे तारामंडळना मध्यमां स्थान पाम्यो. आखु ज्योतिर्मंडळ (तेजस्विचक्रम्) तेनी आसपास फरतुं आपणे जोईए छीए.

संजातव्यर्थपक्षाः — (१) संजाताः च ते व्यर्थाः संजात-व्यर्थाः। तेषां पक्षो येषां ते। जेमनो जन्म निरर्थक छे एवाना पक्षमां भळेला; (२) व्यर्थौ पक्षौ स्वार्थपरमार्थ-लक्षणौ इहपरलोकलक्षणौ वा येषां ते व्यर्थपक्षाः। संजाताश्च ते व्यर्थपक्षाश्च । इहलौकिक तेम ज पारलौकिक बेमांथी एकेय हित जेमणे संपादन कर्युं नथी एवा, (३) संजाताश्च ते व्यर्थाश्च पक्षाः येषां ते । जेमने पांखो छे पण ते नकामी जेवी छे, एवा (उदुंबरना फळमांना मगतरा.)

उदुंबरमशक शब्द 'कूपमण्डूक'नी जेम ज संकुचितपणुं बतावे छे.

नोपरिष्टात् न चाधः — न उपर न नीचे, कोई पण रीते उपयोगी नहि. धोबीनो कूतरो न घरनो न घाटनो.

१०१

विरसायास — रसहीन क निष्फळ प्रयत्न

दुरध्यवसाय — दुराग्रह, मूर्खाइभरेला धधा

व्यपेतनिजक्षमा — (१) पोते स्थिर रहीन पृथ्वीने आधार आपवानु जमण छोडयु छे (२) पोतानी मर्यादा जेमणे ओळगी छ एवा

कुलशिखरिण — कुलपवतो सात गणाय छ

महेन्द्रो, मलय, सह्य शुक्तिमान्, ऋक्षपर्वत ।

विंध्यश्च, पारियात्रश्च, सप्तैते कुलपर्वता ॥

सामान्यपण पवता तथा समुद्रो पोतानी मर्यादा आळगता नथी, पण कल्पना अत वखत तेओ पण चलित थाय छे पण महान व्यक्तिओ आवे वखत पण धीरज क हिंमत हारती नथी सरखावो

दर्शितभयऽपि धातरि धैर्यध्वसा भवन्न धीराणाम् ।

तेम ज — उदयति यदि भानु पश्चिमे दिग्विभागे

विकसति यदि पद्म पर्वतानां शिखाग्र ।

प्रचलति यदि मेरु, शीतता याति वह्नि

न चलति खलु वाक्य सज्जनाना कदाचित् ॥

१०२

मन शवर प्रपत्तुम् अन्विच्छति, ए मुख्य वाक्य छे बाकीना बधा पदा मनना विशषणो छ

चापल — चचळता अस्थिरता

विकल्पविस्तर — शकाकुशकाओना विस्तार

१०३

वितीर्णे सर्वस्वे — सर्वस्व आपी दईने

विगुणपरिणामा विधिगतीः — विचित्र के दुःखद परिणामवाळी विधिनी घटनाओ; दैवदुर्विलसितानि.

त्रियामा — त्रण प्रहरवाळी-रात्रि

पुण्यारण्य — पवित्र वन, तपोवन

'**विरसपरिणामाः**' पाठमां विरस एटले दुःखपूर्ण.

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैकेन अमृतत्त्वमानशुः ।

— बृहदारण्यकोपनिषद्

१०४

किम् — किं कार्यम्, किं प्रयोजनम्, कोऽर्थः । तेनो शो उपयोग? आ अर्थमां आ बधा शब्दो तृतीया साथे वपराय छे.

किं वेदैः — सरखावोः

नानुध्यायाद् बहून् शब्दान् वाचो विग्लापनं हि तत् ।

— बृहदारण्यकोपनिषद्

स्वर्गग्रामकुटीनिवासफलद — वेद, स्मृति वगेरेथी मळता फळमां कशो दम नथी, ए बताववा ग्राम अने कुटी शब्दोनो उपयोग करी स्वर्गनिवासनी तुच्छता कविए बतावी छे.

कर्मक्रियाविभ्रमः — यज्ञयाग-इत्यादि क्रियाओनो विलास-पसारो.

प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म।
— मुण्डकोपनिषद्

मुक्त्वा — बाद करीने, सिवाय

स्वात्मानन्द — स्वस्मिन् आत्मनि य आनन्दः तस्य यत्पदं तस्मिन् यः प्रवेशः तस्य कलनम् करणम्। आत्मसाक्षात्कार

शेषा॰ वणिग्वृत्तयः — बाकीना तो वाणियावेडा छे.

१०५

पेशल — दक्ष, कुशल

विकल्पजल्प — शंकाकुशंकायुक्त एवो बकवाद

मुखर — वाचाळ

हाथी चलत है अपनी गतमे कुतर भुकत है वाकु भुकवा दे।
— कबीर

तुल्यप्रियाप्रियो धीरः तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः। — गीता

१०६

स्मरतिमिर — काम-विकार ए ज अंधकार अथवा कोई नेत्ररोग (तिमिर) तेना संस्कारोथी उत्पन्न थयेलुं (अज्ञान)

पटुतरविवेकांजनजुषाम — सदसद् वस्तुनो विचार करवामां विशेष कुशल एवो जे विवेक ए ज अंजन (सुरमो) जेमणे आंखमां आंज्यु छे एवा (असामी)

समीभूता — असमा समा सपन्ना समाभूता। समत्वने पामी (अभूत तद्भाव च्वि ।)

१०७

' तैरेव चाय भव ' पछी **'रचितः'** अध्याहृत छे

कस्य कृते — कया भोग माटे, शा माटे ?

कृतम् — बस करो अलम् पण ए ज अर्थमा तृतीया साथ ज वपराय छे

आशापाश विशदम् — अगणित आशाओनी शान्ति थवाथी स्वच्छ विशुद्ध - बनेलु

कामोच्छित्तिवशे – कामस्य उच्छित्त्या वशम्, तस्मिन् । कामनाओनो-वासनाओनो-नाश थवाथी हवे पोताना वशमा आवेलु – प्राप्त थयेलु **उच्छित्ति** — उच्छेद, समूल नाश

स्वधामनि — पोताने स्थाने आत्मामा

पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयंभूः तस्मात्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्।
कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षत् आवृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन् ॥

— कठोपनिषद्

१०८

सुकृत — पुण्यकर्म

उद्रेय — उत्कर्ष, उत्कटता, विकास,

अपास्त — दूर करायलु

मोहमहिमा — एषणात्रितया मक मोह तस्य महिमा । एषणा त्रण छ पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा

युष्मत्सग मोहमहिमा – युष्माक सगस्य वशेन उपनात यत् सुकृत तस्य उद्रेकेण उत्कर्षेण स्फुरन् निर्मल च यद् ज्ञान तेन अपास्त दूरीकृत समस्त मोहस्य महिमा यस्य तथाभूत (अहम्)।

अन्त्य — छवटनी (विदायना सलाम) कारण हवे परब्रह्ममा लीन थाय छे

कुटुबीजन जेवा पृथ्वी, आप, तज, वायु अने आकाश ए पाच महाभूताए देह आप्या अने टकाव्यो त न्हथा पुण्यकर्म कर्यु, जथी ज्ञान मळ्यु अने परिणामे मुक्ति मळी त माटे त भूतोना कवि उपकार मान छे अन दुनियानी विदाय ले छे

१०९

सरखावो आ ज कविनो श्लोक 'मही रम्या शय्या इ'

वृत्ति — शिखरिणी

रत्यै — आनद आपवा माटे, मनाविनाद माटे काव्यशास्त्र विनोदार्थम्।

सेवाञ्जलि — सेवाथ अञ्जलि । चतुर्थी तत्पुरुष।

विद्याङ्गना — अङ्गना प्रशस्तानि अङ्गानि यस्या सा। विद्या एव अङ्गना।

११०

कुशल चरितम् – कल्याणकारक कर्म-व्यवहार-परिणाम

विपाकः पुण्यानां॰ — पुण्य कर्मोना परिणामनो विचार करता मने डर लागे छे.

चिरपरिगृहीता : — घणा लावा वखतथी सग्रह करेला-भेगा थयेला – सेवायेला.

महान्तो जायन्ते — मोटा थाय छे, वध्ये ज जाय छे

न जातु कामः कामानाम् उपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।। —मनु

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायान्-
'नास्त्यकृतः कृतेन।' —मुण्डकोपनिषद

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति। —गीता

१११

गतागतम् — गत च आगत च गतागतम्-आवजा

दृष्ट्वा॰ — गीतामा 'जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्' ने ज्ञाननु लक्षण गणाव्यु छे. जेने जन्मजराव्याधि आदिथी त्रास के वैराग्य उत्पन्न थतो नथी ते जड ज कहेवाय

उन्मत्तभूतम् — उन्मत्त इव इति उन्मत्तभूतम्। (सुप्सुपा समास।) भरसागे : भारभूत

कामरसिक — कामेषु रसिक । भागोमा आनंद लेनार – राचनार, भागोनी ल्हेजत माणनार

वलीमण्डिततनु — (घडपणने लीधे) करचलाथी युक्त देहवाळा

यमधानी — यमनी नगरी **धानी** स्थान सरखावो राजधानी, मसीधानी इ

जवनिका — नाटकना पडदा यवन लोको पासेथी आपणे लाव्या हशा तेथी पडदानु जवनिका नाम पडयु लागे छे

बाल्य तारुण्य इत्यादि अवस्थाओ ए ज जिंदगीना नाटकना जुदा जुदा अंको छे ते पूरा कर्यां पछी संसारनी रंग भूमि उपर भाग भजवतो नर (माणस) छेवटे मरणना पडदानी पाछळ सदाने माटे जाय छे

आंग्ल कवि शेक्सपियर जिंदगानी सात अवस्थाओ (जिंदगीरूप नाटकना सात अंक) गणावे छे

All the world s a stage
And all the men and women merely players
They have their exits and their entrances
And one man in his time plays many parts,
His acts being seven ages

—' As You Like It

११३

आ श्लोकमा मुख्य वाक्य आ छे.

विधि मन· पिण्डीकृत्य भ्रमयति ।

जेम कोई कमायेलो कुंभार माटीना पिंडाने एटले के गोळाने चाक उपर फरवी तेना जुदा जुदा आकार घडे छे, तेवी रीते विधि (दैव, ब्रह्मा) माणसना मनने चिन्ताना चाक उपर फेरवे छे. पण ते कया घाट घडवा मागे छे ते आपणा जाण्यामां आवतुं नथी.

विपद्दण्ड...चले — विपदः एव दंडाः तेषां घातस्य प्रघातपरंपरायाः परिचयेन चलतीति विपद्दण्ड...चलम्। तस्मिन्। परिचय — स्पर्श, ताडन.

११४

माने म्लायति इत्यादि पहेली बे लीटीमां बधी 'मति सप्तमी'नी रचनाओ छे.

जह्नुकन्या — गंगा नदी, जाह्नवी

भगीरथना प्रयत्नथी स्वर्गमांथी ऊतर्या पछी गंगा जह्नु राजानी यज्ञभूमि उपरथी वहेवा लागी; तेथी तेनो यज्ञ जळमय थई गयो. परिणामे जह्नु चिडाई गयो अने गंगाने पी गयो. पछी देवोनी, ऋषिओनी तथा खास करीने भगीरथनी प्रार्थनाथी तेणे पोताना कानवाटे गंगाने बहार काढी तेथी गंगा जह्नुनी कन्या मनाय छे.

जह्नोः कन्यां सगरतनयस्वर्गसोपानपंक्तिम्। — मेघदूत

११८

इय जठरपिठरी विडबन करोति आ मुख्य वाक्य छ बाकीना बधा पदो 'जठरपिठरी'ना विशेषणो छे माणसना स्वमान, औदार्य इत्यादि गुणो तथा व्रीडा के शरम ए बधानो एकी साथ आ जठरपिठरी (पेटनो खाडा) नाश करे छ पेटना खाडा पूरवा माटे माणसने अनेक विटवणाओ सहन करवा पड छ

अभिमत पटीयसी — प्रिय एवा स्वमाननी प्रथिने-भावनाने भिन्न करनार, उडी नाखनार.

गुरुतर चन्द्रिका — अनेक उदात्त गुणोनो समूह ए ज कोई सूर्यविकासी कमळ – तेने सकोचावनार उज्ज्वळ चादनी

विपुल कुठारिका — उत्कट शरमनी लागणी के व्रीडा ए ज कोई वेलो – तेने कापनार कुहाडी सरखाणो जठरपिठरवर्ती वह्निरर्थीकरोति ।

११६

एक ज वस्तु भिन्न भिन्न प्रकृतिवाळा माणसोनी बाबतमा सार विरोधी परिणाम उपजावे छ. One man's meat is another man's poison

११७

द्विरद — द्वौ रदौ दन्तौ यस्य स । हाथी
खर — कठण

બળવાન માણસ જ પોતાના વિકારોને કાબૂમાં રાખી શકે છે અશક્ત દુર્જન ।

૧૧૮

કૂતરાના અવિરૂપ વર્ણન દ્વારા અહીં કવિએ માણસની પામર વિકારવશતા ઉપર ભારે કટાક્ષ કર્યો છે. છેલ્લી લીટીનો પૂર્વાર્ધ તો કહેવત જેવો થઈ ગયો છે.

પૃથક્ક્ષિપ્ત — પરથી ખરડાયેલો

પિટરકકપાલાર્પિતગલ. — જેના ગળામાં હાંડલાનો કાંઠલો ભરાઈ ગયા છે એવો

૧૧૯

ન લુનન્તિ — કાપતા નથી, ઘાયલ કરતા નથી.

કૃશાનુઃ — (કૃશયતિ–નાશ કરીને ઘટાડે છે તે) અગ્નિ

કામ ક્રોધ અને લોભને જીતે તે ત્રણે લોકને જીતે.

ત્રિવિધં નરકસ્યેદં દ્વારં નાશનમાત્મનઃ ।
કામઃ ક્રોધસ્તથા લોભસ્તસ્માદેતત્ત્રયં ત્યજેત્ ॥

— ગીતા ૧૬-૨૧

टिप्पण

सूक्तिसुधा

पृ. ५६. सुकविता यद्यस्ति°— आस्वाद लेवा माटे सरस कविता होय तो मनी आगळ राज्यसुख पण तुच्छ छे अथवा एवो पण अर्थ कराय : 'सरस कविता लखीने, समाजनुं हृदय जीतीने जो लोकोन्नति करी शकाती होय तो एने बदले राजसत्ता द्वारा समाजने काबूमां राखी समाजने सुधारवानो प्रयत्न शा माटे करवो ?'

व्रीडा एटले '*हीन कर्म केम कराय ?*' ए जातनी सद्वृत्तिने जन्म देनारी लज्जा के शरम.

ज्ञातिश्चेत्°— भर्तृहरिना जमानामा पण न्यात-जातना झघडाथी समाज दुर्दशाए पहोंच्यो हशे एटले ज ए कहे छे के जाति (ना झघडा) होय तो बीजा दावानळनी जरूर शी ?

सत्यं चेत्° — प्रामाणिकपणे सत्यनुं पालन करवा जतां माणस एटलो तो तवाई जाय छे के आत्मशुद्धि माटे बीजा तपनी जरूर ज नथी.

कल्पं स्थितं° — माणसनु शरीर कल्प जेटलुं टके तोय तेथी शुं ? मात्र लांबा जीवनथी श्रेयनी प्राप्ति थोडी ज थाय छे ! 'काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते'।

पृ ५७ प्रस्त न हि — गवा कई वस्तु छ क नन माथ बीना कोई वस्तुना भय नथा। दरक वस्तुने थाइ नागनार क रु न कइक उपद्रव होय ज छ

समयच्युति — वगतना उगाड, तक्न जवा त्वी त **च्युति** अतिवाहनम् – पसार थवा ठवु.

आज्ञाफलम् — आना फल्म् यस्य । हुकम करी शक्या–तनु पालन करावी शकवु ए नेनु फल छ त हुकमनु पालन करावावानु सामर्थ्य

पृ ५८ शान्त भावमुपैहि — चित्तशान्ति प्राप्त कर चिन्तन स्थिर राख

अपण्डितानाम् — पण्डा बुद्धि अस्य सजाता अमो पण्डत । न पण्डिता इति अपण्डिता मूर्खा । तषाम् ।

पृ ५९. **विवेकभ्रष्टानाम्°** — माणसे विवेक फगावी दीधा क तनु अनक रीत पतन थवानु **विनिपात** – महापतन सवनाश

गगा स्वर्गमाथी शकरना माथा पर पडी, त्याथी हिमालयना शिखर उपर त्याथी वळी धरतीनी सपाटी उपर एम करती करती सो मुखवा सागरमा पडे छ एम गगाना विवेकभ्रष्ट क स्थानभ्रष्ट थवाथी अध पात थयानी घटना वर्णवीने कवि उपर जणावेला नियम तारवे छे

भोक्तुं न मोक्तुं क्षमाः — विषयान् भोक्तु° — सामान्यपणे माणस एवी दुविधामां के दु स्थितिमां होय छे के तथी ते विषयोनो उपभोग लई शकतो नथी तेमज तेनो मदतर त्याग पण करी शकतो नथी.

दौर्मन्त्र्यान्नृपति° — 'दुर्मन्त्री राज्यनाशाय'। **दौर्मन्त्र्य** – खराब के दुष्ट मन्त्री होवापणुं, बदसलाह

पृ. ६०. कृतान्तः— कृत अन्तयति इति, कृतः अन्तः यन वा। अन्त लावनार, नाश करनार.

अक्षमी — क्षमा न विद्यते अस्य। क्षमा न करनार.

पृ ६१. शास्त्रे वादभयम् — शास्त्रनी बाबतमां पक्षापक्षीनो ने वादनो भय होय छे. वादभयम् ने ठेकाणे 'वादिभयम्' पाठ पण छे.

अस्थैर्येण° — समृद्धि के संपत्तिने माथे अस्थिरता के नश्वरतानी आपत्ति होय ज छे.

कथमहो° — केवु विचित्र के मोहने लीधे अमने शरम पण नथी आवती !

पृ० ६२. तल्पमस्वल्प° — 'शय्या भूमितल्म्'। धरतीनी सपाटी ए ज एक विस्तीर्ण पथारी छे.

सन्तो वनान्तं° — आ बधो संसारनो पसारो नश्वर के क्षणजीवी छे एम ओळखीने डाह्या माणसोए वननो ज आश्रय लीधो छे

उपधानम् — उपधीयन शिर अन इति । उशीकु

आयु' कल्लोल° — जीवित मोजाना जवु चचल छ सरखावो तुलितविसिनी पत्रपयसाम् । तथा 'नलिनीदलगतसलिल तरल तद्वज्जीवितमतिशयचपल्म्'।

बहुतृणम्° — विश्व तरफ सदाय घासनी जम जोवु ईषदसमाप्त तृण **बहुतृणम्** तृणकल्पम् । लगभग घासना जेवु ।

संत्यज निजां° — जलतरगना जेवी पोतानी अस्थिर अवस्था के मनोदशानो त्याग कर

मौक्तिकाञ्जलि

पृ ६८ मनस्वी — प्रशस्त मन अस्ति अस्य इति मनस्विन् । उदार, धीर, श्रेष्ठ चित्तवाळो गुजरातीमा सामान्यत 'स्वच्छदी', 'तरगी 'ना अर्थमा ज वपराय छे

प्रतीकारो व्याधे.° — जे केवळ रोगनु निवारण छे ते ज जाणे सुख छे एवो अवळो ख्याल माणस बाधे छे. तत्त्वत सुख छे के नहि अने होय तो ते शामा छे त जोवानी तस्दी ते लेतो नथी

नीचस्य गोचर° — नाच माणसना दृष्टिपथमा, सकजामा सपडायेला कया माणसने सुख मळी शके वारु ? नीच

राजाना क्षेत्रमा रहीने कोने सुख मळी शके ? **गोचर**—(गो इन्द्रिय, चर चाल्वु, फरवु) इन्द्रियो ज्या सुधी–ज्या–जई अथवा पहोंची शके ते क्षेत्र

परिग्रह — स्वीकारेली वस्तु, वळगाड

पृ० ६६. पत्र नैव°— वसत ऋतु वेसता तमाम वनस्पति पल्लवित थाय छे पण केरडाना झाडने पादडा नथी आवता तमा कई वसत ऋतुनो दोष छे शु ? विधिए कपाळे ल्ख्यु होय त कोण भूसी शके ?

करीर — केरडानु झाड

विवृतद्वारा — विवृत द्वार याज्य ता । जेमने माटे बारणा खोलेला ज छे एवी (एवी रीत)

प्राणि सारि :— प्राणीरूप सोगटा वड.

काळ काळी साथ सागटानी रमत रमे छे एवी पौराणिक मान्यता छ प्राणीओ ए ज ते सागटा छे एम अहीं कह्यु छे कवि नरसिंहरावे पोताना काव्यमा जरा भिन्न — काळ माणस साथे रमत रमे छे एवी — कल्पना करेली छ

मोहथी निज मानिया
शोगटा जे आपणे,
शक्ति त मन धारिया
हा ! रे हरी बीजी क्षणे !

— स्मरणसहिता

सुस्थितम् — सारी रीत स्थिर थयलु, अपाय-विहीन, अविनाशी

दग्धजठरस्यार्थे -- बळ्या पेटने खातर

अवस्था वस्तूनि°— कोई वस्तु महत्त्वनी, कीमती छे के नजीवी छे ते माणसनी गरज अथवा अवस्था उपर के प्रसग उपर आधार राखे छे कोई पण चीज वस्तुत ज नजीवी के महत्त्वनी होती नथी एनुं महत्त्व के तुच्छता सापेक्ष होय छे

पृ० ६७. तनूनपात् — तनु न पातयति जाठर-रूपेण शरीर धारयति, तनूनप घृत अस्ति इति वा तनूनपात् अग्नि । अग्नि जठरमा रहीने खाधेलु अन्न पचावे छे अने शरीरने पडवा देतो नथी तथी शरीरने न पडवा देनार कहेवाय. अग्निमा घी होमाय छे ए प्रसिद्ध ज छे

सर्वे नान्यत्° — डाह्या माणस माटे आ दुनियामा तप सिवाय बीजी कोई कल्याणकारक वस्तु नथी

पृ ६९. सर्वाशापरिपूर्के°— बधानी आशाओ पूर्ण करनार – बधी दिशाओने व्यापनार (व्यापीने) – मेघ दररोज वरसे तोय चातकना मोढामां तो पाणीनां बे चार सूक्ष्म टीपां ज पडवानां दैवे दरेकनो भाग नक्की करेलो होय छे, तेथी वधारे मळवुं असंभव.

भोगः कोऽपि° - कोऽपि – अवर्णनीय, महान.

नित्योदित — सदाय हस्ती धरावतो, शाश्वत टकनारो.

यदस्वादात् — जे (भोग)ना स्वादथी – अनुभवने परिणामे

कां वा वीचिषु°— मोजां, परपोटा, वीजळी, स्त्रीओ, आग, साप तथा नदीनो प्रवाह ए बधां कोई क्षणभंगुरता माटे, तो कोई दगो देनार तरीके जाणीतां छे. आ संसार पण एवो ज छे. तेना विविध स्थावर जंगम भावो प्रत्येनी आसक्ति छोडी दईने शंकरनी उपासना करवामां ज श्रेय छे

प्राणत्राणप्रवणमतिभिः —प्राणोनां त्राणे प्रवण मति. यथा तं. । पोताना प्राण बचाववा तरफ ज जेमनो झोक छे एवाओ वडे.

नृभिः नमद्भिः — नृषु नमत्सु सत्सु-सति सप्तमी जेवो ज अहीं तृतीयानो प्रयोग छे.

अतुलदर्पज्वरभरः — अपार घमंडनो गरमी (शा माटे ?)

नक्षत्रमाळा

' शान्त-शीतळ तजने नमन हजो "

१. जमना पासे नथी विद्या के तप, नथी दान के शील, नथी कोई गुण अथवा धर्मनु पालन, तेओ खरेखर, आ पृथ्वीने भाररूप थई जाण मनुष्यरूप धारण करेलां पशुआ ज होय तम आ मर्त्यलोकमा विचरे छे

२. ज माणस साहित्य-सगीत-क कळा विहोणो छ तने शिंगडा-पूछडा विनानो साक्षात् पशु ज जाणवो घास खाधा विनाय ते जीवे छ ए खरेखर सामान्य पशुओनु अहोभाग्य छे !

[कारण के एवाओ जो घास खावा माड तो पशु ओने भूखे ज मरवानो वारा आव तमनी आवाडी नानी-सूनी नथी]

३. आळस ए माणसना शरीरमां वसतो महान वेरी छे, ज्यारे उद्यम जेवो कोई हितैषी नथी तेनो आश्रय क्या पछी माणसने पडतापणु रहेतु नथी

४. मोडामा कोळियो दीधा पछी, दुनियामा कयो नीच माणस वश थतो नथी ? मोढा पर लोटनो लेप कर्यो होय तो मृदग पण मधुर अवाज करे छे' आखरे माटीना अगवाळो ज ने ?

५. तमे त अमे, अने अमे ते तमे, एवी भावना अत्यार लगी आपणी वच्चे हती, जराय भेद के अतर न हतु त्यारे हमणा एवु ते शु बन्यु के जेथी तमे त तमे थई गया, अने अमे अमे रही गया ?

६. दान, उपभोग अने नाश, एम धनने त्रण गतिओ होय छे जे नथी कशु आपतो, के नथी भोगवतो, तना धननी त्रीजी ज गति थवानी

७. सन्तपुरुषो प्रत्यक्ष शिखामण न आपता होय, तोय तमनी पासे रही तमनी सेवा करवी घटे केमके एमणे सहेज करेली वातो पण शास्त्रनी कोटीए पहोंचे छे [एमांथी ज आपणने जीवनदर्शन मळी रहे छे]

८. समर्थोनी पण हाडमारी कोक वार जोवाने मळे छे जे नीलाम्बरना चकडाथी चन्द्रमा रात्रे वींटळायेलो हतो, त ज ककडा वडे दिवसे सूर्य वींटाय छे बन्नेनी शी कफोडी दशा के बे वच्चे मळीने एक ज धोतियानो ककडो छे

९. हरण, मीन अने सज्जन, ए त्रणे केवळ घास, जळ अने संतोष सेवीने पोतानी वृत्ति (आजीविका) चलावे छे छताय आ दुनियामां (अनुक्रमे) पारधि, माछी अने दुर्जन तमना नाहकना शत्रु बने छे

१०. आपणे भोगोने भोगव्या नथी, पण भोगोए ज आपणने भोगव्या आपणाथी तप नथी थयु पण आपणे ज तवाई गया जिंदगी जीवीने आपणे काळ खुटाड्यो नथी, पण आपणे ज खूटी गया, अने आखरे आपणी तृष्णा घसाई जवाने बदले आपणे ज घसाई गया

अते कमाया शु?

११. घटमाळनी पेठे फरता, के चकडोळनी जम भमता, आ ससारमा एम तो कयो प्राणी मरीने फरी जन्म लेतो नथी? पण जन्म्यो तो ते ज कहेवाय के जेना पेदा थवाथी आखो वश उन्नतिए पहोचे

१२. पर्वतोना दुर्गम स्थानोमा, जगली पशुओ माथे रखडवु पडे त बहेतर, पण मूर्ख के नीच माणसनी सोबतमां रहेवानो प्रसंग तो देवाधिदेव इन्द्रना महेलमा पण न पोसाय

१३. मालतीना फूलोनां जेम, मानवन जनोने माटे बे ज भाग्य सरजायेला होय छे : का तो मोटे लोकोनां माथा उपर विराजमान थवानुं, नहि तो वनवगडामा ज करमाई जवानु

१४. खवडावनारनी आगळ पूछडी पटपटाववी, तेना पगमा पडी, जमीन उपर आळोटतां आळोटता चत्ता थईने पोतानु मोढु अने पेट बताववां, ए तो कूतरु ज करे. ज्यारे गजराज तो आगळ धरेला खोराक तरफ धीरजपूर्वक जोया ज करे अने सो वार खुशामत थाय त्यारे ज खाय.

१५. हलकी कोटीना माणसो विघ्नना भयथी कार्यनो आरभ ज करता नथी मध्यम कोटीना माणसो कार्यनो आरंभ तो करे छे, पण विघ्नो वागतांवेंत बेसी जाय छे; ज्यारे श्रेष्ठ पुरुषो विघ्नोथी वारवार घवाना जाय तोपण एक वार हाथ धरेलुं काम केमे करीने पडतुं मूकता ज नथी

१६. समुद्रमथननो पुरुषार्थ चलावतां, लक्ष्मी, कौस्तुभमणि, जेवा असाधारण मूल्यवान रत्नो मळ्याथी देवो हरखाया नहि, तेम ज हालाहल जेवु भयंकर विष नीकळ्याथी तेओ गभराया नहि. अमृत हाथ न आव्यु त्यां सुधी तेओ विरम्या नहि. धारेली वस्तु प्राप्त न थाय त्यां सुधी धीर पुरुषो पोतानो प्रयत्न छोडता नथी.

१७. हकूमत, कीर्ति, ब्राह्मणोनुं परिपालन, दान, उपभोग तेम ज पोतीकांओनु के मित्रोनुं संरक्षण, आ छ लाभ जेमने हांसल थया नथी, तेमणे राजाश्रय साधीने शो सार मेळव्यो ?

१८. दुष्ट दुर्जन माणस अनेक विद्याओथी मंडित होय तोपण तेनो त्याग ज करवो घटे. माथा परना मणिथी रूपाळो थयेलो सर्प भयंकर नथी होतो शुं ?

१९. वैभवकाळे, मोटा लोकोनु मन पारकाना दुःखो जोई कमळ जेवुं कोमळ थाय छे. ज्यारे, पोताना उपर आपत्तिओ आवी पडतां, ते ज मन दुःखोना प्रहार झीलवा माटे मोटा पहाडना पथ्थर जेवुं कठण अने अडग बने छे.

२०. व्यवहारनीतिमां निपुण एवा लोको वखोडे के वखाणे, भाग्यलक्ष्मी चाहे आवे के जती रहे, मरण आजे ज थाय के युग वीत्या पछी थाय, विचारवान धीर पुरुषो न्यायशुद्ध मार्गथी एक डगलुं पण चळता नथी.

२१. फळ बेसे त्यारे झाडो भारथी नीचे नमे छे; वादळां नवा पाणीना भारथी जमीन तरफ खूब नीचे झूके छे; वैभव वखते सत्पुरुषो पण उद्धत थवाने बदले ऊलटा नम्र थाय छे. परोपकारशीलोनो ए स्वभाव ज छे.

२२. कुंडलोथी नहि, पण वेदशास्त्रना (सद्बोधना) श्रवणथी ज कान शोभे छे कंकणथी नहि, पण सत्पात्रोने दान करवाथी ज हाथ शोभे छे एवी ज रीत करुणाशील माणसना काया चंदन आदिना लेपथी नहि, पण परोपकारना कृत्योथी ज शोभे छे

२३. सत लाको कहेता आव्या छे के पाप करतां वारे, हितकारक प्रवृत्ति तरफ वाळे, रहस्यवातने छानी राखे, खूबीओनी जाहेरात करे विपत्ति वखते साथ नहि छोडे तथा कटोकटीने वखत वहारे धाय,—आ बधा सारा अने साचा मित्रना लक्षणो छे

२४. छेदाया छता वृक्ष फरी ऊगे छे, तेम ज क्षीण थया छतां चद्रमा फरी पुष्ट थाय छ, ए ध्यानमा लई, सत्पुरुषो विपत्तिओथी मूझाता नथी, सकट आवी पडतां विमासणमा पडता नथी

२५ हाथनी थपाटथी फरी फरी पछाडवा छता गोळ दडो फरी फरी ऊछळे ज छे साचु ज छे के साधुवृत्ति वाळाओ पर वीतेली पडतीओ घणु करीने टकती नथी

२६ आय पुरुष पडे तोपण ते दडाना पडवा प्रमाणे, एटले क पडयो के तरत ज पाछो ऊछळवानो ज्यारे पामर, अनार्य पडे छे ते माटीना ढेफा जेवो ज, एटले के ते

पटपो के तरत छिन्नभिन्न थई जवानो. ऊठवानो तो पछी वात ज शी?

२७ धैर्यवान माणसने गमे तेवा संकटथी रिबाव्यो होय तोये तेनो धैर्यगुण भूंसी नाखवो शक्य नथी दिवेटने के मशालने ऊंधी वाळी होय तोपण एनी ज्वाळा कदी नीचे जती नथी, ते तो उपर ज जवानी.

* * *

[नक्षत्रो २७ गणाय छे पण क्याक क्याक वार श्रवण साथे अभिजित उमेरीने एमनी संख्या २८नी करवामां आवे छे, एटले आपणे पण नीचेनो श्लोक उमेरी २८ नक्षत्रो गणी शकीए]

स्यात्तत्वं कमलानां सत्पुरुषाणां परोपकारित्वम् ।
असतां च निर्दयत्वं स्वभावसिद्धं त्रिषु त्रितयम् ॥

२८. कमळोनी लालाश, सज्जनोनुं परगजुपणुं, अने दुर्जनोनी कठोरता, आ त्रण गुणो ए त्रणेयमां स्वाभाविक छे.

सद्‌बोधशतक

'आ मार्ग कल्याण तरफ लई जनारो छे"

मंगलाचरण

ॐ दिशा अने काळ वगेरेथी ज मर्यादित नथी, जे केवळ शुद्ध ज्ञानरूप अने अनंत छे, तथा आत्मसाक्षात्कार ए ज जेने जाणवानु एकमात्र साधन छे, एवा शांत तेजोरूप परमात्माने हु नमन करु छु

१ विद्या ए माणसनु अनेरु रूप छे ए एवु सुरक्षित एवु गुप्त धन छे विद्या ज माणसने अनेक भोगो, कीर्ति अने सुख मेळवी आपे छे विद्या गुरुओनी पण गुरु छे परदेशमा के प्रवासमा होईए त्यारे विद्या ज स्वजननी गरज सारे छे आम बधी रीते विद्या ए ज परम दैवत छे

राजाने त्या पण मान विद्याने होय छे धनने नहि विद्याविहोणो माणस नर्यो पशु ज छे

२. बाजूबंध, चद्र जेवा चळकता हार, स्नान, सुगंधी द्रव्योनो लेप, फूलो के वाळनो शणगार, इत्यादि बाह्य

प्रसाधनो माणसने शोभावता नथी पण संस्कारसंपन्न वाणी माणसे केळवेली होय तो ते ज एकली तेने सारी रीते शोभावे छे

वळी बाजूबंध इत्यादि आभूषणो घसाराथी सतत क्षीण थता जाय छे ज्यारे वाणीरूपी आभूषण सदाने माटे भूषणरूप ज रहे छे

३. हे भाई चातक क्षणवार ध्यान दईने मारी वात *सांभळ आकाशमां नीरद मेघ तो घणा होय छे, पण ते* बधा ज कांई नीरनु दान करे एवा नथी होता केटलाक वरसाद वरसावीने धरतीने तरबोळ करे छे, ज्यारे केटलाक मात्र निरर्थक गाज्या ज करे छे माटे, भाई, जेने जेने तु जुए ते दरेकनी आगळ दीन वचन काढतो नहि

४. शुं करीए? जेओ जाणकार छे तेओ अदेखाईथी *सवाई गया छे* जेओ सत्ताधारी के संपन्न छे, तेमना विवेकशक्ति अहंकारथी वणसी गई छे बाकीना बिचारा सात्र बेसबर छे परिणामे मारु कवित्व अने चातुर्य *मारी अदर ज सुकाई गयु छे*

५. लक्ष्मी चंचळ छे, प्राण पण चंचळ छे जीवन अने जोवन तो सात्र ज चंचळ छे आम आ अति चंचळ अने नश्वर ससारमां निश्चळ एवो तो केवळ एक धर्म ज छे

६. हे राजन्! अमने अमारा आ जाडा वल्कलोथी सतोष छे अने तने तलम रेशमथी सतोष थाय छे. बन्नेनो सतोष तो सरखो ज छ. तेथी बे वच्चेना फरकमां काई अर्थ ज नथी. जेनी तृष्णा विशाळ छे ते भले दरिद्री कहेवाओ ज्यां मनमा तृप्ति छे, त्यां धनवान कोण अने दरिद्री कोण ?

७. जे अजाण होय तेने महेलाईथी राजी करी शकाय; जे सुजाण होय तेने तो तेथी पण वधारे सहेलाईथी राजी करी शकाय पण जराक-सरखा ज्ञानथी जे अर्धदग्ध थयो छे तेने तो साक्षात ब्रह्मदेव पण राजी न करी शके; पछी बीजाओनी तो वात ज शी ?

८. ज्यारे मारुं ज्ञान नहि जेवुं हतुं त्यारे हाथीनी जेम हु मदाध थयो हतो. हुं सर्वज्ञ छुं, एवा गर्वथी मारु मन त वखते फुलायलु रहेतुं. पछी ज्यारे विद्वानो पासेथी थोडुंक थोडुंक हु जाणवा पाम्यो त्यारे मारी मूर्खाईनुं मने भान थयुं, अने जेम ताव ऊतरी जाय तेम मारो गर्व सोंसरो गळी गयो.

९. राजाओनो कोप उग्र होय छे; एमने पोतीकु एवु कोई नथी होतु. होम करनारो जो आहुति आपती वखते पण अग्निने स्पर्श करे तो तेने पण ते बाळे ज छे ने ?

१०. माणसमां जो एक लोभ होय तो एने बीजो कयो दुर्गुण जोईए ? [लोभमां बधा ज आव्या जाणवा.] चाडी खावानी हलकाई होय तो बीजां पापोनी जरूर शी ? सत्य होय तो कशा तपनी शी जरूर ? मन निर्मळ होय तो तीर्थयात्रानी गरज शी ? अने जो भलमनसाई होय तो सगांवहालांओनी शी जरूर ! तेम ज जेने स्वाभाविक प्रतिष्ठा छे तेने आभूषणोनी शी पडी होय ? सारी विद्या जो हस्तगत होय तो पैसानी शी परवा ? अने जो अपकीर्ति फेलाई होय तो मृत्युनुं शुं प्रयोजन ?

११. अरे भाई, तृष्णाने छेदजे, क्षमा धारण करजे, गर्वने त्यजी देजे, पापकर्ममां प्रीति राखीश मा, सत्य ज बोलजे; सज्जनोने मार्गे चालजे, विद्वानोनी शुश्रूषा करजे, सन्मान्य लोकोने मान आपजे, तारा द्वेषीओनां पण मन राखजे, पोताना गुणोनां दणगां फूंकीश मा — तमनी जाहेरात न करतां ए ढांकी राखजे, मेळवेली कीर्ति साचवजे, दीन दु:खियाओ उपर दया करजे. बधा सज्जनो आम ज करता आव्या छे.

१२. ब्रह्मदेव जो बहु कोपाय तो ते कमलिनीना वनमां रहेवानो हंसनो लहावो नष्ट करी शके छे. पण दूध अने पाणी जुदां पाडवानी तेनी चतुराईनी जे कीर्ति लोकोमां गवाई छे, तेनुं हरण करवा ए ब्रह्मदेव पण समर्थ नथी.

१३ तमारी पासे गाळोना भंडार छे एटले तमे भले गाळो आपता जाओ अमारी पासे ए न होवाथी अम गाळ आपी शकीए तम नथी पोतानी पासे ज होय त ज आपी शकाय छ, ए न्याय दुनियामा जाणीतो छे ससलानु शींगडु (जनी मुद्दल हस्ती ज नथी त) कोई कोईने आपतु नथी

१४ हे राजन्! आ पृथ्वीरूपी गायने दोहवाना जो तारी इच्छा होय तो आ प्रजाजनोनु वाछरडाना जेम तु पालनपोषण कर वाछरडु खुश तो गाय पण खुश प्रजानु जो हमेश सारी रीत पोषण थाय तो आ पृथ्वी कल्पलतानी जेम विधविध प्रकारना फळोथी फालशे

१५ तु ज चातकना जीवननो आधार छे एम कोण नथी जाणतु? तो पछी हे मघश्रेष्ठ, तु अमारा दीन वचननी शा माट राह जुए छे?

१७. सांभळो एक पुराणी रूपककथा. पाणी दूध पासे आव्युं एटले दूधे ए अतिथिने पोताना बधा गुणो अर्पण कर्या. दूध पातळुं थयेलुं जोई, लोकोए तेने गरम करवा मूक्युं. दूधने आम ताप थतो जोई ते पाणीए पोतानी जातने अग्निमां बाळी दीधी. पोताने कारणे पोताना मित्र पाणीनी थयेली ए दुर्दशा जोई दूधे अग्नि उपर चडाई करवानो मनसूबो कर्यो. अंते ज्यारे ए दूधनो एना मित्र पाणी साथे फरी संयोग थयो, त्यारे ज ए शांत थयुं. खरेखर, सारा लोकोनी मैत्री आवी ज होय छे.

१८. जिंदगीथी कंटाळेला एक निर्धन माणसे अकस्मात स्मशानमां जईने त्यां पडेला एक शबने जोतां कह्युं, ' हे मित्र, ऊठ अने मारा दारिद्र्यनो भारे बोजो एक क्षण माटे तुं ऊंचक. हुं क्यारनो थाकी गयो छुं, माटे तारुं मरणनुं सुख हुं जरा भोगवी लउं ' त्यारे ' दारिद्र्य करतां मरण ज वधारे सारुं,' एम जाणतुं होवाथी ज शब मूगुं रह्युं.

१९. सिंह साव बच्चुं होय तोपण मदोन्मत्त हाथीना विशाळ गंडस्थळ उपर कूदी पडे छे. पराक्रमी लोकोनो आ स्वभाव ज छे. तेजस्वीपणुं कांई उमर उपर आधार राखतुं नथी.

१३. तमारी पासे गाळोना भंडार छे एटले तमे भले गाळो आपता जाओ अमारी पासे ए न होवाथी अमे गाळ आपी शकीए तेम नथी पोतानी पासे जे होय ते ज आपी शकाय छे, ए न्याय दुनियामां जाणीतो छे ससलानु शींगडु (जेनी मुद्दल हस्ती ज नथी ते) कोई कोईने आपतु नथी

१४. हे राजन्! आ पृथ्वीरूपी गायने दोहवाना जो तारी इच्छा होय तो आ प्रजाजनोनु वाछरडानी जेम तु पालनपोषण कर वाछरडुं खुश तो गाय पण खुश प्रजानु जो हमेश सारी रीत पोषण थाय तो आ पृथ्वी कल्पलतानी जेम विधविध प्रकारना फळोथी फाल्शे

१५. तु ज चातकना जीवननो आधार छे एम कोण नथी जाणतु? तो पछी, हे मेघश्रेष्ठ, तुं अमारा दीन वचननी शा माटे राह जुए छे?

१६. गरम गरम लोटा उपर पडेला पाणीनु तो नाम सरखु जणातु नथी. ए ज पाणी कमळना पादडा उपर मोतीना दाणा जेवु शोभे छे. वळी ए ज पाणी जो स्वाति नक्षत्रने टाणे समुद्रनी छीपमा पडे तो तेनु सरस मोती ज बने छे खरेखर अधम, मध्यम के उत्तमतानो गुण मोटे भागे सोबतने परिणामे ज जन्मे छे

१७ साभळो एक पुराणी रूपककथा पाणी दूध पासे आव्यु एटले दूधे ए अतिथिने पोताना बधा गुणो अर्पण कर्या दूध पातळु थयलु जोइ, लोकोए तेने गरम करवा मूक्यु दूधने आम ताप थता जोईं ते पाणीए पोतानी जातने अग्निमा बाळी दीधी पोताने कारणे पोताना मित्र पाणीनी थयेली ए दुर्दशा जोई दूधे अग्नि उपर चडाई करवानो मनसूबो कर्यो अंते ज्यारे ए दूधनो एना मित्र पाणी साथे फरी सयोग थया, त्यारे ज ए शांत थयु खरेखर, सारा लोकोनी मैत्री आवी ज होय छ

१८ जिंदगीथी कटाळेला एक निर्धन माणसे अकस्मात स्मशानमा जइने त्या पडेला एक शबने जोतां कह्यु हे मित्र, ऊठ अने मारा दारिद्र्यनो भारे बोजो एक क्षण माटे तु ऊचक हु ज्यारनो थाकी गयो छु, माटे तारु मरणनु सुख हु जरा भोगवी लउ ' त्यारे ' दारिद्र्य करता मरण ज वधारे सारु,' एम जाणतु होवाथी ज शव मूग रह्यु

१९ सिंह नाव बच्चु होय तोपण मदोन्मत्त हाथीना विशाळ गडस्थळ उपर कूदी पड छ पराक्रमी लोकोनो आ स्वभाव ज छे तेजस्वीपणु कांई उमर उपर आधार राखतु नथी

२०. अचेतन होवा छता सूर्यकातमणि, सूर्यनो पादस्पर्श, एटले के किरणस्पर्श, थतावेंत जो सळगी ऊठे छे, तो पछी चेतनवतो तजस्वी पुरुष बीजाए करेलो अपकार केम करीने सहन करे?

२१. दैववशात् जो कदी जगत कमळ विनानु थई जाय, तो शुं हंस कूकडानी जेम उकरडानो ढगलो खोतरवा माडशे?

२२. सवारनी छाया प्रारंभे मोटी लांबी होय छे, पण दहाडो चडता ते टूकी थई पोताना ज पग तळे सताई जाय छे—दुर्जनोनी मैत्रीनु पण एम ज छे. एथी ऊलटु, बपोरनी छाया प्रथम नानकडी होय छे, पण पछी धीमे धीमे ए लबाती जाय छे.—सज्जनोनी मैत्री आवी होय छे. आम दुर्जनोनी अने सज्जनोनी मैत्रीमा आवी सवारनी अने सांजनी छाया जेवो भेद होय छे.

२३. विपत्तिने वखते अडग धैर्य उदयकाळे क्षमाशीलता, मत्रीओनी सभामां वाक्चातुर्य, युद्धमा पराक्रम, सत्कीर्ति विषे प्रीति, शास्त्रोना अध्ययननी अवळखा. आ बधु महात्माओने स्वभावसिद्ध ज होय छे

२४. निदयपणु, कारण विनानी लडवड, परधन अने परस्त्री विषे इच्छा, सज्जनोनी तेम ज स्वजनोनी अदेखाई, आ बधा दुर्गुणो दुर्जनोना स्वभावमा ज होय छे

२५. जेओ स्वभावे उदारचरित छे, तेमने नीचेना आभूषणो शोभावे ज छे हाथे सत्पात्रे दान आपवानी टेव, माथे गुरुजनोने चरणे भक्तिपूर्वक नमन करवानी अभिलाषा, मोढामा सत्यथी पावन थयेली वाणी, बन्ने बाहुमां अजोड पराक्रम, हृदयमा निष्पाप वृत्ति, अने कानमा शास्त्रोनु श्रवण अने तमनु ज्ञान पछी बीजु ऐश्वर्य एमनी पासे न होय तो शु थयु ?

२६. सूर्य काई पण जातनी याचनानी राह जोया वगर ज कमळना समूहने फूलवे छे, तेम ज चन्द्रमा पोयणाना समूहने विकसावे छे अने मेघ पण वगर विनतीए दुनियाने जल आपे छे खरेखर, सज्जनो पोतानी मेळे ज पारकाना हित माटे उत्साहपूर्वक प्रयास करे छे

२७ धार्यु काम पार पाडवा मांगतो टेकीलो माणस जिंदगीमा आवता सुखोने के दु खोने गणकारतो नथी

ક્યારેક એ જમીન પર સૂએ તો ક્યારેક પલંગ પર પોઢે, ક્યારેક કેવળ શાકભાજી ખાઈને જીવે તો ક્યારેક કમોદનો ભાત આરોગે ક્યારેક ચીંથરાંનો કથા ઓઢે તો ક્યારેક ચળકતાં કીમતી વસ્ત્રો પરિધાન કરે સુખ કે દુઃખ કાંઈ જ એને રોકી શકતું નથી.

૨૮. સામી છાતીએ ઘા ઝીલેલાને રણમાં વિજય મળો કે સ્વર્ગ, પણ એ પહેલાં, વડે પક્ષની સેના તરફથી નીકળેલ 'સાધુ, સાધુ, શાબાશ, શાબાશ'નો પોકાર તેના કાનને ખરેખર અત્યંત આનંદ આપનારો હોય છે

૨૯ સારું કે નરસું કોઈ પણ કામ કરતી વખતે, ડાહ્યા માણસે તે કામનું પરિણામ શું આવશે તેનો પ્રથમથી જ પ્રયત્નપૂર્વક વિચાર કરવો ઘટે જેમકે અતિ ઉતાવળથી વગર વિચારે કરેલ કર્મોનું પરિણામ શલ્યની જેમ મરણ પર્યંત હૃદયને બાળનારું નીવડે છે

૩૦. સજ્જનોનો સમાગમ બુદ્ધિની જડતા હરે છે, વાણીમાં સત્યનું સિંચન કરે છે, પ્રતિષ્ઠા અને ઉન્નતિનો રસ્તો બતાવે છે, પાપને પરહરે છે, ચિત્તને નિર્મળતાની પ્રસન્નતા બક્ષે છે અને દશે દિશાએ કીર્તિ ફેલાવે છે – કહો ત્યારે સત્સંગ માણસને માટે શું નથી કરતો?

३१. वैभवनी शोभा छे सौजन्य; बहादुरीनी शोभा छे वाणी परनो काबू, ज्ञाननी शोभा छे वैराग्य अने चित्तशान्ति तेम ज विद्यानी शोभा छे विनय, धन दानथी शोभे छे, तपनी शोभा अक्रोध छे अधिकारनी शोभा क्षमा छे, धर्माचरणनी शोभा निरालसपणामा छे, अने आ बधाना मूळमा अने बधाने शोभावनारु परम भूषण तो शील-चारित्र्य छे.

३२. बधा लोकोने वहालु लागनारु अने स्वर्ग, मृत्यु, पाताल आदि बधा लोकमा इष्ट गणायेलु शील अथवा चारित्र्य जे मनुष्यना रोमरोममा विकसे छे, तेने माटे अग्नि पाणी जेवो शीतळ बने छे, दरियो सहेलाईथी पार करी शकाय एवी नानी नीक जेवो क्षणवारमा बने छे, नगाधिराज मेरु नानकडी शिला जेवो बने छे, सिंह एकाएक मृगला जेवो गरीब बनी जाय छे विषधर महा भुजग फूलहारना दोरा जेवो बनी जाय छे, तेम ज विषरस पण अमृतवृष्टि जेवो बने छे, एटले के झेर पण पोतानी मारक शक्ति छोडी दई अमी दरसावे छे

---

* बहादुर माणस पोतानां वखाणो न फूके, बकवाद न करे, ए ज एने शोभे.

धृष्ट मनाय छे, दूरथी सेवा करे तो ए गमार गणाय छे सहनशील होय तो ते डरपोकमा खप छे, पण जो ए सहन न करे तो मोट भागे एने खानदानी विनानो ठरावववामा आवे छे आम सेवाधर्म भलभला योगीओ पण न साधी शके एवो गहन, विषम अने कफोडो छे.

३७. न्याय अने सदाचारथी लाधती आजीविका विषे प्रीति राखवी, प्राण जवानो समय आवे तोपण मेलु काम हाथे न थवु, दुर्जन लोको आगळ ता याचना न ज करवी, पण मित्रनी पासे पण, जो ते निर्धन थयो होय तो कशु न मागवु, विपत्तिमा पण दीन न बनता माथु ऊचु राखवु अने आपद्धर्मनी वात न करता उच्च आदर्श सेववो, एटले के सकट समयमा पण धीरोदात्त वर्तन राखवु, अने महानुभावोने पगले चालवु,—आवु आ खाडानी धारे चालवा जेवु विकट असिधाराव्रत सज्जनोने कोणे बताव्यु हशे वारु ?

३८. समस्त भुवनोनो उतरडने शेषनाग पोतानी विशाळ फणा उपर टकावी वहन करे छे, ते शेषने काचबानो राजा (कूर्मावतारी विष्णु) पोतानी पीठ उपर हमेश धारण करे छे, ते काचबाने वळी सागर रमकडानी जेम सहेजे पोताना खोळामा बेसाडी दे छे कहव्यु आश्चर्य! मोटाओना चारित्र्यनी महत्ताने मर्यादा ज नथी महात्माओनी विभूतिओ अत के पार वगरनी होय छे

३९. कदी जाहेरात तथा तेम गणुमानु दान आपवु, अतिथि घर आव्यो होय त्यारे उत्साहथी तेनी आगतास्वागता करवी बीजानु भलुं करीने ते बाबत मौन राखवु कोईए उपकार कर्यो होय तो जाहेरमां तेनो स्वीकार करवो, संपत्तिमां गर्व न करवो, पारकानी निंदा के अपमान थतु होय एवी वातो न करवी, आवु आ अति विषम असिधाराव्रत सज्जनोने कोणे बताव्यु हशे वारु?

कांईए नहि, ए तो एमनो स्वभाव ज छे

४८. भूखने लीधे गमे तटलो दूबळो पडयो होय, घडपणथी कृश थयो होय, गात्रो बधां ढीलां पडवाथी भारे कठण दशामां आवी पडयो हाय, तेजमात्र नीकळी गयु हाय, एटलु तो शु पण प्राणनो ज नाश थवानो वारो आव्यो होय तोपण, मदोन्मत्त हाथीओना गंडस्थळो फाडीने तेमांना मोती जेवा मासना कोळिया भरवानी ज इच्छा राखनारो, मानीओनो अग्रेसर एवो सिंह अन्य जानवरोनी पेठ कदी सूकु घास खाशे खरो?

मानधन पुरुष गमे तटली विषम स्थितिए पहोंच्यो होय तोय एनी शानने न छाजे एवु हलकु काम करवा तैयार थाय ज नहि

४१. पोतानु पेट भरवाना ज उद्योगमा रच्यापच्या क्षुद्र जना तो हजारो पडला छे ज्यारे परार्थने ज ज स्वार्थ माने छे एवो सज्जनोनो अग्रेसर कोईक ज होय छे

नदीपति समुद्रनु पाणी वडवानल पीए छे ते कदी न धराय एवु पोतानु पेट भरवा माटे. ज्यारे ए ज समुद्रनु पाणी मेघ पीए छे, त उनाळाथी थतो जगतनो ताप तोडी नाखवा माटे ज

४२. मन, वचन अने शरीरमा जेआ पुण्यामृतथी भरेला छे, उपकारनी परपराथी त्रणे लोकने जेआ प्रसन्न करे छे, अने पारकाना राई जेवडा अल्प गुणाने पर्वत जेवडा मोटा करी बतावी जेओ पोताना हृदयकमळनो वकास साधे छे, एवा सत पुरुषो कटला हशे ?

४३ सज्जनोनी आ केवी रीत के तओ नम्र थईने पोताने ऊचे लई जाय छे पारकाना गुणानी कदर करीने पोतानु गुणज्ञपणु (अने त द्वारा गुणीपणु पण) स्थापित करे छे पारकाने काजे बहोळा पाया उपर मोटा कामा अखड चलावीने त द्वारा ज ज कई पोतानो स्वार्थ सधाय त साधे छे, अने आक्षेपना एटले के निंदाना कठोर शब्दोथी जेमना मुख वाचाळ बन्यां छे एवा दुष्ट लोकोनी हीनताने पोताना क्षमाशील आचरणथी ज उतारी पाड छे

सतायलु छे, अहीं शरणे आवेल पर्वतोनो समुदाय सूए छे, तो अहीं ज ए सागरने धीमे धीमे बाळी नाखनार वडवानल पण प्रलयकाळना बधा अग्निओने साथ लई घर करी बेठो छे खरेखर, सागरनु हृदय केटलु बधु विशाळ, सामर्थ्यवाळु अने भार खमनारु छे

['क' एटले पाणी. 'के' एटले पाणीमा (पडेलु) शव-त केशव एवो केशवनो अर्थ कराय छे प्रलयकाळ पछी श्रीविष्णु शबनी पेठे निश्चेष्ट थईने क्षीरसागरमा सूता रहे छ ते परथी]

४७ आ विशाळ पृथ्वी सागरथी वींटळायेली एटले के सीमित छ ए जलनिधि सागर पण सोएक योजन लेटलो हशे सतत प्रवास करनारो सूर्य अनत गणाता आकाशनु पण माप काढे छे एम बधी वस्तुओ स्पष्ट देखाती मर्यादानी छापथी एटले के मुद्राथी अकायेली छे फक्त सज्जनोनी प्रतिभा ज अमर्याद होई, सर्वत्र विजय पामे छ

४८. पोतानो स्वार्थ तद्दन जतो करीने बीजानु हित साधनारा आ लोको सत्पुरुषो छे स्वार्थने आच न आवे एवी रीते जेओ परहित साधवानो उद्यम आदरे छे, तओ सामान्य कोटिना गणाय जेओ स्वार्थने खातर परकाना हितने हणे छे तओने मानव रूप धारी राक्षसो कही शकाय

हत जओ काई पण मनत्य जिना पारकाना हितना नाश करवाने मढी पल्ला होय छे तमने कया नामथी आळखवा ते समजातु नथी

४९. ते अभागिया माणस आ कर्मभूमिमा आव्या छता तपाचरण करता नथी, सत्कर्म करीने पातानी जिदगीनो सदुपयोग करवाने बदले तुच्छ कर्मोमा अमूल्य जीवन गिमाडे छे, ते गरेखर जाणे नीलमणिनी बनावेली तपेलीमा चदनना जेवा बळतणथी तलनो खोळ पकवे छे, आकडाना मूळिया मेळववा माटे सानानी हळपूर्णाथी जमीनने खेडे छे अथवा कपूरना झाड कापी कादरानी आसपास तनी वाड बनावे छे, नीजु शु ?

५०. एवा सुवर्ण पर्वत मेरु, के रजत पर्वत कैलासने लईने शु करीए के जेने आश्रय उगेला वृक्षा, हता तेवा ने तेवा ज वृक्षा रहे छे अमे तो दक्षिणना मलय पर्वतने ज मान्य गणीए छीए केम के तेना आश्रयने कारण कक्कोल लीमडो अने इन्द्रजवना वृक्षो पण चदन बनी जाय छे

५१. [जुना वारमा पर्वतोने पाखो होवाथी तओ उडी उडीने मनुष्यवस्तीने दबावी देता हता अत इन्द्रे वज्र फेंकी फेंकीने पहाडोमा पग कापी नाख्या ए

घामाथी ज नदीओ वहेवा लागी पहाडो परंतु ए मकट जोई, हिमालयना दीकरा मैनाक सगावहालाओना त्याग करी, समुद्रमा डूबकी मारी, अने पोतीकानां सुखदु:ख साथे एकरूप थवाने बदले, पोता पूरतो ज विचार करी एणे पातानों जान बचावी ए पौराणिक कथा आगळ करी कवि कहे छे]

मातेला इन्द्रे फेंकेला वज्रना सतत प्रहारोथी, के जे प्रहारो अग्निनी उपराउपरी ज्वाळाओ बहार पडती होवाने लीधे विशेष दुःसह थया हता ते प्रहारोथी पाख कपाई जाय तो ते मैनाक माटे वहेतर हतु, पण पोताना पिता, हिमालय, संकटमा सपडाईने असहाय बन्या होय एवे वखते, तेनो कशो ख्याल राख्या वगर, केवळ पोतानी जातने बचाववा खातर महासागरना पाणीमा भूसको मारी संताई जवु, ए तेने माटे साचे ज उचित न हतु

५२. जेमनु मन संतापना सुखने लाध खीलेलु छे, तेमना आनंदमा जेने कारण कशो फेर पडता नथी, अने जेमनी बुद्धि धनलाभथी व्याकुळ थई छे, टेमनी तृष्णा पण जेना द्वारा हणाई नथी,– एवा अपार संपत्तिनो भंडार (सुवर्णपर्वत मेरु) विधानाए काने माटे सर्ज्यो हशे ? आखरे जेनु सुवर्णमाहात्म्य पोताना अंदर ज समाई गयलु छे एवा मेरुना मारी आगळ कशी कदर नथी

[पाठातर स्वीकारीए तो आ ज श्लोक नीचे प्रमाणे अर्थ आपे छे]

जमनु मन सतोषसुखथी जागृत थयु छे, तमने माट ज माटीथी जुदा नथी, अने जेमनी बुद्धि धन-लाभन लीधे आकळी थई छे, तेवा पामर लोको जना सुधी पहाची शकता नथी, — एवा ए अपार सपत्तिनो भडार विधाताए आम कोने माटे बनाव्यो हशे?

जेनो सुवर्णमहिमा पोतानी अदर ज समाई गयो छे, लोभी के सतापी कोईना ज कामना नथी, तरो मेरु मने आकर्षी शकता नथी

५३ जीवडाओना गूचळाथी खदबदतु, लाळथी भीनु थयलु, दुर्गंध मारतु जोता ज चीतरी चडे एवु तथा मास विनानु एवु माणसनु हाडकु अत्यन्त स्वादथी पात करडतो होय, तवे वखत कूतरा, देवोनो राजा इन्द्र पासे आवे तोय, तने जोईने शरमातो नथी, केमके क्षुद्र प्राणी पोते सघरेली के अपनावेली वस्तु केटली तुच्छ छे एनो ख्याल करी ज शकतो नथी

५४. अमृत टपकतु होय, एवा मधुर बोधवचनोथी ज जे माणस दुष्टने सन्मार्गे आणवानी हाम भीडे छे, त जाणे कमळना कोमळ ततुओ वडे मदोन्मत्त हाथीने बाधवाना प्रयत्न करे छे, अथवा जाणे शिरीष फूलनी

પાખંડીની વિનારથી હીરાને પાસા પાડવાનો પ્રયત્ન કરે છે, અથવા જાણે મધના એક ટીપા વડે ખારા મહાસાગરને મધુર બનાવવાનો પ્રયત્ન કરે છે અર્થાત્ એ વૃથા પ્રયાસ છે

૫૫ મગરની દાઢમા ભરાયેલુ રત્ન જોર કરીને દખત વહાર કાઢી શકાય, ઉપરાઉપરી આવતા ઉછળતા મોજાઓથી ભીષણ બનેલા તોફાની દરિયાને પણ વખત તરીને પાર કરી શકાય, તેમ જ છછેડાયલા સાપને પણ કદાચ ફૂલની જેમ માથે ધારણ કરી શકાય પણ હઠ પકડીને સામા થઈ બેઠેલા મૂર્ખ માણસના ચિત્તનુ સમાધાન કદાપિ ન કરી શકાય

૫૬ ઘાણીમા પ્રયત્નપૂર્વક પીલવાથી રેતીના કણમાથી પણ વખત માણસ તલ મેળવી શકે, તરસથી પીડાતો કોઈ માણસ મૃગજળ પીને પણ પાતાની તરસ છિપાવી શક, પૃથ્વીપર્યટન કરતા કરતા માણસને કદાચિત્ સસલાનુ શિગડુ પણ હાથ આવે, પણ જીદ પકડીને સામા થઈ બેઠેલા મૂર્ખ માણસને કદાપિ આરાધી ન શકાય

૫૭. શ્રીમતાઈ હતી ત વખતના જેવી જ અવિકળ ઇન્દ્રિયો આજે છે, એ જ કર્મ છે, એ જ અકુંઠિત બુદ્ધિ છે, વાચાશક્તિ પણ એ જ છે, અને પુરુષ પણ એ જ છે છતા, પૈસાની હૂફ જતી રહેતાવેંત માણસ જુદો જ બની જાય છે એ કેટલુ બધુ વિચિત્ર !

५८ शास्त्रभूत शब्दोथी जेमनी वाणी सुन्दर बने छे अने जेमनी पासे वेदादि शास्त्रोनुं ज्ञान शिष्योने आपी शकाय एवुं छे (एटले के जेओ पोतानुं कीमती ज्ञान शिष्योने सफळ रीते आपवानी शक्ति धरावे छे) एवा विख्यात कविपंडितो जे राजाना देशमां निर्धन दशा भोगवे छे ते ते राजानी नगुणाई छे. कविओ तो संपत्ति विना पण बादशाह होय छे. मोंघामूला रत्नोनी किंमत ओछी आंकनार नादान रत्नपारखुओ ज निंदापात्र होय छे, नहीं के रत्नो.

५९ माणसमां जो लज्जाशीलता के मर्यादा होय तो ए जडता मनाय छे. व्रत करवा तरफ रुचि होय तो ते दंभ गणाय छे. पवित्र आचरण जो एने पसंद होय तो ए कपट के धूर्तता ठराववामां आवे छे. शूर माणसमां निर्दयतानुं आरोपण थाय छे. ए ज माणस जो शांत के धीमो होय तो ए एनी दुर्बलता गणाय छे. ए जो मौन सेवी होय तो ए बेवकूफी अने वक्ता होय तो ए वाचाळता कहेवामां आवे छे. माणस प्रिय वातो करे तो ए दीनता अने तेजस्विता बतावे तो ए घमंड गणाय छे. त्यारे एवा कया गुण छे के जे दुर्जनोए दखाड्या नथी ?

६०. ज्ञान आदि परम तत्त्वो जेमने प्राप्त छ, एवा पंडितोनी अवगणना करीश मा तणखला जेवी तुच्छ संपत्ति तेमने बंधनकारक थई शकती नथी ताजा ज वहेवा माडेला मदना प्रवाहथी जेमना गंडस्थळो काळा काळा थया छे एवा हाथीओने कमळना तंतुओ रोकी नथी शकता

६१ लूटनार के हरण करनारनी जे नजरे पण चडतु नथी जे हमेश माणसनु अकल्पित कल्याण ज करे छे, याचकोने सतत आप्या कर्यु हाय तोय लूटवाने बदले ज पराकोटी सुधी वध्या ज करे छे, अने कल्पनो अन्त आवे तोय ज नाश पामतु नथी, एवु विद्या नामथी ओळखातु, आतरिक धन जेमनी पासे छे, तेमनी साथे हे राजाओ, अभिमाननु वर्तन छाडी दो एवाओ साथे कोण हरीफाई करी शके ?

६२ कोई पण प्राणीनो वध न करवो, पारकानु धन हरण करता चित्तने रोकवु, साचु बोलवु, योग्य समय, पोतानी शक्ति प्रमाणे दान आपवु, परस्त्री विषे वातचीत सरखी पण न करवी, तृष्णा एटले के वासनाना प्रवाहना छेद करवा, वडीला प्रत्ये विनयशील थवुं अने प्राणीमात्र प्रत्ये दया राखवी आवो आ आचार बधा धर्मोना तमाम शास्त्रोने संमत छे अने ए ज कल्याणनो सार्वभौम मार्ग छे

६३ माणसमां जो क्षमा होय तो आत्मरक्षण माटे कवच — बख्तरनी शी जरूर? जो एनामां क्रोध होय तो बीजा शत्रुओनी जरूर शी? न्यातीला होय तो पछी अग्निनी जरूर शी? जो अनुकूळ स्नेही मित्रो होय तो दिव्य औषधि राखवानी आवश्यकता शी? जो दुर्जनो पासे होय तो शुं सर्पो पण जोईए छे? अने जो सत्कारवती विद्या केळवेली होय तो धननी किंमत शी? जो लाजलज्जा होय तो आभूषण वगर शुं नडवानुं हतुं? अने जो सारुं काव्य रचवानी शक्ति होय तो पछी हकूमतनी शी तमन्ना?

६४. [माणस सूतो होय, उन्मत्त थयो होय अथवा सङ्कटमां फसायो होय त्यारे तेनी सलामती जोखममां होय छे हवे ए ज गफलत जो मोटा जंगलमां के रणमां होईए त्यारे, शत्रु के अग्नि के जळथी घेराया होईए त्यारे, अथवा महासागरमां के पर्वतनी टोचे ऊभा होईए त्यारे आवी पडे तो तो पूछवुं ज शुं? पण एवे ठेकाणे एवी अवस्थामां पण, पूर्वे करेलां पुण्योने लीधे ज माणस बची जाय छे — ए भाव व्यक्त करता कवि कहे छे :]

वनमां के रणमां, शत्रु, जळ के अग्नि वच्चे, महासागरमां के पर्वतनी टोचे, माणस सूतो होय, उन्मत्त अवस्थामां होय के कफोडी दशामां पड्यो होय त्यारे, पूर्वे करेलां पुण्यो ज एने रक्षे छे

६५ हे साधा, तारे ना इच्छित फळ भोगवबु हाय तो अनक गणा कठयराना कडाक्षमा पडीश मा फक्त सर्व शुभ फळ आपनारी, ऐश्वर्यवती सक्रियानी उपासना कर के जे दुष्टोने साधु बनावे छे, मूर्खोने विद्वान बनावे छे शत्रुओने मित्र बनावे छे अज्ञातने मुज्ञात बनावे छे अन हालाहल जेवा भयानक येरने पण जोतजातामा अमृत बनावी दे छे

६६ जे काक घरमा अनेक माणसो रहेता हता त्या मात्र एक ज बाकी रह छे वळी ज्या एक हतो त्या वखत जता घणा थई जाय छ अन अत त्या एक बाकी रहेतो नथी आम रात अने दिवसन जाण त ब पासा होय तम, हाथमा नचावता, भगवान काज प्राणीओना सोगठा बनावीने आ जगतना पट उपर भगवती काली जाड रमत रम छ

६७ [पाताना जीवननी विफळता वणवता एक आश्रित कहे छे]

विकट स्थळोने साथ दुगम एवा अनक प्रदेशामा हु रखड्या पण कशु फळ मन मळयु नाह पाताना जातिन अन कुळन उचित एवु अभिमान छाडी दइ पारकानी चाकरी करी पण त वधी एळ गइ रखेने कोइ हाकी काढश एवी शका हमशा मनमा राखता,

७०. ज्यां सुधी आ शरीर रोगरहित अने स्वस्थ छे, ज्या सुधी घडपण दूर छे, ज्या सुधी इन्द्रियोनी शक्ति खवाईने क्षीण थई नथी अने ज्यां सुधी आयरदा खूटी नथी, त्या सुधी ज डाह्या माणसे पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे महान प्रयत्न आदरवो जोईए

घरने आग लागी जाय त्यारे कूवो खोदवानु काम शरू करवु ए वळी केवु !

७१ खावा माटे फळ पूरता छे, पीवा माटे मीठु पाणी छे, सूवा माटे धरतीनी पीठ छे, पहेरवा माटे झाडनी छालोना वल्कल छे मारे वधारे शु जोईए ? अने तेथी ज, एकाएक प्राप्त थयेली नवी संपत्तिरूपी मदिराना सेवनथी जओनी बधी इन्द्रियो भान भूली गई छे, एवा दुर्जनोनी तुमाखी सहन करवाने जराये मन थतु नथी

७२. उदार हृदयवाळी केटलीक धन्य विभूतिओए पूर्वे आ जगत निर्माण कर्यु, बीजा केटलाकोए एना पालननो भार उठाव्यो, एथीय बीजा केटलाकोए ए ज जगतने जीतीने, तणखलानी पेठे एने दानमा आपी दीधु, अत्यारे पण केटलाक धीरोदात्त आर्य पुरुषो आ चौद भुवनोनो उपभोग लई रह्या छे आवी स्थितिमा बे चार शहेरोनी मालिकी मळतावेंत माणसो आटलो बधो गर्व शानो राखता हशे ?

७३. तुं अधिकारसंपन्न राजा छे, ज्यारे अमे पोताना आचार्यनी सेवा करीने मेळवेला ज्ञाननुं अभिमान राखी उन्नत थवा मागीए छीए. तारी कीर्ति तारा वैभवने कारणे छे, ज्यारे अमारी कीर्ति कविओ दसे दिशामां फेलावे छे. आवी रीते, हे अभिमानी राजा आपणी वच्चे मोटो तफावत छे. जो तुं अमने जाईने मों फेरवी लेतो होय तो अमे पण बिल्कुल बेदरकार छीए.

[मानधनाति' ने ठेकाणे 'मानद नाति' पाठ लेवो वधारे सारो छे. ए पाठभेद लेतां श्लोकनो आ अर्थ थाय—]

तुं सिंहासनारूढ थयेलो अधिकारसंपन्न राजा छे, तो अमे पण अमारा गुरुजननी रीतसर सेवा करीने मेळवेला ज्ञानना सदभिमानथी अने आत्मविश्वासथी माथुं ऊंचुं राखीए छीए. तुं तारा वैभवने लीधे प्रख्यात छे, तो अमारी कीर्ति पण कविओ दसे दिशामां फेलावे छे. एवी रीत, हे मानद राजा, आपणा बेनी वच्चे झाझो तफावत नथी. तेम छतां जो तुं अमारे विषे बेपरवा होय तो अमे पण तद्दन बेदरकार छीए.

७४. सेंकडो राजाओ जेने भोगवतां एक क्षण पण खाली रहेवा देता नथी, तेवी पृथ्वी मळतां राजाओने आटलुं अभिमान शीदने थाय छे? पण एमनी वात जवा दईए. अहीं तो ए ज पृथ्वीना एक कटकाना कटकानुं

एक नानकडुं बटकुं मालिकीनु थतां, विषाद मानवाने बदले आ जडसु जमीनदारो ऊलटा राजी राजी थाय छे!

७८. खरी रीते जोवा जईए तो आ पृथ्वी जळ-रेषाथी–पाणीनी नीकथी–विंटळायेलो एक माटीनो गोळो छे, अने ए आखानो विचार करीए तोये ए केटलो बधो नानो! एने माटे पण सेंकडो युद्धो लडीने राजाओ एना ककडा करी, एक एकने भोगवता जाय छे. एवा ए क्षुद्र अने अत्यत दरिद्री राजाओ हमेशा दान आपे ज छे एम नथी. कोक वखते आपे, अने कोक वखते न पण आपे. एवाओ पासेथी पण एक धनकणनी आशा राखनारा अधम पुरुषोने अनेक वार धिक्कार हजो.

अथवा

आ पृथ्वी छे शु? पाणीनी नीकथी वींटळायेलो एक माटीनो गोळो. अने ते आखो पण केवळ एक अणुमात्र ज छे ने? हवे सेंकडो युद्धो लडीने राजाओना टोळां एना पण भागला करीने ज एने भोगवे छे. एवा ए क्षुद्र अने अत्यन्त दरिद्री लोको कोईने अल्पस्वल्प दान आपे अथवा न पण आपे. तेमनो दोष शो काढवो? पण एवाओ पासेथी पण धनकणनी आशा राखनार अधम लोकोने तो अनेक वार धिक्कार ज हजो.

७६. गगाना तरंगना बरफ जेवा ठंडा तुषारथी शीतल बनेलां अने विद्याधरोए आराम माटे बेसीने सुदर

थतावली त्यां हिमाल्यनी पवित्र शिलाओने शु थयों नाद पाता गयां छे ? जयां मानव अपमान वहोरी लईने पण पारवान त्यां मीरानुं गाईने जीववामां रावे छे ?

७७. [संस्कृतमां एक कहेवत छे 'गङ्गाजलमात्रेण दासी कुरुकुरायते' शफरी एक बहु ज नानकडी माछली होय छे, एने चांगळा जेटलु पाणी मळे तो तरवामां ए राजी थईने फुर फुर नाचे छे, पण ए मीचारीनी शक्ति केटली ? एना नाचवाथी शु महासागर प्रक्षुब्ध थवानो हतो !]

जे मनस्वी छे तेने आ नर्मीवुं ब्रह्माण्डनामनुं कूडाळुं थाडु ज लोभावी शकवानुं हतुं ? नानकडी शफरीना कूदकूद करवाथी सागर कदी क्षोभ पामे खरो ?

७८ मांस विनाना, अने मात्र थाडाक स्नायु अने चर्बीना पण चाटी रहेवाथी मेलो जणातो, हाडकानो कटको जडवाथी कूतरो राजी राजी थाय छे, जोके तेथी एनी भूख तो मटी शकनी नथी ज ज्यारे सिंह कोई शियाळ खोळामां आवी पडयु होय तोये, तेने त्यजी दईने हाथीने ज मारे छे

बहु ज छे के काई पण प्राणी, संकटमां सपडायु होय तोय पोताना व्यक्तित्वने शोभे एवु ज फळ मेळववा मागवानु.

७९. कमलदल उपरना पाणीनी जेने उपमा अपाय छे, एवा आ नश्वर प्राणोने माटे, सारो नरसानो विवेक छोडी दई अमे शु शु नथी कर्यु ? केम के धनना मदथी जेमनी लागणीओ वहेर मारी गई छे, एवा मोटा माणसो आगळ, साव निर्लज्ज थईने आत्मस्तुति करवानु पातक पण अमे करी चूक्या !

८०. हे हृदय, रोज उठीने पारकाना चित्तोनी अनेक रीते आराधना करी तेमने प्रसन्न करवा माटे तु शा माटे आ महा क्लेशनो कादव खूंदे छे ? तु जो पोते अदरथी ज प्रसन्न थाय तो तारामा चिंतामणिना गुणोनो उदय एनी मेळे थशे, अने पछी तारो अनासक्त सकल्प तारी कई इच्छा परिपूर्ण नहि करे ?

८१. कोई ठेकाणे वीणावादन चाले छे, तो कोई ठेकाणे 'हाय रे हाय'ना रोदणा संभळाय छे, कोई ठेकाणे विद्वानोनो काव्यशास्त्रविनोद चालतो होय छे, तो कोई ठेकाणे पीधेला दारुडियाओर्नी लडवाड चालती होय छे, कोई ठेकाणे सुदर ललनाओ देखाय छे, तो कोई ठेकाणे गलत्कोढथी पीडाती स्त्रीओ नजरे पडे छे. साचे ज आ ससार अमृतमय छे के विषमय तेनी कांई ज खबर पडती नथी

८२. धनरूपी तुच्छ मृगजळना सागरनुं पाणी पीवा मथता हे जडबुद्ध पशो, तें करेलां केटलां केटलां कामो केटली बधी वार पडी भांग्यां नथी शुं? तेम छतांय तारी उत्कट वासना हजी विराम पामती नथी, एम ज तारुं हैयुं भांगी जई एना सेंकडो टुकडा थता नथी. ए उपरथी लागे छे के जरूर तारुं हृदय वज्र जेवा कठण पथ्थरनुं ज बनेलुं छे

८३. आंखना पोपचांना पलकारा जेटली ज जेनी आवरदा छे एवो देह ज्यां मळ्यो छे त्यां खबर नथी पडती के परशु शुं सुरनदी गंगाने किनारे तपाचरण करता रहीए, के सद्गुणमंडित पत्नीनी सोबतमां संसारी जीवन गाळीए? न्याय, सांख्य वेदान्त आदि विविध शास्त्रोनुं अने दर्शनोनुं अध्ययन करीए, के जातजातना काव्यामृतना मधुर रसनुं पान करीए? ('रात टूंकी अने वेष झाझा' जेवी स्थिति थई छे.)

८४. ऊंची आलेशान हवेली, सज्जनो वच्चे मान्यता पामेला दीकराओ, अगणित संपत्ति, कल्याणी प्रिय पत्नी, जुवानीनी अवस्था, ए बधुं जोईने, अज्ञानने लीधे मूढ बनेलो माणस आ विश्वने चिरकाळ टकनारुं माने छे अने खुशीथी संसाररूपी तुरंगमां प्रवेश करे छे, ज्यारे आ बधी वस्तुओ क्षणभंगुर छे एम जे जोई शके छे ते धन्य माणस आ बधी वस्तुओनो सदंतर त्याग करे छे

८५. हे हरण, तु, जे धनिकोना मोढा तरफ वारे वारे जोतु नथी, तेमनी आगळ खोटा खोटा खुशामतना वचनो बोलतु नथी, एमना गर्वभर्या वचनो साभळतु नथी अने आशानु मार्यु एमनी पाछळ पाछळ दोडतु नथी, भूख लागे त्यारे कुमळु घास खाई ले छे अने सूवानो वखत थय सुखेथी सूई जाय छे, अने आम सतोषवाळु जीवन गाळे छे तो मने कहे के तें क्या अने क्यु तप तप्यु के जेथी आटली सिद्धि तने प्राप्त थई?

अथवा

हे कुरग हरण, त क्यु तप सेव्यु छे, कय ठेकाणे साधना साधी छे ए मने कहे केम के तु धनिकोना मोढा तरफ वारे वारे जोतु नथी तेमनी खोटी खोटी खुशामत करतु नथी, तेमना गवभर्या वचनो साभळतु नथी अने भारे आशानु मार्यु एमनी पाछळ पाछळ दोडतु नथी खावानो वखत थय तु कुमळु घास खाई ले छ अने ऊघ आवता ऊघी जाय छे भारे तप कर्या वगर आवु सतोषवाळु जीवन कोण गाळी शके?

८६ शु गिरिकदरोमाथी के पर्वतनी खीणोमाथी कदमूळनो सदतर नाश थयो छे? अथवा शु पर्वतो उपर वहेता झरणाओ बधा सुकाई गया? अथवा शु रसभर्या फळोथी लचेली तेम ज वल्कला पूरा पाडी शके तेवी छालवाळी डाळीओ झाड परथी नाश पामी गई छे? क (अन्नवस्त्रनी आटली सहेली जोगवाई होवा छतां,) महा-

महेनते प्राप्त थयला अल्पशा धनने लीधे ऊठेला अहंकारूपी पवनथी नाचती भृकुटीवाळा अने साव विनयशून्य थयेला एवा दुर्जनोना मोढा तरफ लोको जाया करे छे !

८७. गगाने किनारे हिमालय पर्वतनी कोई शिला उपर पद्मासन वाळीने हु बेठो होउ, अने ब्रह्मनु ध्यान धरवानो अभ्यास करता यागनिद्रानी समाधिमा लीन थयो होउ, अने ते स्थितिमा केवळ वाळ मृगला ज नहि, पण घरडा हरणो पण शका के बीक तद्दन त्यजी दईने मारी पासे आवे अने पाताना शींगडा मारा शरीर साथे घसीने खजवाळ्वानो आनद पामे, एवा भाग्यना दिवसो मने ल्यारे खरा ?

८८. पर्वतनी गुफाओमा रहीने परम ज्योतिनु जेओ ध्यान धरे छे, अने ते वखत निःशक्पणे खोळामा आवीने आराम करता पक्षीओ जेमना आनदाश्रुनु पान करे छे, एवा पुण्यवान पुरुषोने धन्य छ ! ज्यारे अमे तो मनमा ने मनमा मोटी मोटी हवेलीओ बाधीने तेमना प्राकारमां आवेली वावने किनारे क्रीडोद्यान कल्पीने एनी अदर विलास करता पोतानी जिंदगी निरर्थक खुटाडीए छीए

८९. [अद्वैतसिद्धिनी साधना करता, कवि पोतानी कल्याण-कामना व्यक्त करे छे —]

भयानक सर्प हो के आह्लादकारी फूलोनो हार हो, कपावनार शत्रु हो के हूफ आपनार स्नेही हो, महामूल

रत्न हो के माटीनु तुच्छ ढफु हो, कुसुमकोमळ शैय्या हो के अकुणा पथ्थरो पथरायेला हो, नजर सामे घासना तणखला हो के रमणीओनो समूह हो, मारी तो ए बधा प्रत्ये समदृष्टि ज रहो, अने एवी स्थितिमा कोई तपोवनमां कल्याणकारी 'शिव शिव शिव'नो जाप जपता मारा दिवसो पसार थाओ.

[आ आखा विश्व साथे आत्मैक्यनो साक्षात्कार थवाथी जे समाधान मळे छे, ते प्राप्त थयेलो माणस पोतानी स्थिति वर्णवे छे. ए रीते पण अ श्लोकनो अर्थ करी शकाय]

सर्प हो के पुष्पनो हार हो कपावनारो प्रबळ शत्रु हो के हूंफ आपनारो मित्र हो, महामूलुं रत्न हो के माटीनु तुच्छ ढेफु हो, फूलनी शैय्या हो के पथराओ पाथरेला हो, सामे तृण हो के स्त्रीओनो समुदाय हो, ए बधा विषे मारी समदृष्टि ज रहे छे अने पछी कोई तपोवनमां निरिच्छ अने शान्त थईने 'शिव, शिव, शिव'नो कल्याणकारी शान्ति-जाप करता मारा दिवसो पसार थाय छे

९०. विषयो गमे तटला लाबा वखत सुधी आपणी साथे रहे तोये अत ते छोडीने जवाना ज छतां माणस पोतानी मेळे एमने छोडी देतो नथी तो हमा एने खास कई लाभ थाय छे खरो ? खरु जोतां विषयो ज्यारे पोते ज पोतानी मरजी के नियम प्रमाणे माणसने छोडी जाय

छे त्यारे एने पार वगरनी हैया-बळतरा थाय छे. ज्यारे माणस पोते एमने त्यजी दे तो ए विषयो तेने अनंत शांतिसुख आपता जाय छे

९१. माणसने मळतुं फळ तेनां करेलां कर्मो पर आधार राखे छे अने तेनी बुद्धि पण पूर्वे करेला कर्मने ज अनुसरे छे बुद्धिनुं घडतर तो करेला कर्मोनी टेवो उपर ज अवलंबे छे आम मनुष्यजीवनमां कर्म ज सर्वोपरी होवाथी डाह्या माणसे सारी पेठे आगळ पाछळनो विचार करीने ज कामो करवां जोईए

[अने बुद्धिनी केळवणीमां पण कर्मकौशल उपर ज वधारे भार मूकवो जोईए.]

अथवा

[कर्म एटले पूर्वजन्मे करेलुं कर्म एवो अर्थ करी 'कर्म' शब्द लगभग दैवना अर्थमां वापरीने केटलाक लोको आ श्लोकनो जुदो ज अर्थ करे छे अने बीजी लीटीमांनो 'तथापि' शब्द एमने अनुकूळ आवे छे तेमनी दृष्टिए आ श्लोकनो अर्थ नीचे प्रमाणे थाय —]

माणसने मळतुं फळ तेनां पूर्वजन्मनां कर्मो पर आधार राखे छे. आजनी एनी बुद्धि पण पूर्वभवे करेला कर्मने ज अनुसरे छे आम माणस बधी रीते परतंत्र छे छतां डाह्या माणसे, ईश्वरे बुद्धि आपी छे एटला खातर

उत्तम रीते विचार करीने ज कर्मो करता रहेवु जोईए, के जेथी आ नहि तो आगलो भव तो सुधरे

[पहेलो ज अर्थ सारो जणाय छे आ भवनो विचार करीने ज ज्यां चाली शकाय एम होय त्यां आगळना अने पाछळना भवोनी वात लई आववी अनावश्यक छे स्वकर्म सूत्र-ग्रथितो हि लोक ।]

९२. आपणा भाग्यना विधाता तरीके आपणे देवोने नमस्कार करीए छीए, पण ते देवो पण मूआ विधिने वश रहीने ज नथी चालता शु ? तेथी वदन तो विधिने (दैवने) ज करवु घटे पण ए दैव पण स्वतत्र क्यां छे ? ए कर्म प्रमाणे निश्चित, अमुक चोक्कस फळ ज आपनारु होय छे अने फळ तो कर्मने आधीन छे तो पछी ए अमर देवाने लईने शु करीशु ? अने दैवने लईने पण शु करीशु ? जेनी आगळ विधि-विधातानु पण कशु चालतु नथी, ते कर्मने ज अमारु वदन हजो

९३. जे देवाधिदेव कर्मे प्रत्यक्ष ब्रह्मदेवने कुभारनी जेम ब्रह्माडरूपी घडानी अदर अनेकविध सृष्टि उत्पन्न करवाना काम उपर नीम्यो, सर्वव्यापी विष्णुने पण दशावतार लेवाना महासङ्कटमा धकेल्यो, अने शकर रुद्रने हाथमा खोपरी आपी दई भिक्षा माटे रखडतो कर्यो, अने जना नियमनने परिणामे सूर्य आकाशमा अखड भम्या करे छे, ते सर्व-समर्थ कर्मने ज अमारा नमस्कार हजो

९४. नीच लाकोनी आराधना करता करता, एमना अपशब्दो जेमतेम करीने सहन कर्या आसमा आवता आसुने अंदर ने अंदर रोकीने शून्य मनथी तमने रीझववा हसी बताव्यु, मननी बधी लागणीओ दबावी दीधी, अने जेमनी वुद्धि बहेर मारी गै अवळी थई छे एवा लोको आगळ पण हाथ जोडया, हवे हे नफफट, विफळ आशे! हजीये तु मने बीजे क्या क्या नचाववा मागे छे?

९५ [स्वाभिमानी माणस पण गृहस्थाश्रमनी विटवणाओथी जेर थईने भिक्षाना वचनो मोंटामाथी काढवा तैयार थाय छे ए वीनाने ध्यानमा राखीन कवि कहे छे—]

भूखथी अकळाता अने वीलु मोढु करीने रोती ककळता छोकराओ जना फाटया तूटया वस्त्रोने खेंचता होय छे अने तमने शान्त करवाना कशो ज उपाय हाथमा न हावाथी जे लाचार थई बेठी छे, एवी विचारी दयामणी गृहिणी नजर आगळ न हात तो क्या स्वाभिमाना माणस, पातानी याचना विफळ जशे ए भयने कारण गद्गद् थयली वाणीए तूटता अने खरी पडता अक्षरे, पोताना वळया पेटने माटे कोईनी आगळ 'मने कंईक आपा' एम कहेवा तैयार थात?

९६. अमे घणु सह्यु, पण त क्षमाने लीधे नहि, गृहस्थाश्रमना सुखोनो त्याग कर्या, पण त सतोष समाधानने

कारणे नहि, असह्य एवा टाढ, तडको, पवन आदि सहन कर्या, पण ते केवळ क्लेश मानीने, तपाचरण तरीके नहि, प्राणोनु नियमन करीने, एकाग्र चित्ते दिनरात ध्यान धर्यु, पण ते धननु, भगवान शंकरना चरणनु नहि, आम जे जे कर्मो मुनिओ करे छे ते बधा अमे कर्या पण त ते फळथी मात्र अमे वचित ज रह्या

९७. ब्रह्मज्ञानने लीधे जेमना मनमा विवेक जाग्यो छे, अने तेथी जेमनी बुद्धि निमळ थई छे तओ केटलु बधु विकट काम करे छे, के प्रत्यक्ष भोगवाता वैभवने, तद्दन नि स्पृह थई, सदतर छोडी दे छे ज्यारे अमे जे सपत्ति भूतकाळमा अमने मळी नथी, वर्तमानकाळमा जे अमारी पासे नथी, अने भविष्यकाळमा मळशे ज एवी जेने विषे चोक्स खातरी नथी अने जेने फक्त वासनामा ज अमे पकडी राखी छे, एवी काल्पनिक सपत्तिनो मानसिक त्याग करवा पण समर्थ नथी

९८. आ विशाळ विश्वमा आश्चर्य उपजावे एवी जे अमर्याद वस्तुओ छे, तमाए वराह अने राहु ए बे ज चमत्कारना विषय तरीके राहुथी चढी जाय छे. कारण के एके (वराहे) छ्वेर्गी पृथ्वीने पोताना दातनी अणी उपर उठावी लीधी, ज्यारे बीजो (राहु), केवळ पोतानु माथु ज बाकी रहेलु होवा छता, सूर्य जेवा तेजस्वी

शत्रुने गळी जाय छे, अने पछो उदारतायी एने छोडी पण दे छे

९९ हे चित्त, तें न तो पाताळमायी बळी राजाने छोडाव्यो, न दुनियामाथी मृत्युनो क्षय कर्यो चद्र उपर देखाई आवतो मेलो डाघो तें भूस्यो नथी अने लोकोना व्याधिओनो पण ममूळ उच्छेद तें कर्यो नथी आ पृथ्वीने जरा ऊचकीने, बिचारा शेषना माथा उपरनो भार पण क्षणवार हळवो कर्यो नथी त्यारे सत्पुरुषोमा पोतानी गणना होवानु वृथा अभिमान धारण करता तने शरम नथी आवती ?

[आ श्लोकनी छेल्ली लीटी जरा अटपटी छे छदमा 'न' शब्द न बेठो एटले छोडी दीधो लागे छे 'अभिमान' अने 'गणना'ना स्थाननो पण गोटाळो थयो लागे छे]

१००. ते काचबो ज खरेखर जन्म्यो कहेवाय के जणे आ विशाळ पृथ्वीनो भार उचकवा पातानी पीठ अर्पण करी त ज प्रमाणे ध्रुवनो जन्म पण धन्य खरो के जने आधारे ताराओनु आखु ज्योतिर्मडळ नियम प्रमाणे फर्या करे छे

जन्म ले छे तेमने हाथे कोईनु ऐहिक के पारलौकिक कल्याण थतु नथी

१०१. [पोतानी मर्यादा न छोडनार सागर अने पोताने स्थाने स्थिर रहेनार कुलपर्वतो पने प्रलयकाळ आवे त्यारे चळे ज छे पण महात्माओ आवी क्षुद्रता बतावता नथी तेओ तो जेम संकट वधारे तेम वधारे ज अडग थवाना एम समजावता कवि कहे छे —]

हे जडमते, विपद्‌काळे महात्माओनो धैर्यनाश थयलो जोवा तु इच्छतो होय तो ए खोटो प्रयास तु छोडी दे आ महात्माओ काई तमारा क्षुद्र कुलपर्वत पण नथी अने पामर सागर पण नथी के जेओ प्रलयकाळ आवे के तरत पोतानो स्वधर्मकर्मनो नियम पण उल्टावी दे छे

१०२. *भिन्न भिन्न शास्त्रोना अर्थनी विचारणा* करवानी जेनी चचळता शमी गई छे, अनेकानेक रसयुक्त काव्योनो आस्वाद लेवानु जेनु कुतूहल ओसरी गयु छे, न्याय अने तर्कना अध्ययनने लीधे उठती जेनी अनेक शकाओ अने विकल्पोना विस्तारना नि शेषपणे निरास थयो छे, एवु मारु मन हवे *भगवान शकरने* शरण जवाने ज झखे छे

१०३. कोमळ *करुणाथी मराई गयला हृदयवाळा* अमे, सर्वस्वनु दान आपीने, कोई पवित्र तपोवनमा, शरदृतुना

पूर्ण चद्रनी चादनीथी मनोहर थयेली रात्रीओ, आ ससारमा विधिनी घटनाओ केवा विषम परिणामो उपजावे छे तेनु स्मरण करता, अने भगवान शकरना चरणमा ज चित्तनु शरण शोधता, पसार करीशु

१०४. वेद, स्मृतिओ, पुराणपठन, अति विस्तारवाळा शास्त्रो, तेम ज–जेने जोरे स्वर्ग नामथी ओळखाता एक गामडानी एकाद झूपडीमा निवास करवानु मळे एटलुं ज जेनु फळ छे तेवा–यज्ञयागादि कर्मकाडना विस्तारथी शु वळवानु हतु ? भवबधनोनी दु खदायी जाळने बाळी नाखनार अग्नि जेवु, अने स्वात्मानदनी पदवीमा प्रवेश करावनार एक साधनने छोडी दईए तो बाकी बधा वाणियावेडा छे.

१०५. [वर्णाश्रमना चिन्हो धारण नहीं करेला होवाथी, अने अलिप्त भावे पोतानी मस्तीमा चालतो देखावाथी, जेने विषे लोकोना मनमा कुतूहल जागे छे एवा योगीओनी अनासक्त शान्ति विषे कवि ल्खे छे—]

आ चाण्डाल छे, के ब्राह्मण छे ? शूद्र छे के तपस्वी छे ? सारासार तत्त्वोनु पृथक्करण करवामा कुशल एवो कोई योगीश्वर तो आ नहीं होय ? इत्यादि शकाओ मनमां उठवाथी लोको जेने विषे हृदयमी जातजातनी वातो करे छे, एवा योगीओ कशा हर्ष शोक वगर पोताने रस्ते चाल्या जाय छे

१०६. कामविकारना नेत्ररोगनी असरने लीधे ज्यारे अमारामां अज्ञान अने लपटता हता त्यारे आखु जगत नारीमय छे एम अमारी आंखोने लागतु पण हवे ज्यारे सार अने असार वच्चेनो भेद बतावतु विवेकरूपी अजन अमे आज्यु त्यारे समत्वने पामेली अमारी दृष्टि आ समस्त त्रैलोक्यने ब्रह्ममय लेखे छे

१०७. आ अनेक प्रकारना भोगो स्वभावे ज क्षण जीवी छे अने जिंदगी तो आवा क्षणभगुर भोगोनी ज बनेली होय छे त्यारे, हे लोको, तमे शा प्रयोजनथी एमनी पाछळ अटवाया करो छो ? बस करो आ बधी धावल

अने जो अमारी वात मानवा जेवी लागे तो आशानी सेंकडो जाळना बन्धनो हठावता हठावता प्रसन्ननिर्मळ बनेला मनने स्थिर करो पोताने स्थाने ए स्थान तो कामनाओनो नाश थवाथी ज हाथमा आवी शके छे

१०८. हे माता पृथ्वी, हे तात वायु, हे मित्र तज, हे बान्धव जळ अने हे भाई आकाश, तमने बधाने हाथ जोडीने आ छेल्लो नमस्कार करु छु तमारा सत्सगने कारणे जे काई सत्कर्मनो उदय थयो, तमाथी प्राप्त थता निर्मळ ज्ञानने लीधे तमाम मोहनु जोर दूर थयु छे, अने हवे हु परब्रह्ममा कायमने माटे लीन थाउ छु

(हवे पाछा आववापणु अने तमारी वच्चे रहेवापणु रहेतु नथी)

प्रकीर्ण श्लोको

१०९. पहाडनी कोई शिलाने ज जेमणे पोतानी शय्या बनावी छे, गिरिगुहारूपी घरथी जेमने संतोष छे, झाडोनी छाल ए ज जेमने माटे संपूर्ण वस्त्र छे, मृगलां अने पक्षीओ जेमने माटे पूरता मित्रो छे, झाडनां ताजां रसदार फळोथी ज जेमनु गुजरान चाले छे, झरणानुं मधुर पाणी ज जेओ उचित पीणुं गणे छे अने जेमनो मनोविनोद विद्यारूपी युवती साथे ज चाले छे, एवा लोको मारे मन तो परमेश्वर (बादशाह) छे, केमके एवा लोको लोभमां फसाईने, सेवक बनीने, कोईनी आगळ माथुं नमावता नथी

११०. आ दुनियादारीनी जिंदगीथी हुं तो बहुं कुशळ जोतो नथी. आमा करेलां शुभ कर्मोना फळनो विचार करुं छुं त्यारे पण मने तो भय ज ऊपजे छे. केमके लांबा वखतथी सेवेला विषयोने पुण्यना मोटा प्रवाहनुं सिंचन मळे के तेओ एवा तो मोटा थई जाय छे के विषयोने सेवनारने अंते संकटमा ज नाखे छे.

१११. रोज ने रोज सूरजना आथमवाथी अने ऊगवाथी आवरदा घटती ज जाय छे, अने घणां अनेक जातनां कार्योना भारने लीधे बोजारूप थयेला व्यवसायोमां

वखत तो जाण्यामा पण नथी आवतो तेम ज जगतमा जन्म, जरा, विपत्ति अने मरण रोज ने रोज जोया छता मनमा त्रास ऊपजतो नथी.

खरेखर, प्रमादरूपी मोहमयी मदिरानु पान करीने जगत उन्मत्त बन्यु छे.

११२. [दुनियाना अनेक कविओए मनुष्यजीवनने नाटक साथे सरखाव्यु छे ते ज प्रमाणे भर्तृहरि पण ससारने रगभूमि कल्पी माणस एमा नटनी पेठे केवी केवी भूमिका धारण करे छे ए वर्णवे छे —]

घडी माटे बाळक बन्या पछी बीजी घडी माटे ए विलासक्रीडामा चतुर एवो युवान बने छे घडी माटे धनशून्य गरीब बने छे तो बीजी घडी माटे ए वैभवने शिखरे पहोचे छे आम नटनी पेठे नाटक भजवतो भजवतो घरडो थई, अन्त बधा गात्रो जीण थया छे अने मोढा उपर करचलीओ छवाई छे एवा वेशमा माणस यमपुरी नामना नाटकना पडदा पाछळ अलोप थई जाय छे.

११३. हे प्रिय मित्र कोई कसायेलो कुभार मजबूत हाथे माटीनो लोचो बनावे तेम, दुष्ट विधि आपणा मननो लोचो बनावी तने चिंताना चाक पर चडावे छे अने विपत्तिरूपी दण्डना उपराउपरी आघातोनो परिचय करावी चक्कर चक्कर फरवे छे खबर नथी पडती के आमाथी केवो घाट घडवानी एनी दानत छे

११४. माणसनी प्रतिष्ठा करमाई जाय, सपत्ति घटी जाय, याचको आशाए आवीने खाली हाथे पाछा जवा माड, सगासहालाओनी सत्या ओसरी जाय, आश्रितो त्याग करी जता रहे अने गुणोनी पण धीमे धीमे नाश पामी जाय, एटले डाह्या माणस माट ए ज उचित गणाय के एणे जाह्नवीना पाणीथी पुनित थयला खडकोवाळा पर्वतश्रेष्ठ हिमाळयमा जईने कोई खीणनी बाजुमां, एकात सुदर गुफामा के लताकुजमा वासो करी लेवो

११५. पूरवी मुश्केल एवी आ पेटनी खाई, इष्ट एवा मानआबरूनी गांठने ढीली करवामा कुशळ छे, श्रेष्ठ सद्गुणोना समूहरूपी पद्मोने सकोचावनारी जाणे पूनमनी चादनी छे, अथवा लज्जारूपी वेलानां जाळोजाळाी कापी नाखनारी कुहाडी छे ए खाई माणसने नचावी नचावी कवा फजेत करे छे।

११६. [जवु पात्र तवु परिणाम, ए सिद्धांत चरितार्थ करता कवि कहे छ —]

ज ज्ञान सज्जनोने माट अभिमान अने मद आदि दुर्गुणानु नाशक होय छे, ए ज केटलाक लोकोने (दुर्जनोने) माट मद अने अभिमानने पोषक बने छे

एकांतनु स्थान यतीओ लाकोने माटे मुक्तिनु साधन गणाय छे ज्यारे ए ज जाया कामविह्वल लोकोने माट विकारोने अत्यत उत्तेजित करनारी नीवडे छे

११७ हाथी के भूड जेवा जबरदस्त प्राणीओनु मास आरोगनार बलवान सिंह वरसमा एकाद वार ज सग करे छे ज्यारे कठण मरडिया खाईने जीवनारु क्बूतर रोज ने रोज कामासक्त थाय छे, कहो, आनु कारण शु हशे?

दूबळाने हवस वधारे !

११८. भुकाईने जे हाडपिंजर थयो छे, एक आख जवाथी जे काणो बन्यो छे, पगे जे लगडो छे जेना कान *गळी गया* छे, जेने *पूछडी रही नथी* व्रणोने कारणे जे परुथी खरडायलो छे, जीवडाओना सैंकडों गूचळाथी जनु शरीर खदबदे छे, भूखथी जे लेवाई गया छे अने जना गळामां हाडलीनो काठलो भरायो छे, एवो घरडो कूतरो पण कूतरीनी पाछळ पाछळ फर्या ज करे छ

अरेरे! कामदेव मरेलाने पण मार्या वगर रहतो नथी

११९. रमणीना कटाक्षरूपी बाण जेने घायल करता नथी, क्रोधाग्निनो ताप जेना हैयाने बाळतो नथी, अने जुदा जुदा विषयो जेने पोताना लाभपाशथी खेंची शकना नथी, एवो बुद्धिमान धीर पुरुष आ आखा त्रैलोक्यने जीती जाय छे

(काम, क्रोध, लोभ, ए त्रितयने जे जीत ते त्रिलोकीने जीते)

मुक्तिसुधा

प्र २६. लोकहृदयने जीते एवी कविता रचवानी शक्ति होय तो पछी राजसत्ता भोगववानी जरूर शी ?

¶ जो विनय के लाजलज्जा होय तो आभूषण वगर शु नडवानु हतु ?

¶ चाडी खावानी एक हलकाई होय तो बीजा पापोना शी जरूर ?

¶ जा पासे दुर्जनो होय तो शु सर्पो पण जोइए खरा ?

¶ माणसमा जो क्षमा होय तो आत्मरक्षण माटे बख्तर के बख्तरना शी जरूर ?

¶ मन साफ होय तो तीर्थसेवननी गरज शी ?

¶ अपकीर्ति फेलाया पछी मृत्युनु शु प्रयोजन ? अपकीर्ति ज माणस माटे मोत समान छे

¶ दायादो (ज्ञातीओ) होय तो पछी दावानळनी शी जरूर ?

¶ सत्य गाच्यु होय तो तप साधवानी शी जरूर ? सत्य ज परम तप छे

¶ शरीर धारण करीने चार युग जग्ली लानी आत्तरदा भोगवी तोय तथी शुं वळ्युं ?

पृ. ६७. एवी कई वस्तु छे क जेने बीजी कोई वस्तुनो उपद्रव नथी ?

¶ घर बळी उठये कूवो खोदवा मांडवु ए वळी प्रवृत्ति केवी ?

¶ निपुणता कोने कहेवी ? सदाचारना आदर्शो प्रत्यनो अनुराग ए ज निपुणता छे

¶ हानि कई कहेवाय ? वरात वेडफी नाखवा क तक खोई वेसवु ए ज हानि छे

¶ राजत्व शामा रहेलु छे ? पोताना हुकमनु पालन करावाना सामर्थ्यमा

¶ शूर कोण ? पोतानी इन्द्रियो काबूमां राखी शकता होय तेवो माणस

¶ सेवाशुश्रूषा करो विद्वानोनी

¶ गर्वने त्यजी दा

¶ सन्मान्य लोकोनी आमन्या राखा

¶ दीन दु खियाओ उपर दया करो

¶ पोताना गुणोने उघाडा पाडा मा तना वणगा फूको मा

पृ. ५८. पोताना द्वेषीओना पण मन राखो

¶ पापकर्ममा प्रीति राखीश मा

¶ माइने सखेरी काटा

¶ चित्तशान्ति प्राप्त करो – चित्तने स्थिर राखो

¶ हे चित्त, हवे तो तु प्रसन्न था !

¶ विद्या ए ज परम दैवत छे

¶ परदेशमा के प्रवासमो होईए त्यारे विद्या ज मित्र–स्वजननी गरज सारे छे

¶ मूर्खाओनी शोभा एमना मौनमा ज छ
मौन ए ज मूर्खाओनो खास अलकार छे

¶ कविओ तो वित्त विना पण वैभवशाळी होय छे

¶ मूर्खने माटे कोई ओसड नथी

¶ विद्याविहोणो माणस तो नर्यो पशु ज छे

पृ. ५९. 'कोईनु भलु करवु अने छता एनी क्यॉ वात न करवी ' ए माणसनी खानदानी बतावे छ

¶ उद्यम जेवो कोई हितैषी नथी

¶ शील — चारित्र्य — ए ज माणसनु मोटामा मोटु आभूषण छे

¶ वैभवनी शोभा सौजन्यमा छे

¶ *वाणीनो संयम ए शूरतानुं आभूषण छे.*

¶ धैर्यशील पुरुषो पोते निश्चित करेली वस्तु प्राप्त कर्या विना थंभी जता नथी.

¶ धैर्यशील डाह्या माणसो न्यायना मार्गथी एक डगलुं पण आडे जता नथी.

¶ जेने जेने जुए तेनी तेनी आगळ दीन वचन काढीश नहि.

¶ माणस विवेकथी चळ्यो के तेनुं अनेक रीते पतन थवानुं ज.

¶ दुर्बळ लोको नथी विषयोनो उपभोग लई शकता के नथी तेमनो सदंतर त्याग करी शकता.

¶ गाफेल के दुष्ट मंत्री राखीने राजा नाश पामे छे.

पृ. ६०. वाणीनी सचाई ए ज मोटामां मोटुं आभूषण छे.

¶ *तेजस्वीपणुं माणसनी उमर उपर आधार नथी राखतु.*

¶ बळवान काळ बधानो संहार करे छे, कोईने पण छोडतो नथी.

¶ ते सर्वसंहारक काळने नमस्कार हजो

¶ ससलानुं शींगडुं कोई कोईने आपी शकतु नथी. केमके तेनी मुद्दल हस्ती ज होती नथी.

पृ. ५८. पोताना द्वेषीओनां पण मन राखो.

¶ पापकर्ममा प्रीति राखीश मा

¶ मोहने खंखेरी काडो.

¶ चित्तशान्ति प्राप्त करो – चित्तने स्थिर राखो.

¶ हे चित्त, हवे तो तु प्रसन्न था !

¶ विद्या ए ज परम दैवत छे.

¶ परदेशमां के प्रवासमां होईए त्यारे विद्या ज मित्र – स्वजननी गरज सारे छे.

¶ मूर्खाओनी शोभा एमना मौनमां ज छे.

मौन ए ज मूर्खाओनो खास अलंकार छे.

¶ कविओ तो वित्त विना पण वैभवशाळी होय छे.

¶ मूर्खने माटे कोई ओसड नथी.

¶ विद्याविहोणो माणस तो नर्यो पशु ज छे.

पृ. ५९. 'कोईनु भलु करवुं अने छतां एनी क्शी वात न करवी ' ए माणसनी खानदानी बतावे छे.

¶ उद्यम जेवो कोई हितैषी नथी.

¶ शील —चारित्र्य— ए ज माणसनुं मोटामां मोटुं आभूषण छे.

¶ वैभवनी शोभा सौजन्यमां छे.

¶ वाणीनो सयम ए शूरतानु आभूषण छे.

¶ धैर्यशील पुरुषो पोते निश्चित करेली वस्तु प्राप्त कर्या विना थमी जता नथी.

¶ धैर्यशील डाह्या माणसो न्यायना मार्गथी एक डगलु पण आडे जता नथी

¶ जेने जेने जुए तेनी तेनी आगळ दीन वचन काढीश नहि.

¶ माणस विवेकथी चळयो के तेनु अनेक रीते पतन थवानुं ज

¶ दुर्बळ लोको नथी विषयोनो उपभोग लई शकता के नथी तेमनो सदतर त्याग करी शकता

¶ गाफल के दुष्ट मत्री राखीने राजा नाश पामे छे

पृ. ६०. वाणीनी सचाई ए ज मोटामां मोटु आभूषण छे

¶ तेजस्वीपणु माणसनी उमर उपर आधार नथी राखतु

¶ बळवान काळ बधानो सहार करे छे, कोईने पण छोडतो नथी.

¶ त सर्वसहारक काळने नमस्कार हजो

¶ ससलानु शींगडु कोई कोईने आपी शकतु नथी केमके तेनी मुद्दल हस्ती ज होती नथी

¶ सज्जनो समृद्धि आवता पण उद्धत बनता नथी

¶ सकटमा के सुखमा ज सरखी रीते आपणी साथे वर्ते छे ते ज मित्र कहेवाय

¶ हृदयना भाव निर्मळ राखवो

¶ सकळ समय साधु ऋजु राखउ

¶ दुर्जनोनी उद्धताई सहन करवानु मने मन ज थतु नथी

¶ सज्जनोना आचरणनी भव्यता चकित करे एवी होय छे

प्र. ६१. हे मानवीओ, कहो तो खरा, आ संसारमा तमने जरा सरखु पण सुख जडयु छे ?

¶ भोग साथे रोगनो भय रहेलो ज छे.

¶ गुणीजनोने अदेखा दुष्टोथी डरवापणु रहे छे

¶ संपत्तिने राजानो भय होय छे.

¶ शास्त्रनी वातमा वादनो (पराजयनो) भय होय छे.

¶ जन्म तो मरणे सुधी ज राख्या छे

¶ समृद्धि के संपत्तिने साथे नश्वरतानी आपत्ति होय ज छे

¶ केवु विचित्र, के मोहने लीधे अमने शरम पण नथी आवती

¶ आ भयभरी दुनियामां केवळ वैराग्यने ज कशानो भय नथी.

¶ आपणी तृष्णा नथी घसाई गई, पण आपणे ज घसाई गया छीए.

¶ जेनी तृष्णा विशाळ छे ते ज दरिद्री गणावो जोईए.

पृ. ६२. अमे पण पूरेपूरा नि.स्पृह छीए.

¶ धरतीनी पथारी गाळ्ढी न होय

¶ संसार नश्वर जाणीने सन्तोष वननो आश्रय लीधो.

¶ खरेखर पृथिवी ज सुंदर पथारी छे.

¶ आपणा बाहु पूरतुं उशीकुं छे.

¶ एकलो योगी ज स्वस्थ चित्ते रहे छे.

¶ जिंदगी तो मोजाना जेवी चंचळ छे

¶ बधा पदार्थो चंचळ के नश्वर छे, केवळ एक धर्म ज निश्चळ छे

¶ मनने फरी फरी समजाववुं के आ विश्व तो केवळ घासनो ढगलो ज छे.

¶ जल-तरंगना जेवी पोतानी अस्थिर अवस्थानो त्याग कर

¶ परब्रह्ममा लीन थाउ छुं

¶ मारी वचनचातुरी मारी अंदर ज सुकाई गई छे.

पृ. ६५. टेकीलो माणस पोतानु धारेलु काम पार पाडतां सुख आवे के दुःख आवे तेनी परवा करतो नथी

❡ सज्जनो पोतानी मेळे ज पारकाना हित माटे उत्साहपूर्वक प्रयास करे छे.

❡ सेवाधर्म तो भलभला योगीओ पण न साधी शके एवो गहन–विषम होय छे

❡ जेमणे दीन थईने कोईनी आगळ हाथ जोडी माथु नमाव्यु नथी तेओ बादशाहो छे एम हु मानु छु

❡ आ संसार अमृतमय छे के विषमय ते कही शकातु नथी.

❡ जे चीज केवळ रोगनु निवारण छे ते जाणे सुख ज छे एवो अवळो ख्याल माणस बांधे छे।

❡ प्रमादरूपी मदिरा पीने आखुं जगत जाणे उन्मत्त बन्यु छे।

❡ नीच माणसनी दृष्टि जेना पर पडी तेनो कयो माणस सुखी रही शकवानो हतो?

¶ क्षुद्र प्राणी पोते संघरेली के अपनावेली वस्तु केटली तुच्छ छे एनो ख्याल करी ज शकतो नथी.

¶ माणस विवेकभ्रष्ट थयो के तेनुं सेंकडो रीते पतन थयुं ज जाणवुं.

¶ घुवडने दिवसे देखातुं नथी तो तेमां सूर्यनो शो दोष ?

पृ. ६६. मोंघामूलां रत्नोनी किंमत ओछी आकनार नादान रत्नपारखुओ ज निंदाने पात्र बने छे, नहि के रत्नो.

¶ वसंतऋतु बेसतां छतां केरडाना झाडने एके पांदडुं न आवे तो तेमां वसंतनो कंई दोष खरो ?

¶ ज्यां लक्ष्मी होय त्यां आपत्तिओनो जाणे राफडो फाटयो होय तेम ते आव्या ज करवानी.

¶ प्राणीओनां सोगटां बनावीने आ जगतना पट उपर भगवान काळ भगवती काळी जोडे सारीपाटनी रमत रमे छे.

¶ निरंकुश विधिए एवी कई वस्तु सरजी छे के जे चिरकाळ टकी रही छे ?

¶ कयो टेकीलो माणस पोताना बळ्या पेटने काजे 'मने कंईक आपो' एवा शब्दो मोढामांथी काढे ?

¶ गमे तेवा संकटमां पडया होय तोपण माणसो पोतानी योग्यताने अनुरूप एवा ज फळ इच्छे छे

¶ मानीओनो अग्रेसर एवो सिंह, क्षीण थयो होय तोये, अन्य जनावरोनी पेठ कदी सूकुं घास खाशे खरो ?

¶ पोताने आहुति स्वीकारनार होताने पण अग्नि अडतांवेंत बाळनारो ज

¶ गुणवानोनो एवो कयो गुण छे के जे दुर्जनोए अवळी रीते वर्णवी वखोडयो नथी ?

¶ कोई पण वस्तु महत्त्वनी गणाय छे के नजीवी, ते माणसनी अवस्था, गरज के प्रसंग उपर आधार राखे छे

पृ. ८७. सहृदयपणुं वाणी मारफत केळवेलुं होय तो ते ज एकली तेने सारी रीते शोभावे छे

¶ जेम कमळना तंतुओ हाथीओने रोकी शकता नथी, तेम तणखला जेवी तुच्छ धनलक्ष्मी पंडितोने बंधनकारक थई शकती नथी

¶ महात्माओना चारित्र्यनी महत्ताने मर्यादा ज नथी होती

¶ कमळनो वर आवतां पण सिंह नामनुं अन्वर्थन नाम पामतुं नथी

¶ अग्निने ऊधो वाळ्यो होय तोपण एनी ज्वाळा कदी नीचे जती नथी, ते तो उपर ज जवानी

पृ. ६८. परार्थने ज जे स्वार्थ माने छे एवो पुरुष ज सज्जनोनो अग्रेसर होई शके छे

¶ आ कर्मभूमिमा आव्या छतां जे माणस तपाचरण करतो नथी ते खरेखर अभागियो छे

¶ जो अमने जोईने तु मोढु फरवतो होय तो जाणज के अमे पण पूरेपूरा नि स्पृह छीए—अमने तारी कशी पडी नथी

¶ हे मित्र, आ दुनियामा डाह्या माणस माट तप सिवाय बीजी श्रेयस्कर (कल्याणकारक) वस्तु नथी

¶ माणसनी आ दुनियामा बधी ज वस्तुओने माथे भय झझूमे छे केवळ वैराग्य ज एक एवी वस्तु छे के जेने कशानो डर नथी

¶ वैराग्य के उपशान्तिमा जेमनु चित्त चोंटेलु छे तेवाओने माटे घर के वन सरखु ज छे

¶ ज्ञाननो दीप एवो शकर योगीओना अत करणरूप घरमां प्रकाशमान विराजे छे

¶ जे माणस साहित्य-संगीत-के कळा-विहोणो छे, तेने शींगडा-पूछडा विनानो साक्षात पशु ज जाणवो

¶ जेना आस्वादथी त्रैलोक्यनुं राज्य वगेरे विषयो पण रसहीन बने छे तेवो एक ज एवो महान अवर्णनीय भोग छे के जे शाश्वत टकनारो छे.

¶ पाणीनां मोजां, परपोटा, वीजळीना झबकारा, प्रमदाओ, अग्निनी ज्वाळाओ, सर्पो तेम ज नदीना प्रवाहो – ए बधा विषे विश्वास केवो ?

¶ जेओ पोतानी इंद्रियो काबूमां राखे छे एवाओनी पीडानुं निवारण करवा माटे विद्वत्ता अगाउ वपराती, ते हवे वखत जतां विषयी जनोने भोगविलासना जुदां जुदां साधनो मेळवी आपवामां वपराय छे !

¶ पोताना प्राण बचाववानी ज जेमने पडी छे एवा केटलाक (पामर) माणसो आवीने पोतानी आगळ शिर झुकावे एटलेथी माणसोने आटली घमडनी गरमी शाथी आवती हशे ?

¶ जेनी तृष्णा विशाळ छे ते भले दरिद्री कहेवाओ, मनमां तृप्ति ऊपज्या पछी धनवान कोण अने दरिद्री कोण ?

¶ जेना आस्वादथी त्रैलोक्यनु राज्य वगेरे विषयो पण रसहीन बने छे तेवो एक ज एवो महान अवर्णनीय भोग छे के जे शाश्वत टकनारो छे.

¶ पाणीनां मोजां, परपोटा, वीजळीना झबकारा, प्रमदाओ, अग्निनी ज्वाळाओ, सर्पो तेम ज नदीना प्रवाहो – ए बधा विषे विश्वास केवो ?

¶ जेओ पोतानी इंद्रियो काबूमां राखे छे एवाओनी पीडानुं निवारण करवा माटे विद्वत्ता अगाउ वपराती; ते हवे वखत जतां विषयी जनोने भोगविलासनां जुदां जुदां साधनो मेळवी आपवामां वपराय छे !

¶ पोताना प्राण बचाववानी ज जेमने पडी छे एवा केटलाक (पामर) माणसो आवीने पोतानी आगळ शिर झुकावे एटलेथी माणसोने आटली घमंडनी गरमी शाथी आवती हशे ?

¶ जेनी तृष्णा विशाळ छे ते भले दरिद्री कहेवाओ, मनमां तृप्ति ऊपज्या पछी धनवान कोण अने दरिद्री कोण ?

सद्‌बोधशतकमां आवेलां वृत्तो

संस्कृत छंद शास्त्रमा पद्यना के छन्दना बे प्रकार कह्या छे १ वृत्त, २ जाति. वृत्तनु बधारण श्लोकना चरणमा आवता अक्षरोनी निश्चित सख्या तथा दरेक अक्षरना गुरुलघुत्वने धोरणे रचायेलु होय छे, ज्यारे जातिनु बधारण दरेक चरणमा कुल केटली मात्रा होय ते उपर आधार राखे छे

वृत्तमा आवता अक्षरोना गुरुलघुत्वनो क्रम दर्शाववानी समवड माटे वृत्तना चरणना गण कल्पेला छे दरेक गणमा त्रण त्रण अक्षर होय छे एवा गण आठ छे गणनु बधारण गुरुलघु अक्षर उपर आधार राखे छे अक्षर 'एक स्वरनो' के 'स्वर साथे एक के वधारे व्यजननो' बनेलो होय छे. लघु के गुरु अक्षर तेमाना ह्रस्व के दीर्घ स्वर उपर आधार राखे छे

अ, इ, उ, ऋ, ऌ एटला स्वरो ह्रस्व छे बाकीना बधा स्वरो दीर्घ गणाय छे. कोई पण अक्षरनु गुरुलघुत्व तेमा आवता स्वर उपर आधार राखे छे ह्रस्व स्वरवाळो अक्षर लघु गणाय छे तम ज दीर्घ स्वरवाळो अक्षर गुरु कहेवाय छे

पण जो कोई लघु अक्षर पछी अनुस्वार, विसर्ग, के जोडाक्षर आवे तो ते अक्षर सामान्यपणे गुरु बने

छे. श्लोकना चरणने अन्ते आवतो लघु अक्षर वृत्तनी आवश्यकता होय तो गुरु पण बनी शके छे.

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत् ।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा ॥

लघुगुरुनां चिह्नो द्वारा गणो नीचे मुजब बतावी शकाय लघु माटे ◡ चिह्न तथा गुरु माटे – चिह्न वपराय छे एवी ज रीते लघु अक्षर बताववा माटे ल (◡) अने गुरु अक्षर बताववा माटे ग (–) चिह्न वपराय छे

य	◡	–	–	भ	–	◡	◡
र	–	◡	–	ज	◡	–	◡
त	–	–	◡	स	◡	◡	–
म	–	–	–	ग	–		
न	◡	◡	◡	ल	◡		

दरेक गणमा लघु गुरु अक्षर क्या क्रमे आवे छे ते सहेलाईथी याद राखी शकाय तेटला माटे नीचेनी कारिका उपयोगी थशे

आदिमध्यावसानेषु **य-र-ता** यान्ति लाघवम् ।
भ-ज-सा गौरव यान्ति **म-नौ** तु गुरुलाघवम् ॥

मात्राने हिसाबे ह्रस्व स्वरनी १ मात्रा, दीर्घनी २ मात्रा तथा प्लुतनी ३ के तेथी वधारे मात्रा गणाय छे

चरणमा ज्या सास लेवा थोभवा जेवु होय छे ते स्थानने **यति** कहे छे चरणमा केटला अक्षर पछी यति

आवे छे ते सख्या पौराणिक नामोथी बतावयानो रिवाज छे जेम के

गुण	=	३	ग्रह	=	९
अम्बुधि, वेद	=	४	रुद्र	=	११
रस	=	६	सूर्य	=	१२
नग, लोक, मुनि, हय	=	७	सूर्याश्व	=	१२,७
वसु, भोगी	=	८			

सद्बोधशतकमा आवेलां वृत्तोनी रचनानी माहिती नीचे आपवामा आवी छे

दरेक वृत्तमा अक्षरोना गण क्या क्रममा आवे छे ते बतावी, पछी यति क्या आवे छे ते कौंसमा आकडा द्वारा बताव्यु छे

अनुष्टुप्–आ वृत्तना दरेक चरणमा आठ अक्षर होय छे एना व्याख्या नाचे मुजब छे

श्लोके षष्ठ गुरु ज्ञेय, सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतु पादयोर्ह्रस्व सप्तम, दीर्घमन्ययो ॥

श्लोकना दरेक चरणमा छठ्ठो अक्षर गुरु तथा पाचमो अक्षर लघु होय छे, बीजा अने चोथा चरणनो सातमो अक्षर लघु तथा बाकीना एटले के पहेला अने त्रीजा चरणनो सातमो अक्षर गुरु होय छे बाकीना अक्षरो माटे कोई खास नियम नथी

અભ્યાસીઓ માટે અનુષ્ટુપની નીચેની વિશેષ વ્યાખ્યા ઉપયોગી થશે:

आद्यन्तवर्णौ त्यक्त्वा गणयेद्वै पदक्षरान् ।
चरणे विषमे वर्ज्यौ नसौ भो प्रथमे गणे ॥
समे तु नसरा वर्ज्या गणे प्रथम एव ते
अनिवार्यः समे पादे द्वितीये जगणो गणे ।
विषमे तु जतौ वर्ज्यौ पादमध्ये न विभ्रमः ॥

ઉપજાતિ — ના ચરણમાં ૧૧–૧૧ અક્ષરો હોય છે. ઇન્દ્રવજ્રા તથા ઉપેન્દ્રવજ્રા વૃત્તોનું મિશ્રણ થઈને આ વૃત્ત બને છે

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौगः ५.६
उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ ।
अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ
पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ॥
त त ज ग ग । ज त ज ग ग
(५.६) (५.६)

શાલિની — ૧૧ અક્ષરી ચરણ છે.

मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः ।
म त त ग ग (४.७)

દ્રુતવિલંબિત — ૧૨ અક્ષરી ચરણ છે.

द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ ।
न भ भ र (४.८ અથવા ४.४.४)

वंशस्थ — १२ अक्षरी चरण छे
जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ ।
ज त ज र (५ ७)

वसन्ततिलका — १४ अक्षरी चरण छे.
उक्ता वसंततिलका तभजाजगौग ।
त भ ज ज ग ग (८ ६)

मालिनी — १५ अक्षरी चरण छे
ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।
न न म य य (८ ७)

पृथ्वी — १७ अक्षरी चरण छे
जसौ जसयला वसु-ग्रह-यतिश्च पृथ्वी गुरु ।
ज स ज स य ल ग (८ ९)

मन्दाक्रान्ता — १७ अक्षरी चरण छे
मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।
म भ न त त ग ग (४ ६ ७)

शिखरिणी — १७ अक्षरी चरण छे
रसैरुद्रैश्छिन्ना यमनसभलाग शिखरिणी ।
य म न स भ ल ग (६.११)

हरिणी — १७ अक्षरी चरण छे
नसमरसलाग षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता ।
न स म र स ल ग (६ ४ ७)

शार्दूलविक्रीडित — १९ अक्षरी चरण छ

सूर्याश्वैर्यदि म सजौ सततगा शार्दूलविक्रीडितम् ।

म स ज स त त ग (१२ ७)

स्रग्धरा — २१ अक्षरी चरण छ

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रि-मुनि-यति-युता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।

म र भ न य य य (७ ७ ७)

आर्या — आ मात्रावृत्त छ एनु वधारण चरणनी कुल मात्राओ उपर आधार राखे छे तेनी व्याख्या नीच मुजब छ

यस्या पादे प्रथमे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या ॥

(१२ १८ १२ १५)

बीजी लीटी पहेली लीटी जेवी ज त्रास मात्रानी लागी होय तो त मात्रावृत्तने आर्या न कहेता **गीति** कहे छे

श्लोकोंनी सूचि

काका कालेलकरनां पुस्तको

कालेलकरना लेखो	३—०—०
जीवननो आनंद	१—८—०
जीवनभारती	२—८—०
जीवनसंस्कृति	२—८—०
हिमालयनो प्रवास (टिप्पण साथे)	१—०—०
ब्रह्मदेशनो प्रवास	०—३—०
स्मरणयात्रा	१—८—०
जीवता तहेवारो	०—१२—०
लोकमाता	०—६—०
ओतराती दीवालो	०—६—०
जीवनविकास	बीजी आवृत्ति छपाशे

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अमदावाद